उद्‌बोधन –2021

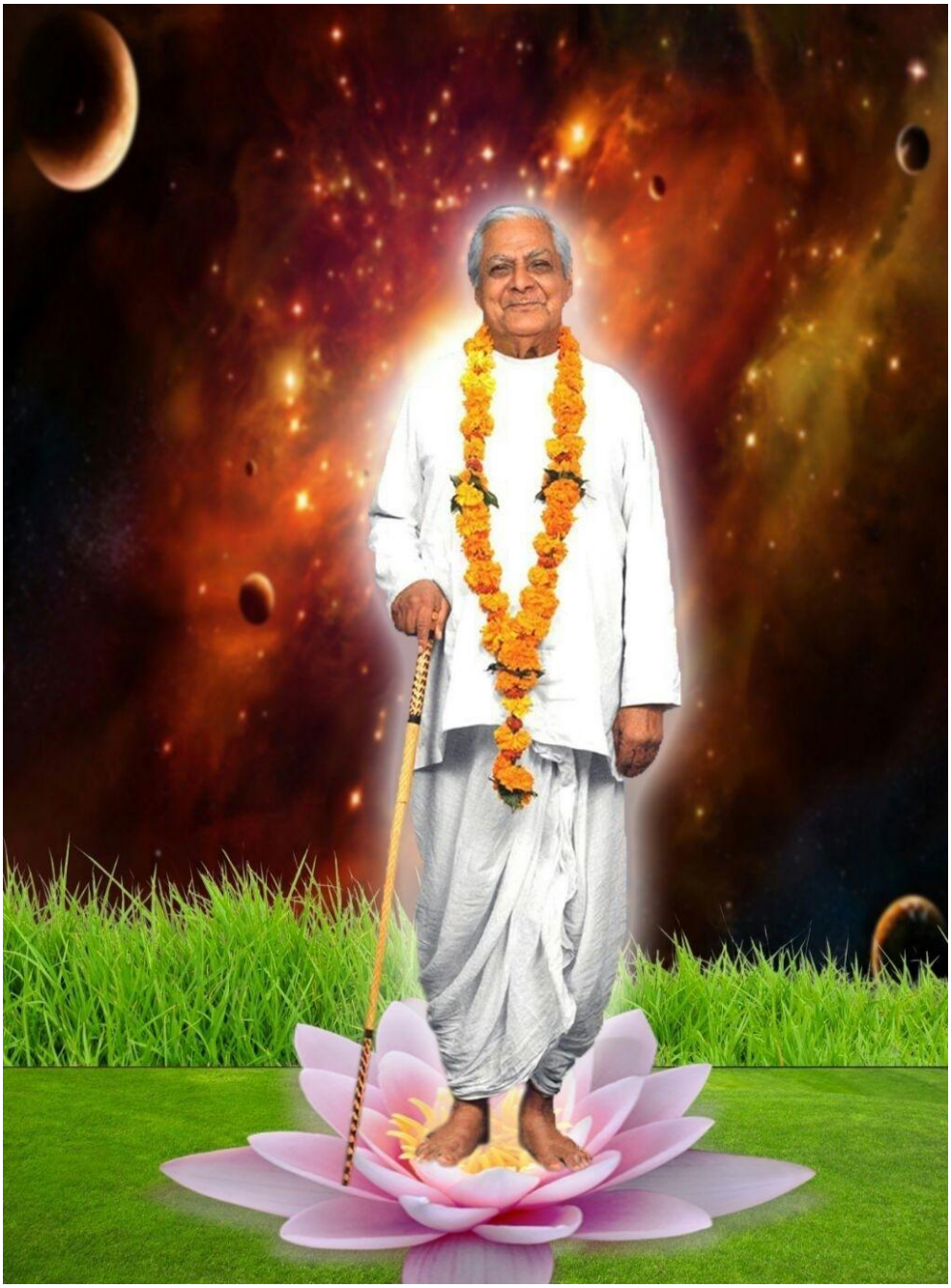

अनुक्रमणिका

क्र0 विषय पृष्ठ संख्या

अपनी बात

1 परम पू0 गुरूजी की आरती 3—4

2 श्री सद्गुरू —स्तुति 05

3 श्री सद्गुरू भजन 6—7

4. परम पूज्य0 गुरूजी के प्रवचन —

(क) रहस्यमय आात्मशक्ति 9—22

(ख) भारत की वैदिक संस्कृति 23—34

(ग) परम पूज्य0 गुरूजी के प्रवचन कुछ अन्श ...प्रकाश गुरू भाई द्वारा प्रदत्त 35—48

05. परम आदरणीय गुरूजी की सेवा मे — आदरणीय जीवन कुमार जैन साहब के गुजरे सुनहरे पल .....डा0 चन्दा द्वारा तैयार 49—84

05.— शिष्यानुभव, संस्मरण, आदि.... 85—135

श्री मती मणी जैन, भोपाल 2.श्री रामजी साहू ,वर्धा 3. ओंकार साहू, वर्धा 4 सौ0 कविता रामजी साहू, वर्धा 5. अर्जुन साहू, वर्धा 6. श्री अजय कुपटकर, नागपुर महाराष्ट्र 7. दिव्येश कुपटकर, नागपुर 8.चैतन्य पाटनकर, नागपुर महाराष्ट्र 9. सौ0 किरन पाटनकर 10. श्री रवि पाटनकर, नागपुर महाराष्ट्र 11. मकरन्द हरिदास, वर्धा 12. सौ0 नन्दा देशपाण्डे नागपुर 12. सौ0 श्रुति विवेक—काण्णव, वर्धा 13. श्री राजू काण्णव, वर्धा 14. योगेश शर्मा, रायपुर छ0 ग0 15. श्री मती श्रृद्धा / सत्यावती खर इन्दौर म0 प्र0 16. अम्बरीश श्रीवास्तव, शहडोल म0 प्र0 17. सौ0 अलका गीध 18. सौ0 साधना, नासिक 19. सौ0 अर्चना भटजीवाले 20. श्री हीरालाल चौहान , सिहोर म0 प्र0 21. मिश्रीलाल पाण्डे छ0 ग0 22. जगदीश गुप्त, ग्वालियर म0 प्र0 23, वेदान्गी, विवेक—काण्णव,वर्धा 24. डा0 चन्दा

06 श्रृद्धान्जली .....ब्रम्हलीन हुये गुरू भाईयों एवं बहनों की प्राप्त जानकारी एवं गुरूपरिवार की तरफ से उनके चरणों मे पुष्पान्जळी 136— 151

07. न्यास का वार्षिक लेखा —जोखा

परम पू0 गुरुजी की आरती

ओम् जय जय जय गुरुजी ,

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।

जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।0।।

अष्टसिद्धि तव दासी, नवनिधि के स्वामी।

जन दुःख हरण–परायण, सब के सुखकामी।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।1।।

जन्मसिद्ध तुम योगी, नित परहित कर्त्र।

साधक जन, पथदर्शक, शरणागत त्राता।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।2।।

शुद्ध, बुद्ध, तुम मुक्त भी, निश्चल अविनाशी।

सत्, चित, सुख, घन, ईश्वर, भक्त हृदयवासी।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।3।।

गुरुजी हम पुत्रों की, तुम वत्सल जननी।

तव गुण वर्णन करते, मौन बने वाणी।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।4।।

एक यही वर मॉंगें, हम तव चरणों में।

अविचल भक्ति तुम्हारी, सदा रहे मन में।। ओम् जय जय जय गुरुजी ।।5।।

जय गुरुदेव दयानिधि, कृपासिन्धु जय हो।

जय जय करुणासागर, वासुदेव जय हो।। ओम् जय जय जय गुरुजी।।

कृपा मजवरी सदा गुरूवरा तुझी राहु दे

तुझ्यावीण दुजे मला जगी न गोडया वाटू दे।

तुझा बिसर ना पडो क्षण ही माझीया या मना

मनात तुजवाचूनी गुरूवरा न सो कामना।।

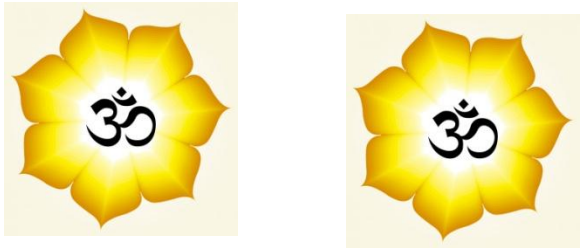

सद्गुरू स्तुति

शक्तिसमुद्रसमुत्थतरंग, दर्शितप्रेमविजूभितरंगम् ।
संशयराक्षसनाशमहास्त्रं, यामि गुरूं शरणं भववैद्यम्।।
अद्वयतत्वसमाहितचितं, प्रोज्ज्वलभक्तिपटावृतवृतम् ।
कर्मकलेवरमद्भुतचेष्टं, यामि गुरूं शरणं भववैद्यम्।।
अमरार्चित नरपूजितं , गुणभूषितं श्री सद्गुरूनाथ।
चिरकांक्षित सुखसाधित, पथदर्शित श्री सद्गुरूनाथ।।
अवतारक–तनुधारण, वसुधाश्रुत श्री सद्गुरूनाथ।
नरनिर्जर–चिरकीर्तित, चरिताद्भुत श्री सद्गुरूनाथ।।
नरकांतक पुरूषोत्तम, परमात्पर श्री सद्गुरूनाथ।
दशधावरतनुचारण, परमेश्वर श्री सद्गुरूनाथ।।
स्मरकांचन –बहुतर्जन, मलमर्दन श्री सद्गुरूनाथ।
जनरंजन कृतकीर्तन, मतिवर्धन श्री सद्गुरूनाथ।।
मृदुभाषक जड़चेतक, नरभक्तिद श्री सद्गुरूनाथ।
भयभंजन जनशर्मद , वरमुक्तिद श्री सद्गुरूनाथ।।
स्थितिसृष्टिविलयकारण, जगदीश्वर श्री सद्गुरूनाथ।
निगमोदित हृदिभावित, विभुसुंदर श्री सद्गुरूनाथ।।
अज निर्गुण गुणसागर, करूणाकर श्री सद्गुरूनाथ।
शरणागत नरपावन, चिरशंकर श्री सद्गुरूनाथ।।
नततारण भवतापित, जनयाचन श्री सद्गुरूनाथ।

श्री सद्गुरू भजन

(भोपाल में आयोजित गुरूपर्व 1997 एवं परम पूज्य गुरूजी के 90 वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में रचित गुरूगौरव गाथा)

जिस गुरू ने मुझको होश दिया, जिस गुरू ने मुझको बोध दिया,

उस गुरू का गौरव गाता हूं, श्री वासुदेव का चेला हूं,

उनकी ही बात सुनाता हूं।।घु.।। 1.

गुरू चले तो संग ब्रह्माण्ड चले जहां रूकें, सभा सी लग जाये ,

सरिता का पानी थम जाये, धरा स्वर्ग लोक सी हो जाए,

महाश्रमण। हे विघ्न हरण। तुम्हें नित-नित.....2, शीश झुकाता हूं।। 1 ।।

देखें है बहुत सत्गुरू हमने, पर तुमसा सतगुरू कोई नहीं।

कई सतगुरूओं पे प्रश्नचिन्ह? तुम पर कभी उंगली उठती नहीं

हो दिगम्बरत्व की लाज तुम्हीं, ये सोचके.....2, मैं इतराता हूं।। 2 ।।

युग के महावीर हो, तुम ''कुंद-कुंद'' के कुन्दन हो।

श्री ''मानतुंग'' के अर्पण हो, ''अकलंक'', ''उमा'' के दर्पण हो।

तुम जिनवाणी के गायक हो, मैं शान से कहता जाता हूं।। 3 ।।

जिस गुरू ने मुझको होश दिया, जिस गुरू ने मुझको बोध दिया,

उस गुरू का गौरव गाता हूं, श्री वासुदेव का चेला हूं, उनकी ही बात सुनाता हूं।।घु.।। 1

देखे हैं बहुत सतगुरू हमने, तुम सबसे अलग क्यूं ध्रुवतारा?

चलते फिरते तीरथ हो तुम, तुम जैन धर्म की परिभाषा।

हे महाधीर। हे महावीर। तेरा नित-नित 2, वन्दन गाता हूं ।। 4 ।।

जो भी आया गुरूचरणों का, हो बैठा दीवानाजी ।।घृ.।।

ऐसा बरसे रंग यहां पर, अन्तरमन तक मन भीगे।

फागुन बिना चुनरिया भीगे, सावन बिना पवन भीगे।

ऐसी बारिस होय यहां पर, बचे ना कोई घराना जी।। 1 ।।

राजेन्द्र कुमार जैन, गोंदिया बुधवार, 23 जुलाई 1997

परम पूज्य0 गुरूजी के प्रवचन –

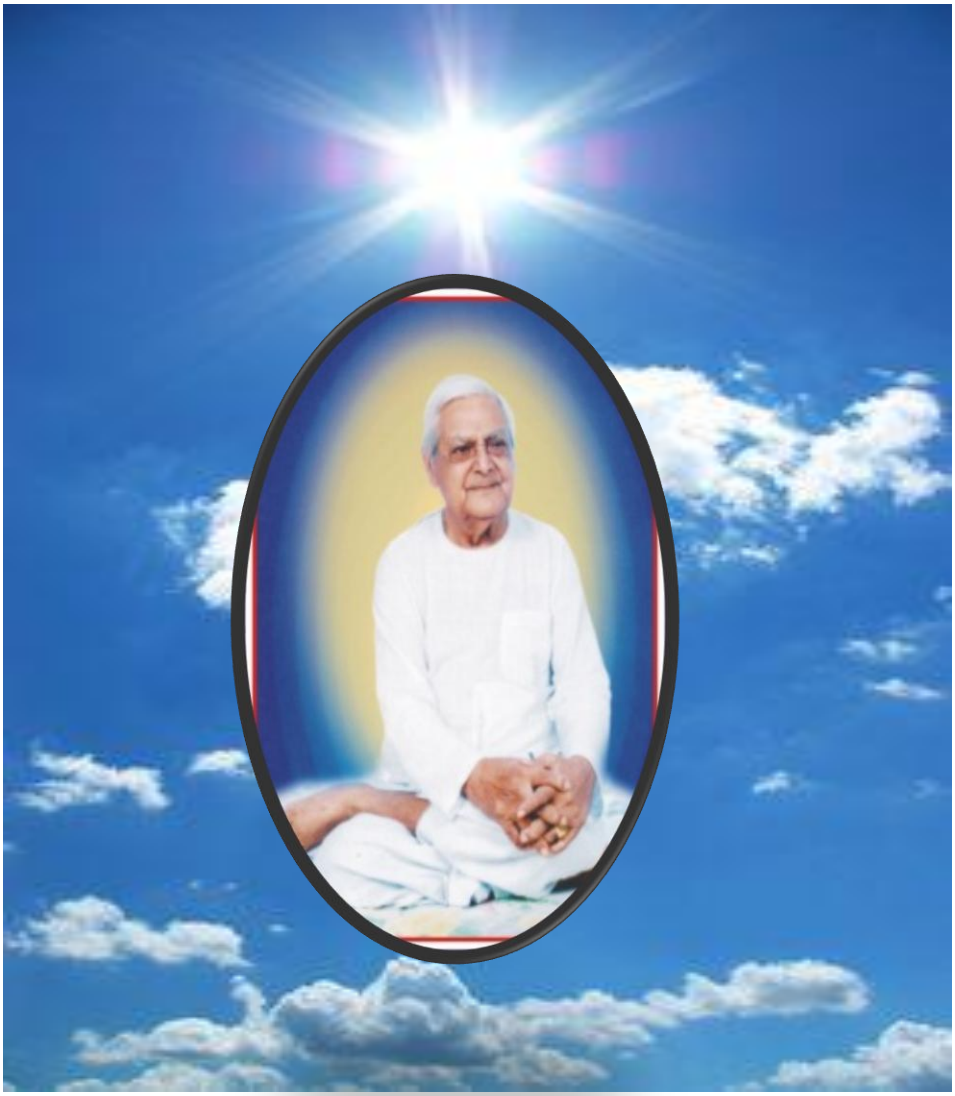

भव–भय–भंजन, पुरूष निरंजन, रतिपति–गंजनकारी।

यतिजन–रंजन, मनोमद–खंडन, जय भवबंधन–हारी।।

जय जन–पालक, सुरदल–नायक, जय जय विश्व–विधाता।

चिरशुभ–साधक, मतिमल–पावक, जय चित्तसंशय–त्राता।।

रहस्यमय आात्मशक्ति

हरिओम्

तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
असतो मा सद्गमय ।
मृत्योर्मा अमृतं गमय ।

आधुनिक काल में हम इतने भौतिकवादी हो गये हैं, इतने भौतिकवादी हो गये है कि हम अपने आपको भूल गये हैं, अपनी संस्कृति को भूल गये हैं तथा उन महानुभावों व मनीषियों को भूल गये हैं जिनके नाम से हम बिकते हैं अथवा बेचे जाते हैं । और क्या कहें ? हम यह भूल गये हैं कि **सत्यम् वद् धर्मम् चर'** ।

कौरव–पांडव शिक्षा ग्रहण करने के लिये **द्रोणाचार्यजी** के निकट रहे। शिक्षा की अवधि समाप्त होने पर वे सब अपने घर आये । बड़े–बड़े महानुभावों की सभा में, उनसे सुख–दुख के संबंध में प्रश्न किया गया । सबने उत्तर दिया । जब युधिष्ठिर के पास आये और उनसे पूछा गया कि आपने क्या पढ़ा ? कुछ समझााइये, कुछ कहिये, तो वो मौन रहे । कुछ भी नहीं बोले । एक बार हो गया, दो बार हो गया, तीन बार हो गया, तब उनके गुरूवर **द्रोणाचार्यजी** उठे और उनके गाल मे एक थप्पड़ जमाया । तुरन्त युधिष्ठिर जी का मुंह खुल गया और वे बोले पडे कि राजकुमार होने के कारण मुझे यह पता ही नहीं था कि सुख माने क्या ? और दुख माने क्या ? इसलिये मैं क्या बोलता ? आज गुरूजी ने मेरे कल्याण के लिये मुझे थप्पड़ मारा है, जिसके कारण मैं सत्य कह सकता हूँ क्योंकि–

परबीती तो कल्पना मात्र है । केवल आपबीती ही तो सत्य है ।

तुकाराम जी ने भी आपबीती के आधार पर ही कहा है–

'तुको कहे वो ही संत । जो घात सहे अनंत ।।

हमारे सुख–दुख का कारण केवल अहंकार है और ये अहंकार दो रूप में हमारे सामने हैं जिसको कि हम माया कहते हैं । रामचरित मानस में तुलसीदासजी ने भी सीधे एंव सरल शब्दों में माया का वर्णन किया है–

मैं अरू मोर, तोर तैं माया ।

जेहि बस कीन्हें, जीव निकाया ।।

अर्थात मैं, मेरा और तेरा –यही माया है , केवल छह शब्दों में बता दिया। ये भेद माया के कारण है। रामचरितमानस तुलसीकृत

मनुष्य अपने अलभ्य, सुन्दर एवं उत्तम मानव जीवन को, जो कि उसे लाखों–करोड़ों वर्षो याने कल्पान्तर के बाद मिलता है, इसी मैं और मोर, तैं अरू तोर में फंसकर जो सार है उसको छोड़कर, जो असार है, उसके पीछे, पूर्ण जीवन व्यय कर देता है और जब अन्त समय आ जाता है, तब वो रोता है । क्यों रोता है ?

वेदों में **विश्लेषज, मोहज, अनुतापज और आगामी दृश्य दर्शनज** ये चार शब्द कहे गये हैं । **विश्लेषज** माने– जिस समय काल मंडराने लग जाता है, उस समय वो जीव अपनी मरण शैय्या पर सोचता है । क्या सोचता है ? वह कुछ नहीं सोचता । सोच ही नहीं पाता । जैसे दो कागज या पुठ्ठों को गोंद में चिपकाकर सुखाने के बाद यदि अलग करना चाहें, तो वो जल्दी अलग नहीं होते और टुकड़े–टुकड़ होकर बिखर जाते है । उसी प्रकार जब यमदूत या काल उसको ले जाने कि लिये आता है, तब वो तड़पता है। थोड़ी देर बाद फिर, भाई, वैद्य को बुलाओ, डॉक्टर को बुलाओ, उसको बुलाओ, उसको बुलाओ, कहता है ।

मोहज माने–मोह उत्पन्न होना। यानि इतनी जो कमाई की, इतना जो जमा किया–वो सब जा रहा है । जो भी मिलने आता है, वह यही कहता है कि भाई इनका अंतिम समय आ गया है । अब ये बच नहीं सकते । वहां से अब वो घबराता है और अब उसका मोह सबों से टूट जाता है।

अनुतापज माने– वो पश्चाताप करता है कि ये मानव जीवन प्राप्त कर हमने कुछ भी नहीं किया । सबके लिये कुछ न कुछ किया, परन्तु अपने लिये कुछ भी नहीं

किया । क्यों पश्चाताप करता है ? क्योंकि इस शरीर से निकलने पर किस योनि में उसे भेजा जायेगा, यह सब उसको दिखने लगता है ।

आगामी दृश्य दर्शनज माने– किस योनि में उसे भेजा जायेगा, वो शूकर है या कुकर है, उसको वह सब दिखता है । जिस जगह उसको भेजा जायेगा वो उसको दिखता है । उस समय, जैसे ही उसको बोध होता है कि अब वह कहां भेजा जा रहा हैं ? तो समझ लीजिये, उसी समय उसका अंत हो जाता है ।

जब सीता जी की खोज में हनुमानजी निकले, तब काल भी रूप बदलकर वहाँ पहुँचा और हनुमान जी से कहा– कि भाई – तुम स्नान करके आ जाओ, तब तुम्हें दीक्षा देंगे । हनुमान जी नहाने के लिये जैसे ही पोखरी में पैर डाले कि एक मगरी उन्हें पकड़ने के लिये दौड़ी, तभी हनुमान जी ने गदा उठाकर उस पर प्रहार किया । मगरी उलट गई और उसमें से एक अप्सरा निकली, जो हनुमान जी को प्रणाम करके, इन्द्रलोक को चली गई । मगरी का शरीर ज्यों कि त्यों पड़ा रहा । मगरी को भी अदृश्य हो जाना चाहिए था परन्तु वो अदृश्य नहीं हुई क्योंकि –

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभं।

ना भुक्तं क्षीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि।। (ब्रह्मवैवर्तपुराण १/४४/७४)

कल्प कल्पान्तर में आपके द्वारा किये गये कर्म का फल आप को भोगना ही होगा । आप छुटकारा नहीं पा सकते । छुटने का केवल एक ही मार्ग है जैसा कि भगवद्गीता में दिया गया है–

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।। 40।।

इस कर्मयोगमें आरम्भका अर्थात् बीजका नाश नहीं है और प्रत्यवाय (फलरुप) दोषभी नहीं है । बल्कि इस धर्मका थोडा-सा आचरण भी महान भयसे रक्षा कर लेता है । ४० ... ॐ ॐ ॐ .. श्रीमद्भगवद गीता - सांख्ययोग-2 .40

ये जो अभिक्रम है– वो अभि माने आंतरिक है– बाह्य नहीं । अंतर जगत के लिये जो कर्म किया जाता है याने दूसरे शब्दों में, आत्मसाक्षात्कार हेतु जो कर्म किया जाता है, वो कर्म ही निष्काम कर्म है अन्यथा जितने भी कर्म आप करते हैं, वे सकाम कर्म हैं और ये सकाम कर्म ही कारण हैं, आपके लाखों करोड़ों बार– जननी जठरे शयनम्

पुनरपि जननं *पुनरपि मरणं पुनरपि* जननी जठरे शयनम् । (भज गोविन्दम्)

हे परम पूज्य परमात्मा! मुझे अपनी शरण में ले लो। मैं इस जन्म और मृत्यु के चक्कर से मुक्ति प्राप्त करना चाहता हूँ। मुझे इस संसार रूपी विशाल समुद्र को पार करने की शक्ति दो ईश्वर। ॐ ॐ ॐ

बार-बार जन्मना, बार-बार मरना बार-बार मां के गर्भ में शयन, इस संसार से पार जाना बहुत ही कठिन है | हे कृष्ण ! हे मुरारी !! मुझे इस आवागमन से मुक्त कर दें | ॐ ॐ ॐ

तात्पर्य ये कहने का कि यदि इससे आपको बचना है, उस नर्क में नहीं जाना हैं। यदि उस नर्क से बचना है तो एक ही मार्ग है और वो है– अपने आपको जानना । जिसने ऐसा अभिक्रम प्रारंभ कर दिया है, उसमें कोई प्रत्यवाय नहीं– ' **नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते | स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्** । उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता । वो ज्यों का त्यों आपके मस्तिष्क के ज्ञान–कोशिकाओं में जमा हो जाता है । इस प्रकार से जन्म–जन्मान्तर, के नाना प्रकार के संस्कार आपके मस्तिष्क में प्रस्थापित हो जाते हैं । अब यदि हमारे मस्तिष्क में करोड़ों, अरबों ज्ञान कोशिकायें हैं तो आप ही बतलाइये कि इस दुनिया में, इस संसार में, इस जग में, हमने कितनी बार जन्म लिये होंगे ? ये सोचने की बात है । क्या हम अपना यह बढ़िया, उत्तम जीवन खाली मैं–मेरा, तैं–तेरा में व्यय

कर दें ? वैसे तो ये animal है । ये भी एक पशु है । इसी वास्ते शंकरजी को पशुपति कहा गया है– **'दशो इन्द्रियाणि मनः तेषाम् ईशान'** – अर्थात दशों इन्द्रियों पर और मन, बुद्धि व चित्त पर जिनका अधिकार है ।

आप जानते हैं कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि जो आये हैं, ये सबके गुरू हैं । ईश्वर, Almighty जो है, वो सबके लिये एक है । नाम में केवल भेद है, लेकिन वो शक्ति एक है । वो दिव्य शक्ति है । वो Divine Energy है । आदमी साधारण होते हुए भी असाधारण है । क्यों सोचते हो कि हम दुखी हैं, हमसे कुछ भी नहीं हो सकता है ? ये रोना क्यों ? कहां से आया ये रोना ? ये रोना है क्या ? ये तो दुर्बलता है तुम्हारी । मनोबली होते हुये भी अपने बल से स्वयं दुखी हैं । अरे ! आप में अंतःकरण है, मन है, बुद्धि और चित्त है और अहंकार भी है । इस अहंकार को क्यों नहीं बदलते, क्यों नहीं उसको आप शुद्ध सात्विक रूप देते ? ब्रह्माजी पहली सृष्टि हैं । उस ईश्वर ने, उस Almighty ने सबसे पहले ब्रह्माजी को उत्पन्न किया ।

यो ब्राम्हणं विदधति पूर्व यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै ।

त हं देवं आत्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुवैं शरणमहं प्रपद्ये ।।

जो सृष्टि के पूर्व 'सृष्टिकर्ता ब्रह्मा' का विधान करता है तथा जो वेदों को उन्हें (ब्रह्मा को) प्रदान करता है, जो 'आत्मा' तथा 'बुद्धि' प्रकाशित हो रहा है, मैं मोक्ष की कामना से उसी 'देव' को जाता हूँ। (**श्वेताश्वतरोपनिषद्षष्ठोऽध्यायः Verse १८**)

ब्रह्मा को उत्पन्न कर के उनको एक ध्वनि दिया याने फूंककर एक ध्वनि उत्पन्न कर दिया । फिर एक पाठ पढ़ाया । उस वेद को पढ़ाया **'यो वै वेदांच प्रहिणोति'**– ताकि उसको भूत, भविष्य , वर्तमान आदि को बोध हो, स्वयं का बोध हो और अपने आप में निमग्न, निमज्जित रहे तथा जग का कल्याण करें । जहॉ'–वो परमात्मा, ऐसा जो आत्मा परम है, अजर अविनाशाी है, कोई स्थान नहीं जहां वो नहीं है, उसका ध्यान करके आपको अपनी बुद्धि को पैनी करना है, Sharp करना है, तेज करना है । वो है **ध्यानं निर्विषयं मनः** – तो ऐसे ईश्वर की मैंने शरण ग्रहण की है। मैं अपने जीवन के 11 वें साल में भारत आया हूॅ और पन्द्रह

साल में पिताजी के जाने के बाद घर छोड़ा, जो कि अभी तक छूटा है । मैंने खूब भारत भ्रमण किया है लेकिन जैसा मैंने बाल्यकाल में पुस्तक में पढ़ा, वैसा मुझे कोई पुरूष नहीं मिला । मैं हिमालय नहीं गया । हिमालय में हठयोगी बहुत हैं । अगर किसी ने पुस्तक में पढ़ा होगा, तो समझा होगा । नहीं समझा होगा तो बात दूसरी है । ये अपनी अपनी रूचि है ।

कहने का तात्पर्य है कि ब्रह्मा को पाठ पढ़ाकर, फिर त्रिशक्ति की स्थापना की अर्थात् ब्रह्मा को सृजन कार्य देकर फिर विष्णु का प्रवेश करवाया । विष्णु शब्द की व्युत्पत्ति– विष् + नुक प्रत्यय से है । 'क' का लोप कर विष्णु बना । ऐसी कोई जगह नहीं, जहॉ विष्णु नहीं । सब जगह उनका प्रवेश है। वो सर्वत्र हैं, सर्वज्ञ हैं । कहां नहीं है ? और शंकर – आप चाहे साधु हों, संत हों, महंत हो, योगी हों, साधारण हों, भोगी हो, उद्योगी हों, – सबको साफ करके ले जाता है । सब काल के वश में है, कालाधीन हैं । तो जब तक तुम्हारी आयु है, जब तक तुम्हें बोध है, तब तक तुम्हारा काम है, – **ध्यानं निर्विषयं मनः** । न नाक दबाने की आवश्यकता है, न कान। केवल आप ध्यान करें । जिस प्रकार से आपको बताया जाता है, उस प्रकार से थोड़ी देर के लिये सही आप ध्यान या स्मरण अवश्य करें ।

सुमिरिअ नाम रूप बिनु देखे ;
आवत ह्रदय स्नेह विशेषे , (**श्री रामजी महाराज**)

हमने न देखा है, न जानते हैं । हम कुछ नहीं जानते लेकिन नाम का जप करिये, जप करते करते शिथिलता आ जाये तो जिसका नाम है, उसका जो रूप है, उसका चिन्तन कीजिये । ये किसका नाम है ? वो कौन है ? वो क्या है ? वो कैसा है ? इस चिंतन में आप डूब जाइये ।

तज्जपस्तदथर्भावनम्॥ **योगसूत्र-1**-२८ ॥

पहले जप करिये, और ध्यान में लाइये, , भावना में आप निमग्न हो जाइये । तो 'आवत ह्रदय' नाम मन का । आपके मन में जो है, जिसका आप नाम ले रहें है, जप कर रहे हैं, वह अपने आपको प्रगट कर देता है । लेकिन कब ? जब **'ध्यानं निर्विषयं मनः** ।

स्वविषयासप्रयोगे चित्तस्वरूपानुकार इवेन्द्रियाणां प्रत्याहार।(योगसूत्र-2.54)

आपका जो स्व विषय है, उसको आप धीरे–धीरे चित्त में लय करिये । चित्त में धीरे–धीरे लय होने से मन और इन्द्रियाँ अपने आप शिथिल हो जाती हैं । फिर मन और इन्द्रियाँ शिथिल होकर अपने– अपने केन्द्र में चली जाती हैं ।

ऐसे समझ में नहीं आता। तो इस प्रकार समझ में आ जाएगा जब आपके कान सुनना बंद कर देते हैं । जब आपको आँखों से दिखाई देना बंद हो जाता है । जब आपकी श्वसन क्रिया धीरे–धीरे शिथिल हो जाती है । जब आपकी रक्ताभिसरण संस्था भी धीरे–धीरे शिथिल हो जाती है । जब आपके ज्ञान तंतु एंव गति तंतु ये भी शिथिल हो जाते हैं । ये छः अपने अपने गोलक में चले जाते हैं । इसी को हम बाह्य संवेदना शून्यत्व का नाम देते हैं । यही है प्रत्याहार । प्रत्याहार के बिना ध्यान–धारणा सम्भव नहीं है । धारणा हो ही नहीं सकती ।

धारणासु च योग्यता मनस। (योगसूत्र-2.52-53)

जब मन धारण के योग्य हो जाता है तब आप कुछ नहीं करते, वो अपने आप होता है । क्या होता है ?

क्षीण वृत्तेरभिजातस्येव मणेर्ग्रहीतृ–ग्रहण –ग्रह्मेषु तत्स्थतदश्जनता समपात्ति

(पातं. 1–41)

आपका जो चित्त है, आपकी जो बुद्धि है, वह जड है, आत्मा चेतन है इस आत्मा की चेतनता से वो चेतन होती रहती है । जब ये चेतनता सब छहों केन्द्रों को छोड़कर अपने गोलक में पहुंच जाती हैं, तब आपकी जो बुद्धि है, वो स्फटिक मणिवत् पारदर्शक हो जाती है । यानि कि तब आपकी बुद्धि पारदर्शिता को प्राप्त होती है और जैसे ही आपकी बुद्धि पारदर्शिता को प्राप्त हुई । आपका काम बन गया ।

'योगश्चितवृत्तिनिरोधः'। (योगसूत्र-1 . 2) – ये ठीक है। परन्तु बिना सद्गुरू के, बिना सत्पुरूष के, एकाग्रता और निरोध होना कष्टसाध्य है । असाध्य कुछ भी

नहीं है, तथा निरोध होना कष्टसाध्य अवश्य है । इसके लिये तुम्हें सतगुरू चाहिये और सतगुरू से क्या चाहिये ?

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्गं पथस्तत्कवयो वदन्ति ॥

"उठो, जागो, वरिष्ठ पुरुषों को पाकर उनसे बोध प्राप्त करो। छुरी की तीक्ष्णा धार पर चलकर उसे पार करने के समान दुर्गम है यह पथ ऐसा है - ऋषिगण कहते हैं।

(<u>कठोपनिषद्अध्याय १वल्ली ३, Verse १४</u>)

ये ज्ञान मार्ग है । आपके जीवन में ज्ञान की भी आवश्यकता है । कर्मरहित आज कोई भी व्यक्ति नहीं है । अजगर भी खाने के लिये कार्य करता है, केवल अपने पेट भरने के लिये । हम अजगर तो नहीं है । हमारा काम है अपने आपको जानें और अपने आपको जान कर, हमें जो अनुभव प्राप्त हुये हैं, उसका सारे संसार में, जग में, घर–घर जाकर, व्यक्ति–व्यक्ति के पास जाकर प्रचार व प्रसार करना । ये हमारा कर्तव्य है, मानवीय कर्तव्य । मैंने इसे स्वीकार कर लिया है और घर द्वार सब छोड़कर आज तक हम बाहर हैं । पर्यटन में हैं । तात्पर्य ये कि जो प्राप्त होता है ये ज्यों का त्यों जमा रहता है आपके मस्तिष्क में । **'नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते' ।**

संत कबीर ने कहॉ – 'भक्तिबीज पलटे नहीं, जावें जुग अनन्त ।
उंच–नीच घर अवतरे, अंत संत का संत ।।

की हुई भक्ति के बीज निष्फल नहीं होते चाहे अनंतो युग बीत जाये | भक्तिमान जीव सन्त का सन्त ही रहता है चाहे वह ऊँच - नीच माने गये किसी भी वर्ण - जाती में जन्म ले |

ये अपने आप आगे बढता चला जाता है । जब आप दूसरा जन्म लेंगे, तब पिछले जन्म में जहां तक जमा था, उससे आगे बढ़ते जायेंगे । ये बीज पलटता नहीं है । ये वो बीज नहीं है कि बस पानी बरस गया और वो सड़ गया । ये वो बीज नहीं है । पहले ये बीज अकेला है । आप एक बीज बोते हैं तो उसमें जड़ें आती हैं, तने आते हैं, पत्ते आते हैं, फूल आते हैं और फल आते हैं । कितने ही फल आते हैं,

कितने ही बीज हो जाते हैं, लेकिन उनकी जाति, उनका स्वभाव, उनका स्वाद और उनके अन्य जो गुण धर्म आदि हैं, सब ज्यो के त्यों रहते हैं । कोई अन्तर नहीं है । इसलिये पहले वो बीज अकेला (Almighty) था । सबसे पहले –

' सर्वं खल्विदं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन ॥

समस्त विश्व ही ब्रह्म हैं, इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है॥ निरालम्बोपनिषद्Verse ९

एक सत् के सिवाय और कुछ नहीं था पहले । ये सब सृष्टि बाद में हुई । जब सृष्टि है तो कोई सृजन करने वाला भी है, ये बोध होता है हमें तर्क के द्वारा, तर्क के आधार से । जब ये प्रकृति है हमारे सामने, तो बनाने वाला भी कोई है । हम जानें या न जानें । तुलसीदासजी कहते हैं –

नाम का जप करो और ध्यान में लायो, तुम्हारा कल्याण होगा ।

आप सभी जानते हैं कि बड़े लोगों के यहॉ बच्चे को दूध पिलाने के लिये जो धाय माँ रखी जाती है, वह भी उन्हीं की तरह पहनती, खाती है तथा बच्चे का सब कुछ करती है । खिलाती पिलाती है । पालन पोषण करती है । परन्तु उसके मन में हमेशा ये बात रहती है कि ये बच्चा अपना नहीं है । उसी प्रकार से हमारे भी वैयक्तिक, कौटुम्बिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक कर्तव्य हैं । लकिन अपने साक्षात्कार के लिये जो कार्य किया जाता है, केवल वही निष्काम कर्म है । वो– **स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्** याने आगे चलकर जब ये निष्काम कर्म अखंड हो जाता है, तब एक वृत्ति बन जाती है तो –

'सोऽहं अस्मि इक वृत्ति अखंडा । दीप शिखा सोई परम प्रचंडा' ।।

स्मि' (वह ब्रह्म मैं हूँ) यह जो अखंड (तैलधारावत कभी न टूटने वाली) वृत्ति है, वही (उस ज्ञानदीपक की) परम प्रचंड दीपशिखा (लौ) है। (इस प्रकार) जब आत्मानुभव के सुख का सुंदर प्रकाश फैलता है , तब संसार के मूल भेद रूपी भ्रम का नाश हो जाता है,॥1॥

जब आपकी बुद्धि में आत्मा अपने आपको स्वयं प्रगट कर देती है–तब "**आत्मा स्वयं ज्योतिर्भवति"** आपको आत्मा का दर्शन हो जाता है और यह धर्म, यह निष्काम कर्म अखंड रूपधारण कर लेता है। यह सब कार्य प्रकृति द्वारा हो जाता है । प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म है क्योंकि प्रकृति को क्रिया कभी बंद नहीं होती । उसे कभी कोई रोक नहीं सका, न जान सका । मालूम नहीं कब से है ये । ये पुरूष और प्रकृति दोनों अनादि है । इस प्रकार से यह क्रिया आबाद गति से, पूरी शक्ति से चलती रहती है, अखंड रूप से, जिसको पूर्ण कहा गया है, इसे कोई नहीं जानता, ये कब से है ? बताया गया है– तो हर पदार्थ में जो मकार है, उसको हलन्त कर दिया गया, अनुस्वार बना दिया गया । अनुस्वार का उच्चारण नहीं हो सकता, जब तक दूसरा उसके साथ जोड़ न दिया जाये । वो क्या है जो उच्चारित नहीं होता ? क्या है वो, जिससे आप अपने आपका उठाते हैं, वस्तु उठाते हैं– वो हैं – शक्ति । वहीं दिव्य शक्ति है । वहीं **Divine Energy है वही आप हैं । अरे बाबा !**

'ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतन सहज अमर सुख राशि ।। गोस्वामी तुलसीदास रचित राम चरित मानस के उत्तरकांड

जीव अविनाशी तत्व है वह ईश्वर का अंश है। उसमें परमात्मा के सब गुण बीज रूप से विद्यमान है। *जीव* को अनन्त सुखी, चेतन तथा निर्मल बताया गया है ।

अरे, आप तो सुख की राशि हैं । लेकिन नहीं, हम तो दुखी हैं, हम तो पापी हैं । हम तो यूं हैं, हम तो त्यूं है, क्या हैं ? ये सब इस कारण से है क्योंकि हम अपने आप को भूल गये हैं । अपनी संस्कृति को भूल गये हैं और उनको भी हम भूल गये हैं जिनकी हम सन्तान हैं, जिनकी ये देन है । आज पाश्चात्य वैज्ञानिक लोग मेरे पास आ रहे है, सब भारत आ रहे हैं । लेकिन ये सब बचने के लिये भारत आ रहे हैं अब । मेरे पास प्रमाण है । तो तात्पर्य ये कि जो प्रकृति का कार्य अबोध गति से चल रहा है, ये ही धर्म है । चाणक्य ने भी कहा हैः–

'चला लक्ष्मी, चला प्राणा, चलाचले च संसारे'।

'धर्म एको हि निश्चला': ।।

लक्ष्मी चंचल है, प्राण, जीवन, शरीर सब कुछ चंचल और नाशवान है । संसार में केवल धर्म ही निश्चल है ये जो धर्म है, ये निश्चल है । ये परम है, ये निष्काम है और शांत है । अगर आपको शांति पाना है तो यह शांति बाह्य जगत में नहीं है । जब तक आप अपने आप में प्रवेश नहीं करेंगे, जब तक श्रद्धा विश्वास को अपने आप में जागृत नहीं कर पायेगे, तब तक आपका आंतरिक जगत में प्रवेश हो ही नहीं सकता और जब तक आंतरिक जगत में प्रवेश नहीं होता, तब तक शांति सैकड़ों कोस , सैकड़ों जन्म दूर है । तो तात्पर्य ये कहने का कि **'ध्यान निविषयं मनः'** । धर्म ये अखंड है । प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म है । देखिये, ये प्रकृति, जो हमारे सामने है, कल्प–कल्पान्तर के बाद, मनवंतर के बाद भी ज्यों की त्यों है । वह अपना कार्य स्वंय करती है । किसी के रोकने से रुकती नहीं है, आप संकल्प भले ही कर लें, परन्तु एक पौधा आप नहीं बना सकते ।

इसलिये धर्म क्रिया है । प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म है । बाकी हमको नहीं मालूम कौन क्या धर्म का विश्लेषण करता है ? अर्थ करता है । तो **'ध्यानं निर्विषयम् मन'** । अगर आपको जन्म मरण के भय से दूर होना है तो । **स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्** एक बार भी एक थोड़ी flash light माने वो प्रकाश, आत्म प्रकाश आपकी बुद्धि में प्रकाशित हुआ तो इस जन्म मरण के भय से आपको छुटकारा मिल जाता है– ऐसा भगवान श्रीकृष्ण ने भी हमको अभिवचन दिया है । अब इससे अधिक विस्तार करना हमारी बुद्धि से बाहर की बात है । आप बस अपने आपको जानो । मनुष्य कमजोर नहीं है–

Man is not a weak creation.
Man can make his character and destiny.

याने चरित्र जिसका नाम चारित्र्य है । जैसे गुरूजी का थप्पड़ खाकर राजकुमार होते हुए भी यधिष्ठिर को न तो गुस्सा आया, न उनके चेहरे पर किसी प्रकार की विकृति आई । उन्होंने कहा– कि गुरूजी ने हमारे भले के लिये हमें मारा। जिसके कारण अब हम कुछ बोल सकेंगे । क्योंकि केवल आप बीति ही सत्य है। **तुका कहे– संत वही, जो घात सहे अनन्त** ।

ये साधारण बात नहीं है, ये मानव जन्म कोई साधारण जन्म नहीं है । कहने का तात्पर्य ये है कि Man can make his character and destiny. Therefore he is responsible for his own sufferings what ever it may be. May be good or bad, may be sweet or bitter. Birth and rebirth depend on thy will. तुम्हारी इच्छा शक्ति पर निर्भर है तुम अपने आप को नीचे उतारकर चाहे पाताल में पहुंच जाओ या समाज में मुकुट मणि बन जाओ – सब तुम्हारे ऊपर निर्भर है । तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है । हमारी कुछ ऐसी आदत, ऐसी वृत्ति बन गयी है कि हम अपने को बचाने क लिये दूसरों पर आरोप करते हैं । ये आरोप करना बंद करो ।

हम बैठे– बैठे देखते हैं, ऐसा है, ऐसा नहीं है । Realize that-‘ I am’ (It is understood) but do not think that- ‘I am’. Yes, this is the main secret in it. Your duty is ‘to be’, ‘ to be positive’. ये मुझे Certificate मिल चुका है कि देखो– गुरूजी हमेशा तैयार रहते हैं, कभी न नहीं कहते । जब जैसा समय आ जाये, बस तैयार रहते हैं । मैं तो अभी खोज में लगा हुआ हूँ । तात्पर्य ये कि – **‘धर्म एको हि निश्चला’**– तुम धर्मात्मा बनो, तभी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष मिलेगा । ये धर्म जब आपको प्राप्त होगा, तब अर्थ की कोई कमी नहीं होगी, कोई अभाव नहीं होगा । तुम्हारी सभी कामनायें पूर्ण होंगी, जब जैसा समय आएगा आपके जीवन में, समाज अपने आप जमा हो जाएगा और सभी लोग कार्यो में अपने आप सहयोग देकर कार्य पूरा कर देगें और आप मुक्त–याने बंधन से रहित हो जायेंगे। कौन सा बंधन ? अगर आपको जगत में रहकर बंधन रहित हाना है तो आपको साधना करनी होगी । जिस प्रकार से निरूपण किया गया है, उसी प्रकार से बिना किसी संशय के, पूर्ण विश्वास के साथ करना है। क्योंकि –

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।

नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ।। (भगवद् गीता 4.40)

विवेकहीन और श्रद्धारहित संशयात्मा मनुष्यका पतन हो जाता है। ऐसे संशयात्मा मनुष्यके लिये न यह लोक है न परलोक है और न सुख ही है। संशय कब तक दूर नहीं होगा, कोई बता नहीं सकते हैं ।

गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है–

रघुपति - भगति करत कठिनाई ।

कहत सुगम करनी अपार जानै सोइ जेहि बनि आई ॥१॥

जो जेहि कला कुसल ताकहँ सोइ सुलभ सदा सुखकारी ।

सफरी सनमुख जल - प्रवाह सुरसरी बहै गज भारी ॥२॥

ज्यों सर्करा मिलै सिकता महँ , बलतें न कोउ बिलगावै ।

अति रसग्य सूच्छम पिपीलिका , बिनु प्रयास ही पावै ॥३॥

सकल दृश्य निज उदर मेलि , सोवै निद्रा तजि जोगी ।

सोइ हरिपद अनुभवै परम सुख , अतिसय द्वैत - बियोगी ॥४॥

सोक मोह भय हरष दिवस - निसि देस - काल तहँ नाहीं ।

तुलसिदास यहि दसाहीन संसय निरमूल न जाहीं ॥५॥

भावार्थः - श्रीरघुनाथजीकी भक्ति करनेमें बड़ी कठिनता है । कहना तो सहज हैं , पर उसका करना कठिन । इसे वही जानता है जिससे वह करते बन गयी ॥१॥

जो जिस कलामें चतुर हैं , उसीके लिये वह सरल और सदा सुख देनेवाली है । जैसे (छोटी - सी) मछली तो गंगाजीकी धाराके सामने चली जाती है , पर बड़ा भारी हाथी बह जाता है (क्योंकि मछलीकी तरह उसमें तैरना नहीं जानता ॥२॥

जैसे यदि धूलमें चीनी मिल जाय तो उसे कोई भी जोर लगाकर अलग नहीं कर सकता , किन्तु उसके रसको जाननेवाली एक छोटी - सी चींटी उसे अनायास ही (अलग करके) पा जाती हैं ॥३॥

जो योगी दृश्यमात्रको अपने पेटमें रख (ब्रह्ममें मायाको समेटकर , परमेश्वररुप कारणमें कार्यरुप जगतका लय करके) (अज्ञान) निद्राको त्यागकर सोता है , वही

द्वैतसे आत्यन्तिकरुपसे मुक्त हुआ पुरुष भगवानके परम पदके परमानन्दकी प्रत्यक्ष अनुभूति कर सकता है ॥४॥

इस अवस्थामें शोक , मोह , भय , हर्ष , दिन - रात और देश - काल नहीं रह जाते । (एक सच्चिदानन्दघन प्रभु ही रह जाता है ।) किन्तु हे तुलसीदास ! जबतक इस दशाकी प्राप्ति नहीं होती , तबतक संशयका समूल नाश नहीं होता ॥५॥

''किसी को नीचा दिखाकर खुद को बड़ा साबित करना, बड़प्पन की निशानी नहीं है, सही रूप से बड़ा आदमो वह है जो हर एक व्यक्ति को अपने से बड़ा समझता है, सम्मान देता है ।''

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

।

भारत की वैदिक संस्कृति

भारत की जो हमारी संस्कृति है, ये वैदिक संस्कृति है । इस वैदिक संस्कृति का मूल आधार वेद है । विद् शब्द से वेद की व्युत्पत्ति हुई । विद् धातु माने–जानने के लिये और वेद का अर्थ होता है ज्ञान । वेद के चार नाम सुनने में आते है – **ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद और सामवेद** । वैसे तो उपवेद बहुत से हैं लेकिन मूल एक ही है जिसको **यजुर्वेद** कहते है । ये चार भाग बाद में कर दिये गये जैसे– जैसे काल व्यतीत हुआ । उस काल में अलग अलग अभ्यास कराना प्रारम्भ हो गया था, जो बाद में कम होता गया, जिससे आयु भी कम होती गई शिष्य की । वैदिक काल में हम बहुत ही उन्नत थे, वह स्वर्ण युग था । उस काल में कोई भीख नहीं मांगता था । यदि किसी दरवाजे पर खाना पीना होता था, कोई यज्ञ होता था तो भिक्षा लेने वाले ही नहीं होते थे । लोग इतने समृद्ध और ज्ञान से पूर्ण थे । भिक्षावृत्ति बिल्कुल नहीं थी ।

वैदिक काल में हम दस वर्ग में बंटे हुए थे । ये जाति, **Casteism** नहीं था, बल्कि सब समाज थे केवल वर्गीकरण कर दिया गया था । परमहंस, देव, विप्र, मुनि, ऋषि, द्विज। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र– ये चार आश्रम थे । शूद्र कोई आश्रम नहीं था बल्कि जन्म से ये सभी शूद्र थे ।

"जन्मना जायते **शूद्रः"** इसका तात्पर्य क्या है ?

'**जन्मना जायते शूद्रः**– प्रत्येक व्यक्ति चाहे किसी भी आश्रम में हो, चाहे किसी भी वर्ग या वर्ण का हो, जन्म से सभी शूद्र हैं । 'जन्मना जायते शूद्रः' **'संस्कारात् भवेत् द्विजः'** जनेऊ संस्कार, जिसको उपनयन संस्कार भी कहते हैं, जब कर दिया जाता है, तब वो द्विज होता है माने दूसरा जन्म होता है । इसके बाद वेदों का अध्ययन हो जाता है । वेदों के अध्ययन के पश्चात् अभ्यास हो जाता है, तब विप्र

होता है । ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः – ब्रह्म, जो परम आत्मा हो जाता है, तब उसको ब्राह्मण कहा गया है, वो चाहे कोई भी हो । जब सतत् अभ्यास और अध्ययन के द्वारा उस परम अवस्था को पाकर, जब वो स्थिर हो जाता है, तब वो मुक्त माना गया है । जीवन–मरण से, इस अन्नमय कोष से उसकी मुक्ति हो जाती है, छुटकारा हो जाता है । तब उसको सम्यक जीवन, दिव्य जीवन प्राप्त होता है । सांसारिक प्रपंच से कोई कहीं नहीं बचता । लेकिन उनकी शक्तियाँ, उनके वैभव तथा उनके देय सब भिन्न होते हैं । हमारा अन्नमय कोश होने से हम ये सब देख नहीं पाते, समझ नहीं पाते, एवं जान नहीं पाते, लेकिन ये सब सत्य हैं । इस प्रकार से हमारा जीवन बदलता जाता है पर आश्रम चार ही हैं ।

ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास, ये चार आश्रम बतलाये गये हैं, ये बाद में आये । वैदिककाल में वेदाध्यायी लोग रहते थे । वेद जो हैं, जिनके हमारे सामने चार भाग कर दिये गये हैं, अलौकिक हैं । अलौकिक का अर्थ होता है – जो न देखा जाय– अपौरुषेयता जो पौरुषेय या मनुष्य का बनाया हुआ न हो ,बल्कि ईश्वर या देवताओं का बनाया हुआ हो। कार्य जो मनुष्य की शक्ति से बाहर हो।

अपने आपको जानना, ये प्रथम कर्तव्य है । तव्य माने योग्य । कृ धातु से कर्तव्य शब्द बना है । इससे कर्तव्य शब्द की व्युत्पत्ति है । तो योग्य क्या है ? अपने आपको जानना, अपने आपको समझना, इसमें जो आत्मा है वही जीव है, वही आत्मा है, और वही परम है उसे आपको विकसित करना होगा, प्राप्त करना होगा । ये जो वेद है । ये योगियों को दीर्घकालीन की समाधि में रहने पर प्राप्त हुआ है। उनको आकाशवाणी के द्वारा, दिव्य वाणी द्वारा जो मिला है । वो सत्य है । आज भी सत्य है, तब भी सत्य था और आगे भी रहेगा । वो वेद क्या है ? हमारे यहां उसे नाम दिया गया है **ऋग्वेद** । चारों वेदों में से एक और पहला वेद । **ऋग् एक पद और वेद दूसरा पद । तो ऋग् से हम क्या समझे ? वेद का अर्थ तो है ज्ञान । देखा जाये तो ऋग् का अर्थ ज्ञान होना चाहिये । ऋग् में क्या चीज है ? वो गाया जाता है । उसमें जो ऋचा है, वो स्तुति है क्योंकि गाई गई है, स्तुति की गई है तो उनने कहा कि ये ऋग् है ऋचा है, वो रूच शब्द है 'कृत प्रत्यय से ऋचा याने स्त्रीलिंग शब्द की उत्पत्ति है । अब यहां पर जो ऋग् शब्द**

है– ऋग् माने खड़ी करना–उसको अर्थात ऋचा–जो गाया गया है, वो जो स्तुति की गई है उसको समझना और समझाना और जानना । जो प्रत्यय बाद में लाया गया है, गति दना है उसको । किसको खड़ी करना है–जो प्रसुप्त है, सोई हुई है लेकिन पड़ी हुई है, उसको जगाना है । उसे गति देना है । **स्वरों में तो 'ऋ' जो सोलह सप्तम स्वर है उसका अर्थ होता है 'ऋ' का जानना, पाना, हिलाना, घर्षण करना, अतिकमण करना और रोकना । ये सात अर्थ होते हैं । ऋ केवल एक स्वर है, संकेत मात्र है । ये है आपका प्रथम कर्तव्य ।**

स्वामी रामदास जी ने कहा है कि –

'वन्हीं तो **चेतवावा रे**। **चेतविताचि चेततो**

याने आग लगाओ । क्या कहते हो ? आग लगाओ और फूँक दो । तो फूँके किसको ? ये भी केवल संकेत में आएगा ।

ऋग्वेद में ये प्रथम मंत्र है––

ॐ अग्निमीले **पुरोहितं** यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्। ॥१॥

अग्नि एक नाम नहीं है, उसका दर्शन होता है । अग्नि नाम ब्रह्म का है, वो महान है । वृहद् धातु से ब्रह्म शब्द की उत्पत्ति हुई– याने आप अपने आपको उच्चतम स्थान में ले जा सकते हैं और निम्न से निम्न स्थान पर भी ला सकते हैं । आप स्वयं अधिकारी हैं, अपने आपके लिये । कहा गया है कि ये जो अग्नि है इसी को जलाना है, इसी को पाना है । इसको समझना है आपको । ये अग्नि कौन सी है । अग्नि कहां और कैसे लगाना है–

'वन्हीं तो **चेतवावा रे** । चेतविताचि चेततो ।

कहने से नहीं होता है । ये गुरूमुखों के द्वारा, गुरूजी के सानिध्य से, सतपुरूष या सदगुरू के सानिध्य में रहकर होता है । ये जो सत् शक्ति है, उसको खड़ी करना है । इस संसार में हमारे संस्कार तथा हमारी वासनायें, इच्छायें, कामनाएं, हमारे काम, क्रोध, मद, मोह, लाभ, मान, मत्सर तथा मृत्यु भय हैं । एक भय रूपी आवरण ने ही उसको इतना दबा दिया है कि वो दबती ही चली जा रही है । उठने के

लिये उसको संधि ही नहीं मिलती और उसको उठाने का कभी हम प्रयास भी नहीं कर सकते । तो उसको कैसे लगाना, कैसे खड़ी करना, ये उपाय माल्म होने चाहिये । ये ज्ञान गुरूमुख के द्वारा ही होता है । गुरू भी कनफुकिया गुरू नहीं, सद्गुरू, सत्पुरूष, जिन्होंने अपनी कुण्डलिनी जागृत कर ली है । इसीलिये उसे सत् कहा है, **सत्शक्ति** कहा है । गीता में भी उसे **तत् सत्** कहा है । वेदों में भी उसे **सत्** कहा है । इस प्रकार से तत् और सत् है । ये सत् ही कुण्डलिनी है, यही सत् शक्ति है, यही महाशक्ति है, यही Almighty है यही God है, यही अल्लाह है और इसी प्रकार से अनन्त नाम हैं इसके । हर एक संप्रदाय ने इसे इसी तरह से माना है और कहा है । लेकिन इस महाशक्ति का हमारे अन्दर में होते हुए भी दुर्गति दूर क्यों नहीं हो रही है ? क्योंकि हम अपनी शक्ति को नहीं जानते । हम अपने आपको नहीं जानते, नहीं पहचानते । इसलिये Know the self, know yourself । अपने आपको जानो, अपने आपको समझो, आपने आपको देखो । कहते हैं ना कि, खुद की सूरत तो देख लो, क्या बातें करते हो । आईन में जाकर मुंह तो देख लो । जिस आइन में देखना है वो तो नकली आइना है । उसमें केवल सूरत देखी जाती है । पर ये जो आइना है, जिसमें अपने आपको जानो । अपने आपको जानकर, सारी दुनिया को जान जाओगे । अभी हम केवल अपने आपको छोड़कर, सारी दुनिया को जानते हैं, । तो कोई अंतर नहीं है, जैसे तुम हो वैसे हम भी हैं, ता कुंडलिनी किस प्रकार जगाई जाये, इसका ज्ञान तुमको प्राप्त करना है ये ऋग्वेद । ये सत्पुरूष के द्वारा ही होता है ।

कठोपनिषद में दिया है–

"**उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य** वरान्निबोधत।"

अर्थात् उठो, जागो, और ध्येय की प्राप्ति तक रूको मत। मैं सिर्फ और सिर्फ प्रेम की शिक्षा देता हूं और मेरी सारी शिक्षा वेदों के उन महान सत्यों पर आधारित है जो हमें समानता और आत्मा की सर्वत्रता का ज्ञान देती है।

ये जो महान लोग हो गये हैं, जिनको सारा ज्ञान था। उनके ऊपर हमारा सारा जीवन निर्भर है । उनका ये कहना ह कि उठो– **उत्तिष्ठत** माने प्रतिष्ठत । तकार प्रत्यक्ष है, यदि निकाल दिया जाये तो उतिष्ठत–उठो, उत्तिष्ठत याने उठना

चाहिये, चाहिये नहीं, उठो । **जाग्रत** माने जागो, छोड़ो बिस्तर, उठो, सतपुरुष को प्राप्त कर, उनके सानिाध्य में रहकर, संधि मिल जाने पर जब तक वो शक्ति आपका प्राप्त नहीं होती, तब तक उसको छोड़ना नहीं चाहिये । जब तक पूर्ण बोध नहीं हो जाता (ताकि कोई बोध होना बाकी न रह जाए) यानि **आत्मबोध**, तब तक **आत्मसाक्षात्कार** नहीं हो जाता, तब तक नहीं छोड़ना चाहिये । ये दुर्गम पथ है । ये संसार का पथ, ये प्रपंच कुछ ऐसे हैं कि हिले कि कटे । ये छुरे की धार जैसी है यानि ये दो धारी तलवार है । इस पथ पर चलना यानि तलवार के दोनों धार पर चलना है। अगर इसमें से निकलना है तो सतगुरु–सानिध्य प्राप्त करके इसे प्राप्त कर लो । पाना–याने क्या पाना है–? क्या जानना है–? कहां जाना आना है–? कहां नहीं आना जाना है ? इससे बढ़कर क्या पाना है आपको ? हिलाना है, अगर तो इसको हिलाइये । आपको घर्षण करना है याने ध्यान में लाना पड़ता है । ध्यान एक घर्षण है । चंदन कितना शीतल है, लेकिन यदि चंदन की दो लकडियों के टुकडे को आपस में पकड़कर घिसे तो अग्नि प्रगट हो जाती है । इसलिये घर्षण भी करना पड़ता है । ध्यान के बिना ये मिलता नहीं । तो क्या दिया गया है ? उसमें ध्यान करने को कहा गया है । आपको एक– एक **Centre** ऊपर ले जाना पड़ता है । जागने पर भी वो तुम्हारे कब्जे में नहीं रहती । आपको सतगुरु के द्वारा एक–एक **Centre** उठकर ऊपर ले जाना पड़ता है, उसको वहीं रखना पड़ता है, अवक्षेप करना पड़ता है । तो ये अतिक्रमण करना है माने एक–एक केन्द्र को पार करना और फिर नीचे नहीं आना है । एक दूसरे केन्द्र से ऊपर ही जाना । इसी जन्म में सब होता है, लेकिन जब तक पूर्ण बोध नहीं होता है ऐसे सतपुरुष, सद्गुरू के पास जाकर, उसके सानिध्य में रहना होगा । **शंकराचार्य की किताब है 'आत्मबोध'**– उसमें तूर्यावस्था का वर्णन है । पर जब तक हमको कुछ मालूम नहीं, बाद में भूल भी जाते हैं तो अवस्था पढ़कर क्या करेंगे हम ? ये है ऋग्वेद । **ये** ही स्तुति की गई है, जो मैंने कहा है । गीत गाये गए हैं ऋग्वेद के अंदर, दर्शन कुछ नहीं है । वे पुरूष कौन सा है, जिसको आपको प्राप्त करना है ? उपनिषद में दिया है–

त्देजति तन्नेजति तद् दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ।।५।। ईशावास्योपनिषद्

वह आत्म तत्व चलता है और नहीं भी चलता है । वह कहीं आता जाता नहीं, वह दूर है और तुम्हारे पास में भी है। वह सबके अंतर्गत है और वही इस सबके बाहर भी है, माने वो सब जगह है । कण कण में व्याप्त है । अंदर–बाहर, ऊपर–नीचे, दाहिने–बायें, आगे–पीछे, सब जगह वही है, लेकिन दिखता नहीं । हाँ, गुरू के बताये उपाय से, उसके द्वारा सिखाये गये method of worship के द्वारा, अगर आप चाहें, तो वो प्राप्त हो जाएगा । तो ऋगवेद का ये अर्थ हमने पाया और आपके सामने रखा कि 'ऋ' जो शब्द होता है ये संकेत है और ग गतिमान । तो अभी जो हमारी दुर्गति है, वो दूर होकर, हमारी सुगति हो जायेगी जो आप सोचेंगे, वहीं होगा । आपको जो चाहिये, वही मिलेगा । संसार में आपका भी कल्याण होगा और लोगों का भी कल्याण होगा । तब आप मंगलमूर्ति होंगे । मंगलमूर्ति का अर्थ ये नहीं होता कि डिडोरा पीटे, गाये बजाये और पीये–खाये । मंगल कहते हैं कल्पतरू को। आप कल्पतरू के नीचे जाओ। जो चाहो, जैसा चाहो, वैसा परिणाम झट आपके सामने आ जाता है । ये सत्य है । सत्य की परिभाषा है कि सत्य प्रतिष्ठान–जैसा आप सोचेंगे, वैसा आपको मिल जायेगा । वो फल आपके सामने आ जायेगा । ये है सत्य । आप जो करेंगे उसका फल पीछे–पीछे आपकी प्रकृति में चला आयेगा, कल मिलेगा, परसों मिलेगा ऐसा नहीं । वो तत्काल पीछे–पीछे है । तो ये है ऋग्वेद । उसका वर्णन इस प्रकार किया है कि वो पुरूष कैसा है? वह विराट पुरूष है–

"**तात तिष्ठति दशांगुलाम** "

इस भूमि को स्पर्श करके पाताल से आकाश तक दिव्य लोक पर्यन्त एक ही पुरूष है और कुछ नहीं । यही वेद है । इस प्रकार से आपको जानना चाहिये । पुरूष माने अभी जो आपको बताया है–

नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन्।। 5.13।। श्रीमद् भगवद्गीता

जो यथार्थ ज्ञानी है वह (वही जितेन्द्रिय पुरुष) समस्त कर्मों को मन से छोड़कर अर्थात् नित्य नैमित्तिक काम्य और निषिद्ध इन सब कर्मोंको कर्मादि में अकर्मदर्शनरूप विवेकबुद्धि के द्वारा त्यागकर सुखपूर्वक स्थित हो जाता है। मन वाणी और शरीर की चेष्टा को छोड़कर परिश्रमरहित प्रसन्नचित्त और आत्मासे अतिरिक्त अन्य सब बाह्य प्रयोजनोंसे निवृत्त हुआ (वह) सुखपूर्वक स्थित होता है ऐसे कहा

जाता है। वशी जितेन्द्रिय पुरुष कहाँ और कैसे रहता है सो कहते हैं नौ द्वारवाले पुर में रहता है। अभिप्राय यह कि दो कान दो नेत्र दो नासिका और एक मुख शब्दादि विषयों को उपलब्ध करने के ये सात द्वार शरीर के ऊपरी भागमें हैं और मलमूत्र का त्याग करने के लिये दो नीचेके अङ्ग में हैं इन नौ द्वारोंवाला शरीर पुर कहलाता है।

इस नौ द्वार के पुर के अंदर जिसका निवास है, ऐसी जो आत्मा है, वही जानने योग्य है । वही, महाशक्ति है, वही कुंडलिनी है, यही ब्रम्ह है, यही God है, यही Almighty है, जो भी आप नाम दे वो सभी कुछ है और कोई दूसरा नहीं । न हमें कहीं आना है, न जाना है । केवल हमें पद्धति मालूम होना चहिये । जब तक ये प्राप्त नहीं होता, तब तक बोध पूर्ण नहीं होता, तब तक सत्गुरू के सानिध्य में रहकर आपको अभ्यास करना है अन्यथा प्रपंच में तो हम फंसे हुये है । अभी हमारे में दुनिया भर के विकार भरे हुये है । सबके सिर पर पगड़ा बधा हुआ है । आकाश का धर्म है स्तब्धता, गुण है शब्द और उसका विकार है काम, क्रोध मोह और भय । सारे मानव प्राणी उसी में फंसे है और हम कहते है कि हम पहुँचे हुये है । काहे के पहुँचे हुये है जब तक ये दोष दूर नहीं हुए, जब तक ये शुद्ध नहीं हुए । सत्य तो बहुत दूर है । जिस दिन सत्य से आप परिचित हो जायेंगे तो – **'किया फलाच्वे तम'**–आप जो किया करते है उसका फल पीछे–पीछे आता है । ठीक उसी तरह जैसे गाय बच्चा देती है, थोड़ी देर बाद, उसका बछड़ा उसके पीछे–पीछे चलता है जहां गाय जाती है । **तो ये है ऋग्वेद** ।

दूसरा है यजुर्वेद – इसमें ये ज्ञान है कि भजन कैसे करना ? यानि की हम स्तुति कैसे करें ? उनके protection में उनके बनाये हुये method से हम साधना कैसे करें ? अभ्यास कैसे करें ? ताकि समय समय पर जो विघ्न बाधाऐं उत्पन्न होती हैं, वो सब दूर हों । तीनों बाधॉऐं– दैविक, दैहिक और भौतिक, ये भी आप से दूर होंगी । तो किस प्रकार से ये दूर होती है ? ये सब सत्गुरू के द्वारा प्राप्त होता है । तो यज्ञ करना है, वो है आत्म यज्ञ ।

आत्म साक्षात्कार कैसे हो ? आत्मा में हम आत्मस्थ कैसे हों ? इसके लिये सत्गुरू के द्वारा बताये गये मार्ग पर, उनकी सुरक्षा में, उनके guidance में, उनके आदेशों का पालन हो । पर संदेह नहीं चाहिये, संशय नहीं चाहिये, शंका नहीं होनी चाहिये

। इसे श्रद्धा कहते है । श्रद्धा माने एक बार आपने धारण कर लिया तो धारण कर लिया, एक बार आपने वरण कर लिया तो कर लिया । जिस प्रकार भारतीय संस्कृति में स्त्री एक बार पति का वरण करके दूसरे पति का वरण नहीं करती । इतिहास में इसका उदाहरण सावित्री और सत्यवान की कथा हैं । जब सावित्री ने सत्यवान का वरण किया तो नारद जी ने ये बताया था कि सत्यवान की आयु, केवल एक साल है । सावित्री ने कहा, कोई बात नहों, जब आप जानते है कि आयु एक साल है तो आप ये युक्ति भी बताये कि हम इस अकाल मृत्यु को कैसे टाल सकेंगे ? इस पर नारद जी ने सावित्री को योग मार्ग की दीक्षा दी । सावित्री ने विवाह के बाद, एक वर्ष पर्यन्त, सास–ससुर के गृह में रहकर, ब्रम्हचर्य व्रत को धारण कर गायत्री मंत्र की साधना की । एक वर्ष पूरा होने पर उसे सारी शक्तियां मिल गईं । एक साल बाद यमराज आये और सत्यवान के प्राण ले गये । सावित्री आसन लगाकर बैठ गई और योग मार्ग से यमराज का पीछा कर अपने पति के प्राण वापस ले आई। यह कथा सारी दुनिया जानती है । लेकिन तुमको ये भी तो मालूम होना चाहिये कि ये क्या है ? हमारे बाप दादों को भी मालूम नहीं, पर हम लड़की को सती सावित्री जैसे होने का आशीर्वाद कहते हैं । हमें विद्या ही नहीं मालूम–ये योग विद्या अपने आपको जानने की है– हम बच्चों को क्या देते है। खाली बोलते हैं। बोलने से नहीं होता, करने से होता है । उदाहरण हमारे सामने है कि जा बेटी सती सावित्री हो माने इस शक्ति से संपन्न हो और समय आने पर अकाल मृत्यु को भी आप टाल सकते हैं । अपनी और औरों की भी । तो मेरा तात्पर्य है कि ये वो शक्ति है । तो यजुर्वेद माने उसके जो मंत्र हैं, यज्ञ करने के लिये हैं, आहुति देने के लिये मंत्र, माने–आत्मा को प्राप्त करने के लिये, उसमें जो स्तुति बताई गई है उसे आप करें । याचक बनकर यत्न करना है । ये है आपका **यजुर्वेद** ।

अब अथर्ववेद– अथर्व नाम प्राण का है । आपको प्राणों का स्थान मालूम होना चाहिये । प्राणों की शक्ति मालूम होनी चाहिये । प्राणों के कार्य मालूम होना चाहिये । प्राण की सीमा मालूम होनी चाहिये । शरीर में धर्म, मंत्र, औषधि सभी प्रकार की विद्या है। तो शरीर का ज्ञान भी हाना चाहिये । शरीर यदि रूग्ण है तो औषधि भी मालूम होना चाहिये । औषधि से आप अपना शरीर सुव्यवस्थित करें और मन में मंत्रों के द्वारा किये गये जाप से शक्ति बढ़ाना चाहिये । तो तुम्हें प्राण व

शरीर इसका भी बोध होना चाहिये । आपको Anatomy ही नहीं physiology भी आपको मालूम होनी चाहिये और व्याधि आने पर औषधि भी मालूम होना चाहिये । ये है, अथर्ववेद है ।

अब हम जाते हैं **सामवेद** – इसमें 'सा' और 'म' दो पद हैं । तो ये भी मालूम होना चाहिये आपको कि 'सा' माने प्रकृति और 'म' माने पुरूष । यान जड़ ओर चेतन के संयोग से, matter व energy के संयोग से, ये सृष्टि हमारे सामने है । Energy ही matter है और matter ही energy है, ये सिद्ध हो गया है । ये सारी सृष्टि जो हमारे सामने है, ये परिवर्तनशील है, चलायमान है और हम चलायमान के पीछे जो भी हम कर रहे हैं, इससे हम कहीं के भी नहीं रह जाते ।

'चला लक्ष्मी, चला प्राणा, चलाचले च संसारे'।

'धर्म एको हि निश्चला': ।।

ये लक्ष्मी भी चलायमान है , प्राण भी चलायमान हैं, ये संसार भी चलायमान है । ये सब कुछ चलायमान है तो धर्म ही क्यों नहीं ? तो धर्म क्या चीज है ? **धारणात् धर्म इत्युच्यते** । हम जो धारण करते हैं, जिससे हम अपने आपको जान सकें । अपनी आत्मा का साक्षात्कार कर सकें, अपने आपको को देख सकें, जान सकें और ये धारणा हो कि मैं आत्मा हूँ मैं देह नहीं हूँ । लक्ष्मी नहीं हूँ, मैं प्रपंच नहीं हूँ मैं ये मिट्टी नहीं, आग नहीं, पानी नहीं, आकाश नहीं, वायु नहीं– जिसमें हम फंसे हैं– मैं आत्मा हूँ । अहं आत्मा । मै आत्मा हूँ । आत्मा मेरी महान है । आत्मा ही सब कुछ है । वही परम आत्मा है जिसको पाकर मनुष्य परमपद को प्राप्त हो जाता है । आपको जानना चाहिये कि ये जो शक्ति प्रसुप्त है, उसे हम कैसे जागृत करें ? सतगुरू, सतपुरूष के प्राप्त होने पर, उसके पास जाकर, उसके सानिध्य में रहकर, उसके आदेशानुसार, अभ्यास करें और जब तक आपको पूर्ण बोध न हो जाये, तब तक न छोड़ें । इस संसार में जन्म लेने के बाद पाप और पुण्य के सिवाय और शुभ–अशुभ कर्म के सिवाय क्या है ? अपने आपको को जानने के कर्तव्य से क्यों विमुख होते हैं ? अपने सम्मुख क्यों नहीं हो जाते ? अपने आपको देखना चाहिये । यही स्वामी रामदास जी ने कहा है कि– **स्वरूपानुसन्धान हेचि भक्ति हेचि ज्ञान** याने स्वतः के स्वरूप के अनुसंधान को ही भक्ति कहा गया है और यही ज्ञान है ।

अपने आपको जानने कि जो पद्धति है, यही भक्ति है । भक्ति माने उपाय । भज् धातु का अर्थ सेवा है । किम् प्रत्यय लगाने से अकार व मकार हलंत संयोग करने पर भक्ति बनता है । भक्ति याने सेवा करने की पद्धति ।

श्रीकृष्ण ने कहा है कि मेरा जन्म भी दिव्य है और कर्म भी दिव्य है जिसका कभी कोई प्रारब्ध बनता नहीं, कोई भाग्य बनता नहीं और कोई संचित–वंचित नहीं है । ये सब दिव्यत्य को प्राप्त होना है । इसलिये यदि आपको दिव्यत्य प्राप्त करना है, दिव्य जीवन प्राप्त करना है, तो ये प्रथम कर्तव्य है कि आप अपनी प्रसुप्त शक्ति को जगा लीजिये और जगाकर सतगुरू के उपदेश के द्वारा, आदेश के द्वारा, शनैः शनैः, एक जन्म में नहीं, कई जन्मों बाद, उसी स्थान पर आप पहुँच जायेंगे । ये आश्वासन है हमारा । इसी तरह रामदास जी ने भी कहा है–

'वन्हीं तो **चेतवावा रे**। चेतविताचि चेततो ।

चेततों माने जानना । तो हमारा प्रथम कर्तव्य है, अपने आपको जानना । आज हमारे मां–बाप कहते है, कि तुम पढ़ो यही तुम्हारा प्रथम कर्तव्य है । पढ़ोगे नहीं तो क्या भीख मांगोगे ? चोरी करोगे, जेल जाओगे ? पढ़ो नहीं तो तुम्हारा कोई ठिकाना नहीं। मैं आपके सामने हूँ, मैंने नौ वर्ष की आयु में पढ़ना छोड़ दिया । मैंने अपने पिताजी को कह दिया कि मैं ये विद्या नहीं पढ़ना चाहता। इससे शरीर बेचना पड़ेगा । सत्य कहता हूँ । मेरा ये जन्म से है । इस सत् शक्ति के लिये, इस आत्म शक्ति के लिये, आत्मबोध के लिये, मुझे कोई गुरू नहीं मिला । मैं बहुत फिरा हूँ । मैंने भी बहुत व्रत किये हैं । मैंने भी एकादशी की है। सप्तमी की है और जितने भी व्रत है, सब किये है । जिसने जो कहा, जैसा कहा, वैसा किया हमने । आज 65 साल हो गये घर छोड़े और तब से मैं इसी में लगा हूँ । मुझे जन्म से है, आज से नहीं है । तो तात्पर्य ये है कि आपको विमुख नहीं होना चाहिये । जो आदमी अपने आपसे से विमुख है, वो सबसे विमुख है । कोई भरोसे लायक आदमी नहीं है वो संसार में । जो व्यक्ति अपने से ही विमुख है, अपने से ही विपरीत है, अपने से ही प्रतिकूल है तो वो किसके अनुकूल होगा । आज एक व्यक्ति दूसरे पर भरोसा, विश्वास नहीं करता । इससे घर–घर में, व्यक्ति–व्यक्ति में फूट है । यही कारण है कि हमारी जो शक्ति है, हमारी जो विद्या है, राजविद्या, उसे हम भूल गये है । हर माता–पिता यही चाहते हैं कि हमारी संतान हमारी सेवा करें, वंदना करें । तो आप वो

विद्या सिखाइये न ! आपकी सेवा करेंगे। वंदना करेंगे। सब कुछ करेंगे । जैसी आपकी वृत्ति है। आप अपने बच्चों को वैसा रखें । आप दुख में जी रहे है और निरंतर अपने बच्चों को दुख में शामिल कर रहें हैं । फिर जब बड़े हुये तो फिर भगवान– भगवान किया तो फिर ये कैसे मिलेगा । आप न कभी निकले और न निकलने की कोशिश करते हैं और अपने बच्चों को उसी दुख वाले गड्ढ़े में डाल रहे हैं । ये हमारी समझ में नहीं आता । आज ऐसा व्यवहार घर–घर में है । तो ये चरित्र नहीं है, ये चरित्रहीनता है। ये अनुशासनहीनता है, याने शिक्षण बराबर नहीं है । अनुशासन का पर्याय शब्द है शिक्षण । शिक्षण के अंग होते है । उन अंगों का हम पालन नहीं करते हैं । हमें उनका कोई बोध नहीं । इस योग से ही चरित्र निर्माण होता है और इसी से हमारे चरित्र में नव जीवन का संचार होता है, नई शक्ति मिलती है, नया उत्साह मिलता है ।

हम घर में आदर्श कहलाते हैं । इससे समाज का कल्याण हो सकता है । जब समाज का कल्याण होगा तो देश का भी होगा । ऐसे एक से अनेक हो गये तो राष्ट्र का हित नहीं होगा क्या ? अवश्यमेव होगा । जब राष्ट्र हित होगा तो आप संपन्न होते जायेंगे । आप सर्व सुख संपन्न हो जायेंगे । आज क्या है ? ऊपर से नीचे तक एक ही चीज आपको मिलती है और वो है दुर्गति । ये दुर्गति तभी जा सकती है जब प्रत्यके व्यक्ति अपने आपको जाने, अपने आपको को समझे, तब चरित्र का निर्माण होता है । वरना चरित्र केवल एक पुस्तकीय नाम मात्र है । चरित्र का अर्थ होता है– धर्मम्चर, सत्यम्वद । सत्य बोलो और धर्म से चलो । धर्म माने आत्मा । आत्मसाक्षात्कार यही धर्म है आपका, तब वो धर्मात्मा होता है और जो अनुभव है, जो अपना space है, उससे शक्तिमान हो करके औरों को भी अपने जैसा तैयार कर सकता है । एक गाँव में अगर पचास, पाँच सौ परिवार एकनिष्ट होकर के अपने आपको इस प्रकार से आगे बढ़ाये, अभ्यास करके शक्ति प्राप्त कर लें तो क्या गाँव का कल्याण नहीं होगा ? हम अपनी भूल देंखे । नमस्कार नमस्कार, प्रणाम प्रणाम, साष्टांग प्रणाम, इतने से काम नहीं होता है । धर्मम्चर, धर्म आचरण में लाओं तब, तरण– तारण होता है । तब अपना तारण होता है । समाज का तारण होता है, तब देश का होता है । राष्ट्र का होता है । इस प्रकार योग से अपना कल्याण और राष्ट्र का कल्याण संभव है, ऐसा मेरा मत है ।

तो यही वेद है । वेद माने आत्मवेद माने ज्ञान होना चाहिये ।

ऐक ज्ञानाचें लक्षण | ज्ञान म्हणिजे आत्मज्ञान |
पाहावें आपणासि आपण | या नांव ज्ञान ||१|| **श्रीमत् दासबोध –01**

'' तब आप ज्ञानी है । ज्ञानी कहीं भी आता जाता नहीं वो सदा मुक्त है ।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः। स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः। स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

ऊँ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः, पृथिवी शान्तिः, आपः शान्तिः, औषधयः शान्तिः, वनस्पतयः शान्तिः, विश्वे देवाः शान्तिः, ब्रह्म शान्तिः, सर्व ब्रह्म शान्ति, शान्तिरेव शान्तिः, सा मा सुशान्तिर्भवतुः। सर्वे भवन्ति सुखिनः सर्वे सन्तुः निरामयः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुख भागभवेत्।

जिस तरह से आशीर्वाद देकर गया था, उसी तरह से आज हम सब फिर से इकट्ठे हुये हैं, हम अपने परिवार को आनन्दमग्न पा रहे हैं जिसे देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। कोई भी कार्य करने के पहले वैदिक मंत्र के आधार पर हम आशीर्वाद देते हैं।

सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हो, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हो, ऐसा मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है ।

।। इत्यलम् ओम् शांति, शांति, शांति ।।

परम पूज्य0 गुरूजी – के प्रवचन कुछ अन्श

1. एकाग्रता माने एक के सिवाय कुछ न रहे। विचारों का उदय अस्त होना बन्द हो जाता है, तभी एकाग्रता प्राप्त होती है।
2. जहाँ सत नहीं है ,ये सत का बोध (साक्षात्कार)नहीं है ,वहाँ भाव बिल्कुल नहीं है।अर्थात जहाँ सत है,वही भाव है,अन्यथा ये सब अभाव है। आप बराबर मलरहित हो जायेंगे , खाली अभ्यास करना है। संकल्प चाहिए , ये मैं (आत्मा) हूँ और ये(साक्षात्कार)मुझे प्राप्त करना है।
3. अपने आप को जानने की जो साधना है ,इसी को पुरुषार्थ (आत्म पु•) कहा गया है।श्रद्धा-सत अर्थात सत्य , जिसका ये जग है उसके प्रति होना चाहिए। जब तक अन्तर्यामी गुरु का प्रकाश नहीं होता , तब तक बाह्य उपदेश व्यर्थ है , दीक्षा के समय सद्गुरु शिष्य के अन्तर में प्रविष्ट होकर अन्तर्यामी रूप से शब्दब्रम्हमय ज्ञान का दान करता है। गुरुकृपा पर दृढ़ विश्वास श्रद्धा अचल रखना यही शिष्य का कार्य है। आत्मा तो तुम हो ही , सब कार्य आत्मा से ही हो रहा है ,खाली अपना कचरा साफ करना है।
4. आनन्द शांति चैतन्यज्योति प्रस्फुटित होती है , यही ज्ञान चक्षु का उन्मीलन है। क्रिया की आवश्यकता समाप्त हो जाती है।
।।श्री गुरुजी।।

1. सृष्टि में जो कुछ भी गुण-रूप देखे जाते है , उनमें बाहर भीतर व्याप्त होकर ब्रम्ह ईश्वर नारायण ही स्थित है।
2. मरकर कहाँ जायंगे ? उसी श्री नारायण भगवान वासुदेव के गोद में ,क्योंकि व्यक्तित्व न नष्ट होने वाला है,और न स्वतंत्र होने वाला है।
3. तुम भाव करो न करो-सब ब्रम्ह ही है। जड़ता,दुःख, मृत्यु, द्वैत नाम की कोई चीज है ही नहीं।
4. देह का अभिमान गल गया और ब्रम्हात्मैक्य बोध हो गया तो जहां-जहां मन जाता है, वहां-वहां समाधि ही है।

5. मन को न कहीं से खींचना है , न कहीं भेजना है , जहां से खीचेंगे वह भी ब्रम्ह है,और जहां भेजेंगे वही ब्रम्ह है।
6. चेतन ही चेतन, आनन्द ही आनन्द ही है। इसके अतिरिक्त जो भी प्रतीत हो रहा है, वह बिना हुए भास हो है। वह तुच्छ है,हेय है। यह नियम परमानन्दरूप है, ज्ञानी इस नियम का पालन करते है।
7. जो कुछ नेत्रों से देखता है , जो कानों से सुनता है , जो भी नाक से सूंघता है , जो कुछ भी हाथ से छूता है-वह ब्रम्ह है, ऐसी भावना करे।
8. ब्रम्हातिरिक्त का दर्शन ही भ्रममूलक है।
9. चैतन्य से विजातीय जो कुछ दिखायी देता है-वह हमारी मन-इंद्रियों की चंचलता के कारण,बिना हुए ही दिखाई देता है।
चेतन का विजातीय कोई नहीं है।द्वैत है ही नहीं,सब अद्वैत है।
10. जब सब अपना ही स्वरूप ही है तो किसकी उपेक्षा ,किसकी कामना, किसका संग्रह-परिग्रह या याचना।
11. चित्त और चित्त में आने वाले संस्कारों का त्याग अर्थात चित्त न मैं हूँ ,न चित्त मेरा है। इस संसर्गाध्यास एवं अर्थाध्यास का त्याग ही वास्तविक त्याग है।
12. आकाश में नीलिमा के समान ब्रम्ह में यह प्रपञ्च अस्तित्वहीन होकर भी भासता है,इससे उलझने की आवश्यकता नहीं है।
13. वीणा के तार की जो मध्यम स्थिति होती है ,जीवन की मध्यम स्थिति ठीक है।ज्यादा कसे तो टूट जाएगा,तार ढीले हो तो स्वर न निकलेंगे।
14. तत्व ये है-अपनी इंद्रियों और मन से प्रपञ्च का जो रूप दिखायी पड़ रहा है ,यह चिदात्मा है।
15. भान ही प्रपञ्च रूप में दिखायी दे रहा है ,यह अपना शरीर ,अपना अंतःकरण, दूसरे सब शरीर,सब अंतःकरण भी-ज्ञान के ही रूप है।
16. इस प्रपञ्च के रूप न देखें,इसके तत्व को देखे,तत्व चेतन है।
17. इस दृष्टि से जीवन-मृत्यु , संयोग-वियोग एक समान हो जाते है।अतः प्रपञ्च देखते हुए भी इसके विशेष को न देखें तो इसका नाम-त्याग है।
18. अपने अखण्ड अद्वितीय स्वरूप के अज्ञान के कारण ही प्रतीति होती है।
19. चिदात्मा-प्रकाश-ही-प्रकाश,चेतन-ही-चेतन,केवल ज्ञान मात्र है , उसमें कोई वस्तु नहीं है, इस प्रकार ज्ञानमात्र ही देखना ,वस्तुरूप में प्रपञ्च न देखना-यही प्रपञ्च का त्याग है।

20. महान पुरुष प्रपञ्च का त्याग नहीं करते , वे प्रपञ्चत्व का त्याग करते है , वे दृश्य का नहीं, दृश्यत्व का त्याग करते है।

21. वाणी के साथ मन जिसे प्राप्त न करके लौट आता है , जो मौनतत्व योगियों का गम्य है,बुद्धिमान वह -मौन सर्वदा होवे ।
22. मन के सोचने और शांत रहने का साक्षी-वह चैतन्य है,वही ब्रम्ह है।
23.इस वाणी मन की पहुंच से परे उस योगिगम्य स्थिति का नाम-मौन है।
उसमें जो स्थित है-वह विद्वान है।
।।अपरोक्षानुभूति से।।

1. रात्रि को उसने (गुरुजी ने) स्वयं को अपने कक्ष में बन्द कर लिये। गुरुजी ने धीरे धीरे प्राणायाम से प्रश्वास द्वारा वायु बाहर छोड़ना आरम्भ किये। सारी वायु को बाहर फेंकने के बाद श्वास नहीं लेने के निश्चय पर दृढ़ थे।ध्यान पूर्ण रूप से माथे पर भौहों के बीच उपस्थित सुनहरे प्रकाश पर केंद्रित था। एक एक सेकंड करके एक मिनट बीत गया ,ऐसा प्रतीत हुआ मानों शीघ्र ही दम घुटने वाला है , किन्तु गुरुजी मात्र इच्छा शक्ति से वायु को बाहर रखे,तीसरा मिनट भी बीत गया।
2. ऐसा प्रतीत हुआ मानों वे श्वासावरोध के कारण मृत होकर गिर पड़ेंगे। यदि मृत्यु ही अंत है तो उसे आने देना चाहिए , गुरुजी ने किसी भी कीमत पर वायु को फेफड़ों में प्रवेश करने से रोकने का निश्चय कर रखे थे। कुछ कष्टप्रद क्षण और व्यतीत हो गए।
3. चींटियां रेंगने सदृश्य अनुभूति पैर के अंगूठे से प्रारंभ होकर मन्दगति से ऊपर की ओर अग्रसर होने लगी और नितंबों तक पहुंच कर मेरुदंड के निचले भाग में प्रविष्ट हो गई। यहां बुलबुले उठने का गुरुजी को अनुभव हुआ , जो कि बिजली की धारा की भांति सुषुम्ना गुहा से ऊपर की ओर फैलकर , ग्रीवभाग तक वह पहुंच गया और मृत्यु का आभाष गुरुजी को होने लगा , आसन्न मृत्यु के अनुभव के शीघ्र बाद ही दिव्य ज्योतिर्मय चकाचौंध करने वाले उन्हें प्रकाश के दर्शन हुए तथा वे तब शारीरीक संवेदना शून्य व शक्तिहीन होकर भूमि पर गिर पड़े।

4. गुरुजी का शरीर काष्ठवत निर्जीव जैसा हो गया किन्तु उनकी चेतनाशक्ति अपनी चरम सजगता पर थी। आत्म अनुभूति की उच्चतम श्रेणी तक गुरुजी की चेतना तब पहुंच गई।
5. गुरुजी ने स्वयं को अपरिमित उज्ज्वल आभायुक्त प्रकाश से घिरे पाये-मानो सहस्त्र सूर्य उनके चारों ओर दैदीप्यमान हों। यहां सम्पूर्ण एकत्व था। यहां वे जाने कि ईश्वर सभी में है,तथा ईश्वर में सभी है।
6. इस परमानन्द में परम चेतनता की अवस्था में वे लगभग 4 घण्टे (सन 1939 का अंतिम चरण में) तक रहे,कोई चिंता उन्हें उद्विन नहीं कर रही थी। गुरुजी देखे की वे दिव्य प्रकाश मंडल द्वारा सुरक्षित थे। शुद्ध मस्तिष्क तथा सदैव इस लोकोत्तर ज्योति में वे(तब से) डूबे रहे,तथा उस रात्रि का वह अनुभव उन्हें आज भी (लौकिक शरीर में रहते यह लिखा गया है,आज भी वे अलौकिक शरीर से हममें हमारे बीच सदैव है जो अभिवचन् है)उनके समस्त शरीर में व्याप्त है।
।।दिव्याम्बु निमज्जन से।।

<u>तेलहारा में हुई कुछ विशेष घटनाये जानकारी</u> हेतु कृपया दी जा रही है:-

1. कुलकर्णी महाशय जो लगभग 82 वर्ष के है ,गुरुजी से दीक्षित भी नहीं है , ने बताये की जब वो लगभग 10-12 वर्ष के थे , तो उन्हें शाम होते ही सुबह तक लगातार दस्त होने लगता था , खून भी जाता था ,कई बार वही घण्टो पड़े रहते थे , ऐसा कष्टकारक असाध्य जैसा रोग उन्हें हो गया था। सारे विशेषज्ञो से इलाज कराने पर भी वो जब ठीक नही हो सके तो उनके पिताजी लगभग मरणासन्न अवस्था में गुरूजी के पास उन्हें लाकर बोले की अब आपका ही आसरा है , हम आपको ठीक से जानते भी नही है , आप इसे ठीक कर दीजिये। गुरूजी 5 मिनट तक चुप रहे , फिर बोले 'ठीक' है।कुलकर्णी जी का कहना था ,उन्होंने ठीक कह दिया तो कोई चिंता की बात नही।अगर वे नही बोल दे तो उसे ब्रम्हा भी बचा नही सकते। वे भाव विभोर होकर शुरू से अश्रुपात करते हुए श्री गुरुजी की जीवनदायी कृपा हेतु आभार व्यक्त नही कर पा रहे थे,अपने भगवान जीवनदाता गुरुजी के ऊपर।
उनके अनुसार पहले माह में 25%दूसरे माह में 50%और तीसरे माह में उनका विकटरोग पूर्णतः ठीक हो गया।श्रीगुरूजी को उनके पिताजी बहुत कुछ देना चाहे

तो उन्होंने सिर्फ एक रुपये लिए और सोने के अंगूठी को जिसे उनके पिताजी गुरुजी हेतु लाये थे, उस बच्चे (कुलकर्णी जी) को पहना दिए। और गुरूजी कुलकर्णी जी को (अपना) पहला पुत्र बना लिए।ऐसा कुलकर्णी जी का कहना था।वो बताये माँ जी तो पूरी माँ जी ही थी।

2. आदित्य भवन के मालिक पाड़िया जी का कहना था,हम छोटे थे गुरूजी को वीणा बजाते हुए जब देखते तो वे लाल रंग के दिव्य ,एकदम तन्मय,भाव मग्न अलग ही व्यक्ति लगते थे। प्रातः 5 बजे जब उनके द्वारा वीणा बजाया जाता था। लेकिन कभी भी किसी के द्वारा आपत्ति नही की गई , क्योकि सबको इससे मधुर आनन्द प्राप्त होता था।

3. जिस घर में गुरूजी रहते थे ,वहाँ के मालिक के द्वारा मकान का नाम वासुदेव या सतगुरु निवास रखेंगे ऐसा कहा गया है। एक मुस्लिम सज्जन करामत शाह जी गुरूजी का कमरा, खिड़की का वह स्थान जहाँ से गुरूजी मरीजो से बात करते थे , ,दवाखाना,आदि सब प्रकार की गुरूजी से सम्बंधित सभी गुरु भाई बहनो को बता रहे थे, दिखा रहे थे। जहां पर विठ्ठलभगवान और गुरूजी सशरीर साथ में स्नान किये उस स्थान को हम सभी प्रायः अमित सौभाग्य से देख सके। सेठ हनुमानदासमल जी के निवास स्थान में गुरूजी कहां कहां पर प्रायः बैठते ,रुकते थे उन स्थानों को सभी गुरुभाई बहन को, उनके परिवार वालों के द्वारा बताया दिखाया गया। नाश्ता चाय से सत्कार किया गया।

4. हम चार लोग दुर्ग भिलाई से चारचक्के में 3•10 •16 को रात्रि 9.30-10.00 बजे तेलहारा पहुँचे। पहुँचने के लगभग 1–2 घण्टे पहले चार पाँच दिनों से लगातार हो रही बारिश बन्द हो गई थी। जगह न होने से कार्यक्रम स्थल पर पंडाल बाहर लगाना था। उन लोगों ने पूछा क्या करे, गुरूजी के भरोसे बोला गया ,पंडाल बाहर ही लगाइये कार्यक्रम को कुछ नही होगा। 4•10•16 रात्रि में फिर एक दो घण्टे बारिश होने पर वो घबरा गए , हम लोगों द्वारा बोला गया वो हमारे भरोसे की परीक्षा ले रहे है, आसपास के क्षेत्रो में भरपूर बारिश होने के पश्चात 5,6,7,अक्टूबर को कार्यक्रमों के तिथियों में स्थल पर बारिश न होने से , वहाँ के सभी लोगों को आश्चर्य जैसे हुआ, जबकि उन दिनों कुछ किलोमीटर के परिधि में चारों तरफ बारिश झड़ी जैसे हो ही रही थी और 8 तारीख से पुनः वर्षा हमें मार्ग में जायलो से आते आते लगभग रास्ते भर मिला, जिससे हम लोग लगभग 2 –3 घण्टे दुर्ग, भिलाई लेट से पहुँचे। तेलहारा के 35–40 लोग गुरुजी के इस कार्यक्रम से प्रभावित हुए है , कुछ

लोग गुरूजी को ईष्ट जैसा बना लिए है , 3–4 लोगो के पुरानी बीमारी उनकी कृपा से ठीक हो रही है, जो लोग चल फिर नही पा रहे थे।

5. वहां के लोगों ने बाहर से आये हुए गुरुभाई बहनो को भारतीय संस्कृति अनुसार उन तीन दिनों में सबको बिठाकर भोजन कराये। कुछ तेलहारा वासी तथा दो मुस्लिम सज्जन के साथ एवं गुरु परिवार से रॉय भैय्या , ऊधो भैय्या,वीरेंद्र भाई जैसे वरिष्ठ गुरु भाइयो के साथ गुरूजी के सम्बन्ध में संगोष्ठी हुई है। अनघा दीदी का भक्तिसंगीत श्रवणीय रहा।

6. वारी में जहाँ गुरूजी साधना किये थे और तेलहारा में बस्ती के बाहर 15 वी शताब्दी के शंकर मंदिर में गुरूजी कई घण्टे बैठा करते थे , कुछ गुरु भाई बहन को उन स्थलों का दर्शन लाभ हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का विडिओग्राफी की गई।

चूकि वहां उत्तम भवन की होटल की सुविधा ही नहीं है अतः कुछ असुविधा का सामना करते हुए कार्यक्रम गुरूजी के अशेष कृपा से उत्तम रूप से संम्पन्न हुआ। सोचने की बात यह है आज के समय से लगभग 50 - 60 साल पहले से गुरूजी वहां लगभग 20 वर्ष तक वहां निवासरत रहे ,स्वाभाविक है सुविधाओं का अभाव और भी रहा होगा। चन्दा दीदी का कार्यक्रम स्थल की सुंदरता बढ़ाने एवं विभिन्न कार्यो में विशेष योगदान रहा। रॉय भैय्या , गुरु प्रसाद भैय्या , राजू भाई और कई गुरुभाइयों ने तेलहारा वासियो को गुरूजी के बारे में कम शब्दों में अच्छे ढंग से बताये। मंच संचालन भाई योगेश शर्मा जी एवं स्टेज व्यवस्था का कार्य भाई संजय गोस्वामी जी तथा चंदा दीदी के द्वारा की गई। समाचार पत्र में कार्यक्रम के बारे में 7 तारीख को अच्छे विवरण के साथ बताया गया है। शेष शुभ ही शुभ।

जय गुरूजी आप जाने।आपका काम जाने।जय जय जय गुरुजी।

1. सत्संग-सत माने आत्मा ,दिव्य शक्ति। उस ओर व्यक्ति झुकता है , तब उसका भाव उस ओर झुकता है।

2. स्वालम्बी-अपने पर जो,आप है। आत्मा है, उस पर अवलम्बन रहना चाहिए।

3. अद्भुत रस-ब्रम्हरंध्र में प्राण स्थापित होने पर सारा ब्रम्हांड ज्योति से भर जाना।जिसको वर्णन नहीं कर सकते।

4. समर्थ-वो जैसा सोचता है वैसा होता है , जैसा बोलता है वैसा होता है।उसका सोचना काफी है।कर्तुम अकुर्तुम अन्यथा कर्तुम ससक्तः। आत्मा की शक्ति को पहचानने,प्राप्त करने से हम समर्थ हो सकते है।

5. स्वर्णसन्धि-मनुष्य का जन्म स्वर्णसन्धि है , इसे नहीं गंवाना चाहिए।जीवन्मुक्त होने के लिए यह जन्म मिला है।नाना योनियों में ,अत्यंज,अंडज आदि में भटकते हुए हजारों साल बाद,कभी मानव शरीर मिलता है।
6. देही-इस देह को धारण करने वाला याने आत्मा जो परम है।
7. वासुदेव-सारा जगत जिस सत्ता के अंतर्गत है ,जो सत है। वही वासुदेव है। सत्ता =वासुदेव,सत=वासुदेव।वासुदेव ही प्रकृति है, प्रकृति-विराट रूप ईश्वर का। इसलिए जो कार्य होते है प्रकृति ही करती है। (प्रकृति की क्रिया का नाम धर्म है)
8. स्वधर्म-स्व माने आत्मा , आत्मोत्थान के लिए जो प्रक्रिया चाहिए , वो आपको (गुरुजी से) मिली है।
9. चंगा-मलरहित, मैं यहां नहीं है। अपने से मैं यहां नहीं है।
10.ब्राम्हण-नवगुण सम्पन्न व्यक्ति। ऋजु, तपस्वी, संतुष्टः, दाता, ज्ञानी, जितेंद्रिय, क्षमा, शीलो, दयालुश्च।
11. शिष्य-ये संकल्प होना चाहिए , मर जायेंगे लेकिन छोड़ेंगे (सतगुरु आदेश में निमग्न शायद) नहीं, तब वो चेला, चेला शिष्य है। वरना वो ठग है।
12. एकनिष्ठता-मनसा, वाचा, कर्मणा। गुरु और ब्रम्ह में एकात्मकता विकसित होना ही एकनिष्ठता है।
13. दीक्षा-जो सत्य मुझे (तपस्या से, जन्मसिद्ध) मिला वही मैंने दीक्षा के रूप में दिया।आपके पास रहकर , सूझबूझ देकर , आश्वासन देकर। आदेश/दीक्षा से प्राप्त अभ्यास विधि , दिया गया उस प्रकार से बुद्धि में रखकर अभ्यास में लग जाना चाहिए।और किसी प्रकार की चिंता नहीं करना चाहिए। (यही दीक्षा में है)
14. मोक्ष का लक्षण-उसको अंदर ही अच्छा लगता है , अंदर जाकर जो कुछ मिलता है उसे स्वजन परिजन को बताया करता है , कि बड़ा आनन्द आता है और सदा प्रसन्नचित्त रहता है। क्योंकि उसे कोई चिंता नहीं। मोक्ष का यही अर्थ है लक्षण है।जब तक तीसरी आंख नहीं खुलती तब तक मोक्ष नहीं होता।
15. विदेह-माने अंतरमार्ग में उसकी सदैव लौ लग जाना।
16. धर्म-आत्म धर्म, वो है आचरण ,चारित्र्य। सत्यम वद, धर्मम चर। निष्काम कर्म जब पूर्णत्व में आ जाता है तब धर्म बन जाता है।
17. आस्तिक-कई बार मृत्यु केंद्र पार करके। सारा वसुधा मेरा कुटुंब है , ऐसी वृत्ति जब हो जाय। तब तुम आस्तिक हो। वरना ठग हो।

18. सम्यक जीवन-एक ही मार्ग/आत्ममार्ग है, तुम्हारे जीवन में साक्षी चाहिए (स्वयं को प्रत्येक कार्य घटना परिस्थिति को ,निरपेक्ष/आत्मा, होकर देखना,शायद)। चरित्र में भी साक्षी चाहिए। आत्मा जो समाधिस्थ हो जाती है, ये सम्यक जीवन है।
19. मन-आत्मा और अनात्मा के बीच रहने वाली विलक्षण वस्तु है। मन ही जगत है।सारे अनर्थों की उत्पत्ति मन से ही होती है।दृढ़ता से लड़ने पर मन की शक्ति घटती है और एक न दिन वह अवश्य विजयी होता है।
20. बीज-हमने आत्म ज्योति का बीज बोया है। जो पूर्ण है। ज्योति इधर से आयी उधर गयी, ये स्थिति नहीं है। आपको उसमें/ज्योति में, रहना होगा।
21. गुरुजी-गुरुजी को याद करो और कार्य आरंभ कर दो। गुरुजी तुम्हारे रक्षक है,सेवक है, सारा सार गुरुजी शब्द में छुपा है। सब कुछ गुरुजी पर छोड़ दो।एक निष्ठा,खाली स्मरण करना है।
22. मुक्ति-आपकी बुद्धि निर्मल बनी रहे औरों का कार्य होता रहे। आत्मानन्द प्राप्त हो। बस यही मुक्ति है।
23. दुःख-दुःख पैदा करने वाले तत्व लोभ , मोह, तृष्णा आदि भीतर विद्यमान है। बाहर से कुछ वस्तुएं देकर मिटाना चाहते है ,क्या यह सम्भव हो पायेगा ?दुःख नहीं जाता जब तक भीतर दुःख पैदा करने वाले तत्वों का अंत नहीं होता। मिथ्या दृष्टिकोण मिटे बिना दुःख मिट नहीं सकता। जिसे दुःख कम करना है उसे मोह पर ध्यान देना/मोहरहित शायद होगा।
24. वर्कर-फल देने वाला वो /आत्मा/ गुरुजी है, तो कार्य से हम वर्कर है , वो स्वयं सफल विफल नहीं है। जिसका काम है, सफलता विफलता उसकी है। हम तो निमित्त है,वो ही कर्ता धर्ता है।
25. सत्वशुद्धि-पंच, क्लेश-अविद्या, अस्मिता, राग-द्वेष,
अभिनिवेश.मृत्यु भय। ये सब शुद्ध हो जाते है। मृत्यु भय चला जाता है। (सत्व नाम बुद्धि का हैं) इसी को सत्व शुद्धि कहते है। (तब ये ज्योति आयगी , जायगी। आयगी, जायगी)
26. मन का केंद्र-आज्ञा चक्र है , बुद्धि को मन को चित्त कहा गया है। सारा संसार हमारी बुद्धि में है। ये भेदन हो जाने पर शुद्धि हो जाती है।
27. पंडित-जो जीते जी मर चुका हो, पंच तत्वों का बोध हो, ज्ञान हो।

28. निर्जरा-ह्रदय माने मन ,मन में जितनी हमारी वासनाएँ है , अनेक जन्मों के संस्कार है। ये मृत्यु केंद्र के बार बार भेदन से , जो विधाती कर्म है जो बार बार जन्म लेना पड़ता है। ये सब जलते जाते है। यही निर्जरा है।
29. मूल स्थिति में चले जाना-साधक स्वल्पकाल में ही अपने मूल स्थिति में चला जाता है। वो मन्त्र है-दासोअहम।
30. संस्कार का न बनना-बुद्धि आत्मा के साथ संलग्न है (सब आत्मा है, आत्मस्वरूप है) तो मन पर दृश्य या ध्वनि का कोई परिणाम न हुआ या संस्कार बने नहीं।
31. सजीव देवालय-देह रूपी सजीव देवालय में आत्मा ही देव है। आत्मा जो दिखती नहीं, वह निरंजन है, वह तुम ही हो।
32. व्यवहार-हानि, लाभ, सिद्धि, असिद्धि, बराबर करके कार्य करो। यही व्यवहार है।मन बुद्धि चित्त से आत्मा में बने रहना है ,मन वचन कर्म से व्यवहार करना ही व्यवहार है।व्यवहार करने आना चाहिए , आत्मस्थ रहकर। आत्मा रूपी सूर्य से दूर रहकर, व्यवहार कुशलता नहीं आ सकती।
33. समाधि-बुद्धि जो समाहित हो गई है आत्मा में , तब सम्यक जीवन शुरू होता है।ये कोई जीवन है, जिसमें पतन के सिवा कुछ भी नहीं है।
35. आत्म निवेदनं-आत्मा को अपने आपको सौप देना। ये मामूली बात है ? आप जिसे शरण कहते है,ये शरण शरण नहीं, आत्म निवेदनं-ये है, शरण।
36. विश्व-माने श्वास लेने वाले प्राणी को ही ,ये लोक को ही विश्व लोक कहा। जब तक ये श्वास आपके कंट्रोल में नहीं आता , अभ्यास के द्वारा।तब तक वो दरवाजा खुलती नहीं। जब तक आप मुक्त नहीं।
37. ईश्वर-कोई व्यक्ति,वस्तु पदार्थ नहीं है।वह तो है अखण्ड क्रिया ,जो कि प्रकृति में अबाध गति से सतत चल रही है।ये है निरन्तर चलने वाली ,उत्पत्ति,स्थिति एवं लय की क्रिया जो अनादि और अनन्त है।
38. परमात्मा-इस देह में वो परमपुरुष है , उसे साक्षी/उपदृष्टा , अनुमन्ता,भर्ता, भोक्ता,महेश्वर,परमात्मा कहा,जिनका ये ऐसे नाम है।तो परमात्मा माने आपमें जो है, वो परमात्मा है।वो अच्छे से अपने आपको सब जगह स्थापित किया और विशेष रूप से अपना पूर्ण रूप से आपमें। आपमें अपने आप को स्थापित किया और फिर से अलग हो करके, सबका सबको धारण किया। इससे वो विश्वपति हो गया। जब तक आप विश्वपति को प्राप्त नहीं होते , तब तक आपका शोक ,मोह,भय जा ही नहीं सकता।

39. पांडुरंग-माने रूप और नाम जब एक हो जाते है। इन्द्रियाँ रूपी आवरण जो है गिर जाता है। बाह्य आकर्षण जो है जल जाता है और जलने के बाद दीवाल नहीं उठती, पर्दा नहीं उठता, सब भस्म हो जाता है। भाव शुद्ध हो जाता है। ध्यानी माने रूप हो जाना। भाव शुद्ध हो जाता है। ध्यानी मनी ,जब पांडुरंग हो जाता है , तब समाधि,समाधि है।
(खाली जीने के लिए खाना है , अभ्यास करने के लिए ताकि विग्रह पैदा न हो , विचलित न हो, अपनी जगह से।थोड़ा बहुत मिला, खाये पीये और लग गए अभ्यास में)
।।श्रीगुरुजी।।

1– गुरुभाई संजीव भटजीवाले , बड़ौदा से इंदौर अपनी कार से आ रहे थे। कार में अमेरिका से आये एक डॉक्टर के साथ उनका परिवार भी था , माचलिया घाट पर कार का संतुलन बिगड़ गया , घाट पर वह दाएं बाएं लहराने लगी , गाड़ी की स्पीड भी बढ़ गई , सभी प्रकार से कार को नियंत्रित कर पाने में असफल रहने पर-तब वे अपने हाथ को स्टेयरिंग से हटा लिए पैर को ब्रेक से हटा लिए भावी खतरे को देखते जोर से चिल्लाये-गुरुजी और कार अचानक खड़ी हो गई,देखे तो सिर्फ 6 इंच की दूरी पर खाई के पहले, कार केवल रेत के ऊपर घिसटकर खड़ी थी।

2 –गुरुभाई सुरेश फड़तरे(वर्धा) , के खेत पर काम करने वाले श्रमिक को एक जहरीले सर्प ने काट दिया , योग्य डॉक्टरों ने प्राण बचाने में असमर्थता जता दिये। गुरुभाई सुरेश जी गुरुजो के फोटो के सामने एक कटोरी जल रखकर , प्राण रक्षा हेतु गुरुजी से प्रार्थना करने लगे। कटोरी के जल को अस्पताल में भर्ती उस श्रमिक को ले जाकर भरोसा से पिला दिये। गुरुजी को भरोसे की रक्षा करते हुए , उस श्रमिक को जीवनदान देना पड़ा, वे जी उठे । जयगुरुजी, जयजयगुरुजी,जयहो।
।।दिव्य सद्गुरु लीलाएं से।।
संक्षिप्त लिखने के प्रयास में हुई संभावित त्रुटियों हेतु क्षमा दान की अपेक्षा है,क्षमा,प्रणाम।

-अपने स्वरूप को भूल जाने के कारण हम निर्बल हो गए है , अपने आपको पहचानकर अपनी आत्मशक्ति को विकसित कर हम पुनः समर्थ हो सकते है। इच्छा कम करो काम क्रोध लोभ सब भाग जायेंगे। संसार में रहने और संसार के कार्य करने में कोई दोष नही, केवल दासी के समान मन भाव रहना चाहिए, सब कार्य करती है किसी को अपना नहीं कहती है। अलिप्त भाव से करना चाहिए। काम करने आवश्यक हो करना, किन्तु मन आत्माराम में लगा रहे। यहां विषयों का प्रवेश नहीं हो सकता । कर्म तो प्रकृति करती है, किन्तु मैं करता हूँ भाव आ गया तो बन्ध गया।
----जीव ब्रम्ह है समझना। संसार से मन हटाकर बलस्थ होना , वैराग्य है। उपजीविका के पीछे फिर रहे है , यही भोग है। देह भाव गये बिना आत्मानन्द प्राप्त नहीं हो सकता, परावलम्बी का अर्थ है देह रुचि। मूर्ति में ईश्वरत्व का आरोप करते हो तो देह में क्यों नहीं करते हो , इसे डिवाइन (ज्योतिर्मय) करने का (सदा) प्रयत्न करो। चिंताओं और दुखों का रुक जाना ही उन पर निर्भर रहने का सच्चा स्वरूप है। मनुष्य को स्वालम्बी (सतत निष्कामकर्म आत्मा में रहकर)बनकर रहना चाहिए।
----जीवनकाल में अंतिम सांस तक इसको नहीं छोड़े क्योंकि यह आत्मदर्शन है। आपको स्वयं साधना करनी होगी , अनुष्ठान करना होगा ,तब तक वो फल नहीं मिलता। मनुष्य कृतार्थ तभी होता है , जब सत्पुरुष के बताये हुए मार्ग का अनुसरण करके और उस तरह से अभ्यास रत होता है। मिथ्या दृष्टिकोण जब तक नहीं मिटता तब तक दुःख मिट पाना सम्भव नहीं।
प्रचुर सुख सुविधा , धन वैभव और आधिपत्य होते हुए भी मनुष्य का दुःख नही जाता, क्योंकि भीतर के दुःख पैदा करने वाले तत्वों का अंत नहीं होता। आशीष को धारण करने की माने रखने की और उपयोग करने की क्षमता होनी चाहिए। जब तक बुद्धि में आत्मिक प्रभाव नहीं आता तब तक परिवर्तन नही हो सकता।
जब आप सतगुरु की बतलाई पद्धति से ध्यान कर स्थिरता को प्राप्त कर लेंगे, (तब) भोग कब आते है कब जाते है पता नहीं चलता। गुरुदिश मार्ग पर चलने से क्लेश अपने आप मिट सकते है, आप समर्थ हो सकते है। गुरुदिश मार्ग से आप ऐसी ताकत प्राप्त कर सकते है, की आप डेस्टिनी को बदल सकते है ,इसी जन्म में बदल सकते है। आप ही अपने भाग्य का निर्माता और आप ही उसमें परिवर्तन लाने में सक्षम है।
ये ये चाहिए मुझे सामाजिक कार्य के लिए , हाँ भाई हो जायेगा, यही ब्लेसिंग है। ये ही सत्ता है,ये ही बुद्धि आत्मसात हो जाती है ,तब जो आशीष होता है , उससे अपने आप कार्य सिद्ध होते जाते है।।।श्री गुरुजी।।

मैं- लगभग35-40 वर्षों से,आध्यात्म से जुड़ा हुआ , दुर्ग भिलाई से ,एक छोटा साधक मात्र हूँ। पिछले लगभग दस दिनों पूर्व दिनांक 3 •5•21 को,करोना में मेरी पत्नि की हालत बिगड़ते देख मेरे बड़े भाई जयगुरूजी (श्री जयप्रकाश वर्माजी, दुर्ग, भिलाई) श्रीगुरूजी मुंगेली वाले के एक शिष्य से निवेदन करने के लिए मुझे बोले ,मैं जय के आदेश पर पूरी श्रद्धाभक्ति से श्रीगुरूजी मुंगेली वाले के चित्र को देखते हुए मैं प्रार्थना किया और मेरी प्रार्थना श्रीगुरूजी तक पहुंचाने के लिए,उस शिष्य से निवेदन किया।

उन्होंने मेरी पत्नि की हालत सुनकर श्रीगुरूजी मुंगेली वाले के चरणों में विनमर् निवेदन किया और मुझे तुरंत हास्पिटल में भर्ती करने कहा। मैं श्री गुरुजी के उन शिष्य के कहने पर तुरंत भर्ती कराया। इस बीच पत्नि के स्वास्थ्य में काफी उतार चढ़ाव आते रहा। मेरी पत्नि बोली अब मुझे शुगर लेकर ही जाएगा। मैं डरा पुनः मुंगेली वाले गुरुजी के शिष्य से इस बाबत भी निवेदन किया। वे पूर्ण आत्मविश्वासपूर्वक बोले- गुरूजी ने आपकी प्रार्थना स्वीकार कर लिए है। आज,आप हर दो घंटे में अपने गुरुजी व हमारे गुरुजी को ज्योति रूप में मिलाकर एक देखकर, श्री गुरुजी से प्रार्थना करते रहिए , मैंने वैसा ही किया। एक सप्ताह बाद पत्नि के स्वास्थ्य में पूर्ण सुधार आना शुरू हुआ। मैं कृतज्ञ भाव से संध्या ध्यान में बैठा। जब तक मैं सूक्ष्म में अपने गुरु ,ईष्ट,परमात्मा और श्रीगुरूजी मुंगेली वाले का ध्यान किया। बहुत आश्चर्य की बात है कि श्रीगुरूजी मुंगेली वाले का वही चित्र मेरे ध्यान में मूर्तरूप में आ गया जिस चित्र के सामने मैंने प्रार्थना की थी।

सूक्ष्म में गुरु,ईष्ट, परमात्मा आते जाते रहे आभास हुआ सब एक ही है श्रीगुरूजी भी मैं ही हूं लेकिन श्रीगुरूजी का चित्र भी था जो आश्चर्य की बात रही। (जिस चित्र रूप में गुरुजी दर्शन दीये है,उसे मैं भेज दिया हूँ)

मैं पहली बार चित्र देखा था। परमात्मा के ज्योति बिन्दु के साथ पूरे एक घंटे तक ध्यान में। उत्तर मिल रहा है- मैं ही तो श्रीगुरूजी मुंगेली वाले हूँ। मुझे लगा श्रीगुरूजी ने मेरी पत्नि को बचा लिये है। अपने 4-5 घनिष्ट मित्रों मुंगेली वाले श्री गुरुजी से प्राप्त कृपा के बारे में श्रद्धा पूर्वक बता चुका हूं। मैं अत्यंत कृतज्ञ हूं श्रीगुरूजी मुंगेली वाले के पावन चरणों में विनमर् प्रणाम , निवेदन। इसी स्थिति में

अपने नातिन के जीवन के लिए मैं जयगुरूजी के साथ उनके एक शिष्य के घर श्रीगुरूजी मुंगेली वाले के पास प्रार्थना करने बोलने गये।

जब डाक्टरों व ज्योतिषी लोगों ने पांच साल पूर्ण करना कठिन बताया था। मैं उसकी लगातार अस्वस्थता से परेशान हो गया था निराश भी था। श्रीगुरूजी के उस शिष्य ने मुंगेली वाले अपने गुरुजी से प्रार्थना की तथा एक उपाय गुरुजी के स्मरण कर करने बोला गया, जिसे मैंने बाद में अपने नातिन के द्वारा वैसा किया भी।
तथा मैं तथा जय भैया ने भी बैठकर उस दिन मुंगेली वाले गुरुजी के शिष्य के यहां श्रीगुरूजी से प्रार्थना किये। श्रीगुरूजी मुंगेली वाले की कृपा से नातिन पांच वर्ष तीन महीने तक स्वस्थ हैं। । एक छोटा साधक मात्र।

।।।श्री गुरुजी।।

माने तब एस्ट्रल बॉडी तब प्राप्त होता है। वो बॉडी माने उसको इलुमिनेटिंग बॉडी कहा और उसकी बुद्धि जो है इतनी प्रखर हो जाती है कि भूत , भविष्य आपका ज्ञान हो जाता है और वो काल है, सुषुम्ना कालं भवति । ये लक्षण पैदा होते है,उसमें,लक्षण माने अभी जो बताया है , अंदर से ऐसा दिखता है , ऐसा दिखता है , ऐसा ऐसा और ये शरीर जो है, मृतवत हो जाता है और ये हाथ पैर ठंडी हो जाती है फिर धीरे धीरे आइस बर्फ जम गया वहां ,मालूम होता है । ये सब मालूम होता है जैसे आइस सरीखे। शक्ति फिर धीरे धीरे ऊपर आता है और ये हाथ पैर जड़ हो जाते है फिर आप हिला नहीं सकते उसको । बोध है, ज्ञान है, खिसक रही है वो भी बोध है, योगबल है जो , ये योग है ऐसा । ये सब मालूम है लेकिन अभी तो कुछ नहीं है,ऐसे करते करते फिर सुषुम्ना माने मेरुदंड में घुस जाती है और घुसकर धीरे धीरे ऊपर आती है और जैसे जैसे ऊपर आती है जहां मेरुदंड में आया , ऐसा मालूम पड़े , सारा शरीर पत्थर हो गया। ऐसा एक बिल्कुल गोला बन गया , अब मरे, बिल्कुल मैटर जैसा एक मॉलीक्यूल जो होता है तब माने मृत होता चला जाता है इसी प्रकार से उसका अनुभव होता है , बस अब हम मरे। मैं अपना अनुभव बताता हूँ ,बिल्कुल सत्य है ये सब, मरता नहीं है , ता माने आत्मा, मर माने शरीर, ये है, लेकिन मरता नहीं, ये अनुभव है। किताब में दिया है, सबके पास है। सब बिल्कुल सत्य है, एक एक बात सत्य है, बैठे है हम । ये सत्य है ये लक्षण तब होते है , ये बाहर के लक्षण है और ये भीतर के लक्षण है। माने लक्षण में दो चीज पाये जाते है कि दुःख - अब मरा,जो

बताया न अतीत , न अनागत , तो हेतु और परिणाम माने देह की अवस्था भीतर है,देखा जाता है क्या मिलता है ये लक्षण होते है। माने ये शिथिल होते चला जाता है, लाईसी बन जाता है और बिल्कुल जड़ हो जाता है , दुनिया कहेगी डॉक्टर कहेगा मर गया, लेकिन मरा नहीं। अब ये क्या हो गई , देहावस्था हो गया और एक है रूप स्थिति, माने ज्योति। वो ज्योति इतना प्रचंड इतना प्रखर होता है , अखण्ड मंडलाकारं, इसका हमें बोध है - ये सत्य है। क्या तत्व निरूपण है हमारी पुस्तक में लिखा है आप देख लिजिये ,वो झूठ नहीं है , मैं कभी झूठ नहीं बोलता , सपने में भी नहीं बोलता।

व्यापतं येन चराचरम्, वही तब ये लाइट इतना बढ़ जाता है,सारा यूनिवर्स मस्त लाइट ही लाइट है,तत्पदं दर्शितं तस्मै श्री गुरुवे नमः।

सर्वे विश्वनः सन्तु,सर्वे संतु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्ति मा कश्चिद दुःख भाग भवेत।ॐ स्वस्ति नो इन्द्रों .....।ये सब दिव्य लोग है, ये आपकी रक्षा करें, आपको इंस्टीयूसन माने ऐसा करने से ऐसा है, उपदेश देवे समय समय पर, समय पर आपकी रक्षा करें और आपसे बातचीत करें और आपकी रक्षा और आपको वो सम्हाले। ये जो वैदिक आशीर्वाद मंत्र है ये और क्या।

ॐ ....ब्रम्ह शान्तिः सर्व ब्रम्ह शान्तिः....शांति रेव शांतिः,शांति भी शांति, शांत हो,इस प्रकार,सामा,सामा माने दो, द्वंद मेघ पानी बरसता है पृथ्वी उसको ग्रहण करती है, तब बीज अंकुरित होते है माने दो जहां मिलते है तीसरी की उत्पत्ति होती है,ये भी शांति माने विघ्न भी उत्पन्न न हो, दो के मिलने पर भी विघ्न उत्पन्न न हो ।शांतिरेव शान्तिः,सामा,इस तरह से पृथ्वी की मिट्टी को विघ्न कहा गया ये जो सा हो गया और मा, मेघ हो गई। बारिश वो बरसता है और जब पृथ्वी ग्रहण करती है नाना प्रकार के, माने जो बीज पड़े हुए है, शांत होते है। सामा माने द्वंद, ये गीता में है, सामा शान्तिः रेव शान्तिः,माने ये सब विघ्न ज्ञान रूपी अग्नि से दूर हो जाय।ॐ शान्तिः शान्तिः।

।।श्री गुरुजी।।

।कैसेट से सुनकर लिखा गया है,त्रुटियां सम्भावित है, क्षमा, प्रणाम।

परम आदरणीय गुरूजी के साथ एवं गुरूजी की सेवा में - आदरणीय जीवन कुमार जैन साहब के गुजरे सुनहरे पल

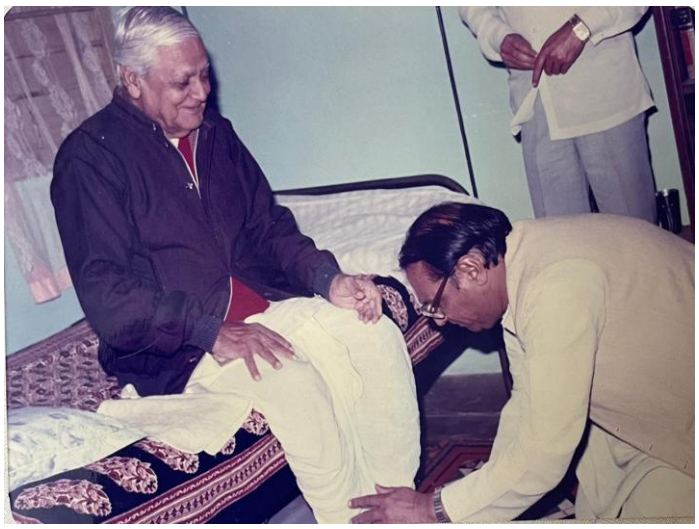

करूणामयी मूर्ति पूज्य भगवान वासुदेव जी

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत् - शत् नमन।

1987 जुलाई 23 बिलासपुर में गुरू पर्व का आयोजन था। गोंदिया के भाई राजेन्द्र कुमार जी द्वारा परम आदरणीय सद्गुरू श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी जी से हमारे परिवार के सभी सदस्यों को दीक्षा लेने और गुरू पर्व में शामिल होने का न्यौता मिला। 22 जुलाई 87 को दोपहर में गुरू जी से दीक्षा हेतु निवेदन के लिये हम सभी डॉ. गिरीश पांडे के घर पहुंचे जहां गुरू जी विराजमान थे। मन में उनके दर्शनों को लेकर बड़ी उत्सुकता और कौतूहल था और जब साक्षात्कार हुआ तो दिव्यता की पराकाष्ठा पर स्थित इस दिव्य आत्मा को देखकर लगा कि हमने अपने मानव जीवन

की सार्थकता को पा लिया है। मन ही मन एक ही प्रार्थना चल रही थी कि यह दिव्य आत्मा हमें स्वीकार कर अपना आशीष हमें दीक्षित करने की स्वीकृति के रूप में दे दें। हमारी विनती स्वीकार होते ही हम धन्य होकर शाम को सपरिवार दीक्षा लेने पहुंचे। उस समय गुरू जी डॉ. परिवार के साथ भोजन कर रहे थे और विनोदमय वार्तालाप चल रहा था। तब मन में एक साध आई कि क्या कभी जीवन में हमें भी ऐसा सामीप्य इस भव्य आत्मा का मिल सकेगा ।

अनर्तमन की यह पुकार गुरूजी तक पहुंच गई और हमें वह सब इतने शीघ्र मिला जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। दीक्षा के तुरंत बाद हमें गुरूजी के साथ बैठकर खाना खाने के अनेकों अवसर डॉ. शिन्दे दम्पत्ति के घर पर भोपाल में मिले। एक बार तो मन में आया कि गुरूजी भोजन करते समय अपनी थाली से कुछ प्रसाद हमें दे दें और कुछ ही देर बाद हमारी सबसे प्रिय मटर की सब्जी 1987 जुलाई 23 बिलासपुर में गुरू पर्व का आयोजन था। गोंदिया के भाई राजेन्द्र कुमार जी द्वारा परम आदरणीय सद्गुरू श्री वासुदेव रामेश्वर तिवारी जी से हमारे परिवार के सभी सदस्यों को दीक्षा लेने और गुरू पर्व में शामिल होने का न्यौता मिला। 22 जुलाई 87 को दोपहर में गुरू जी से दीक्षा हेतु निवेदन के लिये हम सभी डॉ.गिरीश पांडे के घर पहुंचे जहां गुरू जी विराजमान थे। मन में उनके दर्शनों को लेकर बड़ी उत्सुकता और कौतूहल था और जब साक्षात्कार हुआ तो दिव्यता की पराकाष्ठा पर स्थित इस दिव्य आत्मा को देखकर लगा कि हमने अपने मानव जीवन की सार्थकता को पा लिया है। मन ही मन एक ही प्रार्थना चल रही थी कि यह दिव्य आत्मा हमें स्वीकार कर अपना आशीष हमें दीक्षित करने की स्वीकृति के रूप में दे दें। हमारी विनती स्वीकार होते ही हम धन्य होकर शाम को सपरिवार दीक्षा लेने पहुंचे। उस समय गुरू जी डॉ. परिवार के साथ भोजन कर रहे थे और विनोदमय वार्तालाप चल रहा था। तब मन में एक साध आई कि क्या कभी जीवन में हमें भी ऐसा सामीप्य इस भव्य आत्मा का मिल सकेगा।

अनर्तमन की यह पुकार गुरूजी तक पहुंच गई और हमें वह सब इतने शीघ्र मिला जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी। दीक्षा के तुरंत बाद हमें गुरूजी के साथ बैठकर खाना खाने के अनेकों अवसर डॉ. शिन्दे दम्पत्ति के घर पर भोपाल में मिले। एक बार तो मन में आया कि गुरूजी भोजन करते समय अपनी थाली से कुछ प्रसाद हमें दे दें और कुछ ही देर बाद हमारी सबसे प्रिय मटर की सब्जी अपनी कटोरी को हमारी थाली में गुरूजी ने रख दिया। हम गुरूजी के बगल में ही बैठकर खाना खा रहे थे और इस बात से अवाक थे कि पूज्य गुरूजी अन्दर की आवाज को सुन लेते हैं। तब से हम इस बात के लिये काफी सजग और सतर्क रहने लगे कि गुरूजी हमारे अन्तर्मन में क्या चल रहा है.यह सब जानते हैं। यह बात अनेकों बार अनेकों अवसरों पर प्रायः सभी शिष्यों ने अनुभव की है जो गुरूवर का सर्वज्ञ होना प्रमाणित करती है।

परम श्रद्धेय सद्गुरू ने हमें हमारी पत्नी श्रीमती मणी बेटी मीनू और बेटा राजू को दीक्षा देकर अपना अंश बनाकर धन्य कर दिया। हम सभी के जीवन का यह अमूल्य पल दिव्यत्व की पराकाष्ठा पर पहुंचने में सहायक होगाए जिसके लिये हम सभी राजेन्द्र जी के भी ऋणी और कृतज्ञ रहेंगे। 23 जुलाई 87 का पर्व आनन्द मंगल में मनाकर गुरूदेव का आशीष लेकर विदा हुये और गुरूदेव के आदेशानुसार पत्रों द्वारा सम्पर्क स्थापित करते रहे।

23.07.1988 का पर्व बालाघाट में मनाया गया जहां हमें गुरूजी के दर्शन का लाभ मिला। गुरू जी के आदेशानुसार हम उनसे पत्र व्यवहार करते रहेए उनके कार्यक्रम की जानकारी पत्रों से मिलती रही और मार्च 1989में हम उनका आशीष लेने ग्वालियर गये। 1989 वर्षा काल में हम अपनी पत्नी सहित मेडिकल कालेज भोपाल में लगभग 1.30बजे दोपहर में डॉ. सईदा शिन्दे दीदी के घर गये जहां गुरू जी सागर से श्री डी.एस.राय के साथ आये थे। लगभग 2घंटे हम दीदी के क्वार्टर पर सीढ़ियों पर बैठे रहे और हमारी हिम्मत अन्दर जाने की नहीं हुई। करीब 4बजे शाम

को हमने अन्दर जाकर गुरू जी के दर्शन किये। शाम को राय साहब आये और गुरूजी को लेकर सागर जाने लगे।

घनघोर बरसात हो रही थी और एक पुरानी कार से गुरूजी जा रहे थे। तब मन में अनेकों प्रश्न आये। मन में आया कि काश! हम आर्थिक रूप से सम्पन्न होते तो गुरू जी को आज नई कार भेंट करते और यही वह क्षण भी था कि गुरू जी को नई कार देने हेतु मन में संकल्प लिया।

हमने डॉ. सईदा दीदी को अपना संकल्प बताया कि 1000/. रूपये प्रति सक्षम शिष्य से लेकर नये वर्ष में एक सरप्राईज देंगे। दीदी ने समझाया कि परम पूज्य से कुछ भी छिपा नहीं है और वे सब कुछ जानते हैं। पहले भी कार की योजनायें बनी हैं जो सफल नहीं हुईं। अतरू उनकी आज्ञा हमें पहले लेना चाहिये। इसके 2.3 माह बाद जब गुरू जी डॉ. शिन्दे के पास रीवा में थे तब उनसे फोन पर अपनी योजना पर आशीष पाकर अतिशीघ्र इस संकल्प को पूरा करने का लक्ष्य बनाकर हम प्रयासरत हुए।

हमने एवं हमारी पत्नी मणी ने मिलकर अनेकों शिष्यों को सम्पर्क किया। हमें सभी शिष्यों का भरपूर सहयोग मिला तथा बीच बीच में गुरूजी द्वारा सफल होने का आशीष भी मिलता रहा। गुरूजी रीवा से पेन्ड्रा, मुंगेली होकर वर्धा पहुंचकर भोपाल दिसम्बर 1989 में आ गये थे। इस बीच हमारा सतत सम्पर्क गुरूजी से पत्रों द्वारा बना हुआ था और पूज्यवर हमारी सफलता के लिये हमें स्नेहिल आशीष की वर्षा निरंतर करते रहे। लगभग 100 से उपर शिष्यों द्वारा हमें 1000/. रूपये प्रति शिष्य राशि मिली और अंत में वह दिन भी आ गया जब 1990 जनवरी माह में हम डॉ. सईदा दीदी के साथ गुरूजी का आशीष लेकर कार लेने गये तथा उसी दिन से हम गुरू जी की कार के ड्रायवर बनने का सौभाग्य पाकर हो गये। अपने शिष्य का संकल्प पूरा कराने में जो भूमिका परम पूज्य की रही है वह वर्णन से परे है। निराशा मुझ पर हावी न हो इसके लिये गुरूजी से अनेकों पत्र मुंगेली. वर्धा. रीवा और टेलीफोन द्वारा भी हमें सफल होने का आशीष मिलता रहा। सहयोग राशि भेजते

समय जो उद्गार हमें शिष्यों के पढ़ने को मिले उनसे गुरूदेव की विशालता और महानता का पता चलता है। अपने को सौभाग्यशाली मानने का गौरव भी शिष्यों ने माना। श्री झा साहब दुर्ग वालों ने लिखा था कि आपका पत्र आया तो देखा कि मेरे पास मात्र 1000/. रूपये हैं उसे भेजकर मैं ; झा जी अपने को धन्य मान रहा हूं।

यह भी बताना आवश्यक है कि हमें गुरू परिवार के शिष्यों और उनकी आर्थिक क्षमताओं का ज्ञान नहीं था। अतरू सक्षम शिष्यों से 1000/. रूपये प्रति शिष्य लेने का भाव जो मन में आया था वह भी पूज्य गुरूवर की ही देन थी क्योंकि पूर्व में जब भी जिस किसी ने यह योजना बनाई थी वह सफल नहीं हुई थी। उस समय किसी शिष्य द्वारा 1000/. रूपये पूज्य गुरूजी के पास कार खरीदी के लिये जमा किये गये थे। इस योजना को कार्य रूप जब हम दे रहे थे और प्रति शिष्य 1000/. रूपये हमारे पास जमा करने आ रहा था , उस समय जब गुरूजी ने भी हमें अपने किसी तरह इन्दौर लौटकर पूज्य गुरूजी के पास गये। दूर से ही उन्होंने देखकर आवाज लगाई तीर्थयात्री आ गये हैं भाऊ ;श्री भटजी वाले साहब को गुरूजी- भाऊ बोलते थे -आईये और हमसे बोले -सारी रात आप लोगों ने सोने नहीं दिया। पूरा वृतांत गुरूजी का आदेश पाकर हमने घाटी की चढ़ाई चढ़कर पहुंचने वाले थे , तभी यह घटना घटी थी। हम सभी इस बात को लेकर कौतुहल में थे कि इस पूरे रास्ते में दूर दूर तक कोई भी अन्य गिट्टी का ढेर हम लोगों को नजर नहीं आ रहा था। कार को खाई में गिरने से बचाने के लिये यह गिट्टी का ढेर हम सभी की जीवन रक्षा के लिये कवच बन गया था। हम सभी हतप्रभ से कार से बाहर आये और हम सभी की प्राण रक्षा की बात सोचकर सभी एक दूसरे की ओर किंकर्तव्यविमूढ़ भाव लिये निहार रहे थे।

गुरू जी का जन्म दिवस 1987 में बिलासपुर के बाद 1988 में बालाघाट 1989 में रीवा तथा 1990 में रायपुर में मनाया गया था। 22--23 अगस्त 1990 को मुंगेली पहुंचने का आदेश आगे की यात्राओं पर निकलने के लिये हमें मिला था और हम

अपने पुत्र राजू सहित वहां गये थे। हमें पत्र द्वारा निरंतर पूज्य गुरू जी का आशीष फैक्ट्री संचालन हेतु भी मिलता रहा।

1988 - 89 में पूज्य गुरूजी जब इन्दौर में श्री भट्टजी वाले के यहां पर विराजमान थे, हम तथा भाई राजेन्द्र कुमार जी परिवार सहित उनके दर्शनों को गये थे और गुरू जी से इन्दौर के आसपास के जैन तीर्थों के दर्शनों को जाने की आज्ञा मांगी , जिस पर गुरूजी अच्छा कहकर मौन हो गये। थोड़ी दूर पहुंचने पर ही कार खराब हो गई और हम दूसरी कार का प्रबंध करके आगे बढ़े। कार खराब होना इस बात का संकेत था कि उस समय यह यात्रा आवश्यक नहीं थी।

सिद्धवरकूट से निकलकर ऊन सिद्धक्षेत्र जाते समय रास्ते में कार पंचर हो गई और हमारी विडम्बना थी कि हमें पहिया बदलना नहीं आता था। तभी हमारे मुंह से निकला गुरूजी अब क्या करें।

कार रोककर दूसरा पहिया निकाला ओर सोच रहे थे कि क्या करें , तभी एक दुबला पतला 20 - 25 साल का युवक जिसकी पोशाक से वह गांव का प्रतीत होता था , क्योंकि घुटने तक की धोती.बन्डी और कन्धे पर सफेद थैला लटकाये था , आया और बोला. बाबू जी क्या हो गया. लाईये मैं कार का पहिया बदल देता हूं। हम वैसे भी उलझन में थे क्योंकि हमें यह कार्य नहीं आता था और हमें उस युवक की बात का भरोसा नहीं था कि गांव का यह बालक कुछ मददगार हो सकता है। उस युवक ने हमें परे हटाकर देखते देखते ही कार का पहिया बदल दिया और जाने लगा। मेरे मन में कुछ मेहनताना उसे देने की बात आई तथा हम लोगों ने उसका नाम पूछा - जिसे उसने ‘ विट्ठ्ठल “ बताया और कहां के रहने वाले हैं, पूछने पर ‘ पंढरपुर “ बताया तथा आगे बढ़ने लगा। हम जब तक पैसे निकालते , करीब10 गज दूर जाकर वह ओझल हो गया और हम तथा भाई राजेन्द्र जी के मुंह से निकला कि अरे! यह तो गुरूजी थे। इसी यात्रा में आगे बड़वानी की 5किलोमीटर की चढ़ाई चढ़ते समय कार का ब्रेक फेल होने के साथ हमारी मति भी भ्रष्ट हो गई और घाटी के टेढ़े मेड़े रास्ते पर ब्रेक और क्लच दोनों पर हमारे पैर जमे थे तथा कार पीछे की ओर लुढ़क रही

थी। हम लगातार सभी गुरूजी को याद करते हुए असहाय होकर कार नीचे की तरफ लुढ़कते हुए देख रहे थे। तभी एकाएक एक गिट्टी के बड़े ढेर से कार टकराकर रूक गई , जिसके उस पार हजारों फुट गहरी खाई थी। यह घाटी लगभग 5 किलोमीटर लम्बी है और हम करीब करीब पूरी किसी तरह इन्दौर लौटकर पूज्य गुरूजी के पास गये। दूर से ही उन्होंने देखकर आवाज लगाई तीर्थयात्री आ गये हैं भाऊ ;श्री भटजी वाले साहब को गुरूजी- भाऊ बोलते थे -आईये और हमसे बोले - सारी रात आप लोगों ने सोने नहीं दिया । पूरा वृतांत गुरूजी का आदेश पाकर हमने घाटी की चढ़ाई चढ़कर पहुंचने वाले थे , तभी यह घटना घटी थी। हम सभी इस बात को लेकर कौतुहल में थे कि इस पूरे रास्ते में दूर दूर तक कोई भी अन्य गिट्टी का ढेर हम लोगों को नजर नहीं आ रहा था। कार को खाई में गिरने से बचाने के लिये यह गिट्टी का ढेर हम सभी की जीवन रक्षा के लिये कवच बन गया था। हम सभी हतप्रभ से कार से बाहर आये और हम सभी की प्राण रक्षा की बात सोचकर सभी एक दूसरे की ओर किंकर्तव्यविमूढ़ भाव लिये निहार रहे थे सुनाया, जिसे भटजीवाले परिवार के लोग भी सुन रहे थे। अंत में गुरूजी बोले - ' कारक ' को छोड़कर स्मारक पूजने गये थे। हम सभी एक अपराधी की भांति उनके सामने हाजिर थे।

करूणामयी मूर्ति पूज्य भगवान वासुदेव जीकी सेवा में रत जैन सा० और उनका परिवार

1988 - 89 में गुरूजी भोपाल में डॉ. शिन्दे के घर विराजमान थे। हम उनके पास रोजाना करीब 3 बजे जाते थे। कारखाने के टेक्निकल मेनेजर 65 वर्षीय श्री समर कुमार मित्रा ने हमसे पूछा, तुम रोजाना कारखाने से जल्दी क्यों चले जाते हो हमने उन्हें बताया कि हमारे गुरूजी आये हुए हैं और हम उनके पास ही जाते हैं। उन्होंने गुरूजी के पास चलने की बात कही , साथ ही अन्य जानकारियां भी चाहीं। प्रमुखता के साथ वे जानना चाहते थे कि क्या गुरूजी को प्रणाम करना आवश्यक होगा। अनेक दुविधाओं के बीच वे रूक नहीं पायेए और गुरूजी को प्रणाम करना जरूरी नहीं होगा ऐसा मानकर हमारे साथ गुरूजी के दर्शनार्थ गये।

डॉ. शिन्दे के यहां पहुंचकर एकाएक मित्रा जी उठे और गुरूजी के चरणों में वन्दना करने लगे और वापिस आकर बैठ गये। इस घटना के बाद गुरूजी रोजाना हमसे पूछते कि आपके मित्रा साहब क्या कह रहे थे , यही प्रश्न कारखाने में पहुंचने पर मित्रा साहब भी हमसे पूछते थे कि आपके गुरूजी कुछ कह रहे थे , अंततः मैंने मित्रा साहब से कहा कि लगातार 3 दिन से गुरूजी ऐसा क्यों पूछते हैंघ् तब हमें उन्होंने बताया कि उनके स्वयं के एक गुरू हैं और वे आजकल विदेश में हैं और अन्य किसी भी गुरू को वे नमन नहीं करते।

मित्रा जी ने आगे बताया कि आपके गुरूजी को देखकर मैं रोक नहीं पाया और मन में विचार आया कि यदि ये वास्तव में एक सद्गुरू हैं तो मैं प्रणाम इन्हें करूंगा , पर दर्शन मुझे उनके चरणों मेंए अपने गुरू के होना चाहिये। जीवन! मैंने आपके गुरूचरणों में अपने गुरू के जो इस समय फ्रांस में हैं , उनके दर्शन किये थे। यही वजह है कि गुरूजी आपसे पूछ रहे हें। धन्य हैं यह विभूति जो सर्वज्ञता की पराकाष्ठा है और सौभाग्यशाली हैं वे सभी जिन्हें उनका सामीप्य मिला है।

परम आदरणीय पूज्य गुरूजी के साथ कार द्वारा लम्बा सफर हमने किया। उनके सामीप्य में अनेकों अविस्मरणीय घटनायें घटीं हैं , जिनसे गुरू जी की दिव्यता और आध्यात्मिक पराकाष्ठा का ज्ञान हमें मिलता है।

ये सभी घटनायें 1990 से 1997 के बीच की हैं और इसी काल में गुरू जी का स्वास्थ्य भी बिगड़ा है। क्योंकि गुरू जी ने अपने शिष्यों की पीड़ायें अपने में समेट ली थीं, ताकि उनके शिष्य स्वस्थ रहें। 1991 में गुरू जी का हीमोग्लोबिन काफी कम हो गया था और 1992 में 8. 5 ग्राम होने पर चिन्ता जनक स्थिति बन गई थी। 1991 में वर्धा में गुरू पर्व धूमधाम से मनाया गया था और 1992 में ग्वालियर में यह पर्व सम्पूर्ण गरिमा सहित मनाया गया। 1991 तथा 1992 में स्वास्थ्य की दृष्टि से गुरूजी की हालत गंभीर होते हुए भी सदैव आनंदित और प्रसन्नचित्त रहते हुए शिष्यों को आशीष और नये शिष्यों को दीक्षा देते रहे। हीमोग्लोबिन 8. 5ग्राम होने पर भी पूज्य गुरूजी की आवाज बुलंद रही और प्रसन्न मुद्रा में रहते हुए उन्होंने स्वास्थ्य की कमजोरी को कभी प्रकट नहीं होने दिया। रक्त की कमी और समस्त जांच के बाद भी विटामिन बी. 12 की कमी किस कारण है यह पता नहीं चल सका था। कभी इंजेक्शन न लेने वाले गुरूजी ने अपने शिष्यों की इच्छा और डाक्टरों की सलाह मानकर इंजेक्शन लगवाना मंजूर किया था। 1993 का पर्व मुंगेली में मनाया गया था। उस समय गुरू जी का स्वास्थ्य काफी बिगड गया था परंतु धन्य हैं गुरूजी जो इन्दौर से पधारे।

करूणामयी मूर्ति पूज्य भगवान वासुदेव जी की सेवा में रत जैन सा0 और उनका परिवार

करूणामयी मूर्ति पूज्य भगवान वासुदेव जी की मधुर मुस्कान

भटजीवाले साहब को आश्वासन दे रहे थे कि इन्दौर आऊंगा , नहीं तो वहां आने के लिये एक जन्म और लेना पड़ेगा। गुरू पूजा की पूर्व रात्रि अर्थात 22 जुलाई 1993 को एक गोला लगभग टेनिस की बाल के आकार का मलद्वार से निकला और साथ ही बहुत सारा खून भी।

23 जुलाई को पूजा भी मुंगेली में अनवरत चल रही थी और इसी बीच गुरूजी को पसीना आया और कुछ देर के लिये मूर्छित हो गये। कार्यक्रम बन्द नहीं हुआ और शेष पूजा गुरू जी की तस्वीर पर की गई। गुरू जी ने खेचरी मुद्रा लगा ली एवं उन्हें रायपुर इलाज के लिये ले जाया गया। इस मुद्रा में जीभ को उल्टा कर तालू से लगा लेने पर प्राण जाने का डर नहीं रहता।

इस समय उनका हीमोग्लोबिन 4.5 था। उसी समय रक्त देने की व्यवस्था की गई। हर शिष्य इसके लिये आगे आया तथा 2 दिन में 4 बोतल खून तथा हफ्ते भर में 7 बोतल खून चढ़ाया गया और हीमोग्लोबिन 4.5 से बढ़कर 9 ग्राम हो गया। दोबारा

जांच होने पर पता चला कि पेट में गोला है। सबकी राय से भिलाई अस्पताल के प्रमुख सर्जन डा 0.चौबे को दिखाया गया। डाक्टर साहब की सलाह थी कि पूज्य गुरूजी का आपरेशन करके गोला निकाला जावे।

सभी शिष्यों ने गुरूजी से डाक्टर साहब की सलाह मानने की प्रार्थना की। गुरू जी का स्वास्थ्य अधिक खराब था। रायपुर गुरू कृपा नर्सिंग होम में उनसे शिष्यों द्वारा भिलाई अस्पताल में आपरेशन के लिये कहा गया , परन्तु इसके लिये गुरूजी तैयार नहीं थे। अंत में सभी शिष्यों के अनुरोध पर श्री अशोक भैया ने गुरूजी से आग्रह किया और उन्हें पुन: एक बार सभी शिष्यों की बात मान लेने को बाध्य किया। डाक्टर साहब की बात को अंत में गुरूजी मान गये। 16-08-1993 को उन्हें भिलाई अस्पताल में भर्ती कराया तथा 19-08-1993 को आपरेशन हुआ था। आपरेशन थियेटर में गुरू परिवार के और पूज्य गुरूजी के बहुत निकटतम शिष्य डा. प्रदीप जलगांवकर भी थे। 86 वर्ष की उम्र में आपरेशन काफी खतरनाक था और लगभग डेढ़ घण्टे यह आपरेशन चला। दो स्थानों से अंतड़ी को काटकर पुन: जोड़ा गया। ट्यूमर पूरी तरह निकल गया जो अंतड़ी के अंदर न जाकर बाहर की ओर जा रहा था और बड़ी आंत से निकलकर छोटी आंत में चिपक गया था। भिलाई अस्पताल के प्रमुख सर्जन आर.जे. चौबे एवं चीफ चेस्ट फिजिशियन डा 0 जे 0आर0 स्वर्णकार समय-समय पर स्वास्थ्य की जानकारी लेते रहे। डा. बासवाड़ा , डा. शशांक गुप्ता , डा. सी. एम. वर्मा एवं मुंगेली के डाक्टर संजय अग्रवाल और गुरू कृपा नर्सिंग होम रायपुर के डा. दम्पत्ति डा. श्री प्रभात आचार्य एवं डा. अर्चना जी का यह गुरू परिवार और कृतज्ञ है , जिनके कारण तथा गुरूजी की दृढ़ इच्छा शक्ति से अनहोनी टल गई थी।

अस्पताल में गुरूजी के अनेकों शिष्य उपस्थित थे और उनके स्वास्थ्य लाभ की सतत प्रार्थना चलती रही। भिलाई में लगभग 20 दिन रहने के बाद गुरूजी , गुरूकृपा नर्सिंग होम रायपुर में 4 माह स्वास्थ्य लाभ लेकर जनवरी 1994 में मुंगेली चले गये।

रायपुर में अनेकों शिष्यों को खून देने का भी सुअवसर गुरूजी की कृपा से प्राप्त हुआ। 1993-94 में एन्टी टी.बी. थेरेपी ली और अन्य दवाईयां भी लीं। गुरूजी के साथ अनेकों यात्राओं में जो घटित हुआ है , उसकी कुछ यादें स्मृति पटल पर विद्यमान है , गुरूजी कार में आगे की सीट पर बैठकर सर्वप्रथम दोनों हाथों से सर्व शक्तिमान को नमन करते प्रतीत होते थे (मेरा अनुमान)। तब उनकी आज्ञा लेकर हम कार चलाते थे। गुरूजी के साथ कार चलाते समय हम काफी सतर्क रहते थे और कम से कम हार्न बजाने का प्रयास करते थे। सफर अक्सर सुबह 7 बजे शुरू होकर शाम होने तक पूरा करना होता था। एक यात्रा में भोपाल से कुछ ही किलोमीटर चलने पर एक नाले में उफान आया हुआ था। पता करने पर मालूम हुआ कि यह 2-3 दिन नहीं उतर सकेगा। गुरूजी को बताया गया। ऐसे अवसर पर गुरू जी शांत रहते थे ओर सुनकर मात्र जीं’’’बोलते थे।

ट्रेक्टर ट्रेलर की मदद से कारें आ जा रही थीं क्योंकि नाले में बहाव बहुत तेज था। अत: गुरूजी की आज्ञा लेकर अपने पुत्र को कार का स्टियरिंग दिया और गुरूजी से पैर सीट पर ऊपर रखने की विनय की। शंका थी कि कार के अन्दर एक से डेढ़ फिट पानी आ जायेगा। उस पार पहुंचकर शीघ्र गुरूजी के चरणों को पोंछने गये तो विस्मय का ठिकाना नहीं था। पूरी गाड़ी में पानी था मात्र गुरू जी की सीट और चरणों वाली जगह सूखी थी जिस पर गुरूजी के चरण यथावत रखे थे। बड़े विनोदपूर्ण स्वर में गुरू जी ने कहा ‘‘यहां पानी नहीं आया’’।

रायपुर से नागपुर जाते समय कुम्हारा के आगे एक रेस्ट हाऊस सौंदड़ में गुरूजी को विश्राम हेतु तथा दोपहर का खाना खाने के लिये कार रोकी। रेस्ट हाउस का चौकीदार हमारी कार देखकर तेजी से अपने क्वार्टर की ओर भागा , जिसका हमने पीछा किया। उसने जानकारी दी कि बिजली , पानी नहीं है अत: शाम 5 बजे के पूर्व कमरा नहीं खोलूंगा। कमरा खोलने पर कम से कम आप पानी तो मांगेंगे जिसे मैं नहीं दे सकूंगा।

चौकीदार की दलीलें सुनने के बाद हमने मात्र इतना कहा कि ''तेरे द्वार पर भगवान पधारे हैं, और तू उनके दर्शन करने की बजाये भाग रहा है '' सुनते ही वह कमरा खोलने आया और आश्चर्य से उसके मुंह से चीख निकली , क्योंकि तभी बिजली आ गई और वह दौड़कर पानी की मोटर चालू करने गया और लौटकर बताया कि 5 बजे के पहले कभी बिजली नहीं आती और अभी तो मात्र 1 बजा है, परन्तु आज क्या हो गया-हमें माफ करें। तदुपरांत हमें हर तरह का आवश्यक सहयोग देने लगा। विषम को सम बनाने वाले पूज्य गुरूजी को हमारी चरण वन्दना।

पूज्य गुरूजी के साथ अशोक भैया तो लगभग हमेशा रहते थे। एक बार डाक्टर चन्दू शुक्ला के घर जबलपुर से निकलकर भोपाल के लिये प्रस्थान किया। रास्ते में गुरूजी ने पहले 10 एच.आई.जी. में हमारे फ्लैट पर चलने को कहा। यह आश्यचर्यजनक था क्योंकि गुरूजी एक शहर में एक ही शिष्य के घर रूकते थे। 2-3 दिन बाद ही वे डाक्टर शिन्दे के यहां चले गये थे। उस समय एक अद्भुत घटना भोपाल में हमारे उद्योग ज्योति रबर कारखाने में घटी। उसका उल्लेख मात्र गुरूजी के आभामण्डल की ज्योति का प्रकाश कैसे सर्वत्र फैल जाता है यह रहस्य और उनके व्यक्तित्व और आध्यात्मिक ऊंचाईयां जिन्हें छूना हमारे वश में नहीं है , का अहसास करने में सम्भवत: सहायक अवश्य होगा। इकबाल नामक कर्मचारी हमारे आफिस का कामकाज कई वर्षों से देखता है जिसकी श्रद्धा पूज्य गुरूजी में है। वह आफिस की सीढ़ियां चढ़कर प्रथम तल पर जा रहा था। उसे अगरबत्ती की सुगंध तीव्रता से आई , जिससे उसे लगा कि हम 10 -12 दिन के प्रवास के बाद लौटकर आ गये हैं। ऊपर पहुंचकर उसने हमारे कमरे में गुरूजी की तस्वीर के समक्ष 2अगरबत्ती जलती देखीं। बहुत देर तक हम कारखाने में कहीं भी नहीं दिखे तो उसने फोन करके जानना चाहा कि हम कब आये और कहां हैं।

यह वह समय था जब हम गुरूजी को कुर्सी पर बैठाकर 10एचआईजी के फ्लैट में लाये ही थे। इकबाल के विस्मय का ठिकाना नाहीं था , जब उसे पता चला कि हम कारखाने गये ही नहीं थे और किस तरह दो अगरबत्ती गुरूजी की तस्वीर के समक्ष

जल रहीं थीं और चारों ओर वातावरण में सुगंध फैली हुई थी। तब से हमने कभी भी यह नहीं सुना कि हमारे न रहने पर या गुरूजी के साथ प्रवास के समय किसी भी तरह कोई परेशानी कारखाने के संचालन में आई हो।

गुरूजी जैसे बेमिसाल , अद्वितीय, अद्भुत, नायाब और अनमोल व्यक्तित्व हम पर कृपावंत रहे, इसे हम अपना परम सौभाग्य मानते हैं।

कारखाने में अनेकों घटनायें घटती थीं , जो हमें विचलित और परेशान करती थी तथा आर्थिक क्षति पहुंचाती रहती थी। एक दिन एक दीवार में दरार पड़ गई और वायरिंग जल गई। गुरूजी को डाक्टर शिन्दे ने हमारे समय पर न पहुंचने पर यह बात बता दी। जब हम उनके पास पहुंचे तो गुरूजी ने हमें स्नेहभरी डांट दी और कहा कि-

''आप किस तरह के इन्सान हैं, हर शिष्य अपने घर, आफिस, प्लाट आदि पर हमें ले जाने को कहता है और आपने आज तक हमें कारखाने चलने तक को नहीं कहा''।

हम दूसरे दिन गुरूजी , डाक्टर शिन्दे और अशोक भैया को लेकर फैक्ट्री गये , जहां गुरूजी का पूरी श्रद्धा के साथ हम सभी ने आवभगत , पूजा की, आशीष पाया तथा उन्हें कारखाने की पूरी जानकारी दी। इसके बाद से ही श्रमिकों के मन में सर्तकता से काम करने की भावना पैदा हुई और उन्हें ऐसा लगने लगा कि हमारे काम को कोई अव्यक्त शक्ति देखती रहती है। इसका प्रमाण भी 2-4 बार, उन्हें गुरूजी की कृपा से हमने दिया था। एक ड्रम में करीब 12 हजार कार्क रखने की क्षमता होती है। भरे ड्रमों में गुरूजी को याद करके हम अपना हाथ डालकर यह देखते थे कि तैयार माल में कोई कार्क भी खराब तो नहीं है। उनकी कृपा से यदि एक भी कार्क उन 12000 कार्कों में खराब होता तो वह हमारे हाथ में आ जाता था।

इसी तरह रबर रोल, जो सैकड़ों की तादात में रखे रहते थे , उनमें कोई खराब रोल तो नहीं है , यह जानने के लिये गुरूजी का स्मरण कर उस ढेर के किसी रोल को निकालने का आदेश देने पर यदि कोई खराब है , तो वही रोल उस ढेर से निकलता

था। इन घटनाओं के बाद गुरूजी की कृपा से समस्त कर्मचारी अपनी कर्तव्य भावना और गुरूजी के प्रति पूरी श्रद्धा का भाव आज भी रखते हैं और अपना दायित्व पूरी निष्ठा से निभाते हैं। कारखाने में हर त्यौहार और पर्व पर गुरू जी की आरती सभी कर्मचारी सामूहिक रूप से करते हैं और हर वर्ष यहां 23 जुलाई का पर्व गुरू जी के जन्म दिवस के रूप में मनाया जाता है।

दिसम्बर 1992 में गुरू जी डा. शिन्दे साहब के यहां थे उस समय गुरू जी के पुराने शिष्य मेजर एस.पी. सिंह जिनकी पुत्री श्रीमती सरोज सिंह पत्नी स्वर्गीय श्री अर्जुन सिंह जी हैं, बार बार गुरू जी से अनुरोध कर रहे थे कि उनके दामाद अर्जुन सिंह जी अस्वस्थ हैं। डाक्टरों ने जवाब दे दिया है तथा उन्हें चिकित्सा हेतु अमेरिका ले जाने का उपक्रम किया जा रहा है। कृपया आप उन्हें जीवनदान दें। गुरू जी को हम जबलपुर से भोपाल लाये थे और दो दिन 10 एच.आई.जी. में हमारे साथ रूककर वे डा. साहब के यहां ईदगाह हिल्स पर रूके थे तथा हमें बताया था कि अभी काफी दिनों यहां रहेंगे।

मेजर साहब के अनेकों फोन एक दिन में आये और गुरू जी ने अंत में उन्हें आदेश दिया कि दिल्ली की अस्पताल में अपने दामाद श्री अर्जुन सिंह जी के कान में फोन लगाकर हमसे सम्पर्क करावें। भक्त की प्रार्थना भगवान ने सुन ली और श्री अर्जुन सिंह जी के प्राण बच गये। भोपाल से दिल्ली फोन पर मंत्रोच्चारण या पता नहीं , कौन सी विधि से यह उपचार हुआ था। गुरू जी के अनन्य शिष्य मेजर एस.पी. सिंह, जो बार बार अपनी लड़की को विधवा होने से बचाने की गुहार लगा रहे थे , उन्हें यह भी वरदान हमारे पूज्य गुरू जी ने दिया कि ''तुम्हारे जीते जी तुम्हारी लड़की विधवा नहीं होगी ''। यह एक अटल सत्य साबित हुआ। 18 साल बाद गुरूजी के शिष्य श्री एस. पी. सिंह की मृत्यु के 18 दिन बाद ही अप्रैल 2011 में श्री अर्जुन सिंह ने अन्तिम सांस ली थी।

गुरूजी ने अपने शिष्य की अनुनय विनय स्वीकार करके श्री अर्जुन सिंह जी की प्राण रक्षा करके उनकी अनेकों बीमारियों को अपने में समेट लिया था। उसी शाम हमें

आदेश मिला कि किसी गर्म जगह हमें कल सुबह ही ले चलो। हम समझ नहीं सके कि पूज्य गुरू जी ने लम्बे समय रूकने का भाव कुछ घण्टे पहले दर्शाया था और रात होते होते भोपाल की ठंड से दूर ,गर्म जगह ले चलने का आदेश मिला है। उक्त घटना की जानकारी मिलने पर गुरू जी को उन तमाम पीड़ाओं को सहते हमने देखा है। वर्धा ले जाने के मार्ग में किस तरह पूज्य गुरू जी अपने शिष्य की प्रार्थना स्वीकार करने का भोगमान भोग रहे थे,इसे शब्दों में व्यक्त करना अत्यंत कठिन है। भोपाल से वर्धा तक गाड़ी चलाना और लम्बे रास्ते तक अपनी गोद में गुरूजी के पैरों को रखकर मसाज करना और एक हाथ से कार का स्टेयरिंग संभालना आज भी रोमांच पैदा करता है। अपने शिष्य की मनोकामना पूरी करने के लिये प्रकृति के विरूद्ध जाकर भी जीवन दान देना , गुरूवर के सर्वशक्तिमान होने को दर्शाता है। हमने और अशोक भैया ने उनकी पीड़ा को देखा है। बर्धा शाम को पहुंचने के बाद भी लगातार गुरू जी को कष्ट सहते देखा।

करीब रात 3 बजे पूज्य गुरू जी कुछ सामान्य हुए और बोले ''आप लोगों को डाक्टर नहीं बुलाना पड़ा और बहुत पैसा बच गया-तीन तरह के अटैक आये थे ''। इन पीड़ा के क्षणों में भी गुरूजी की ममता और वात्सल्य हमने देखा है और थोड़ा ही सामान्य होते गुरूजी ने अशोक भैया को कहा ''जैन को आराम करने भेज दो , वह थक गया होगा''।

गुरू पूजा 23 जुलाई 1992को ग्वालियर में सम्पन्न हुई थी। वहां से हम भोपाल होकर रायपुर गये थे। भोपाल से छिन्दवाड़ा-सिवनी होकर गोंदिया रात्रि विश्राम का संकल्प था अत: वहां तो पहुंचना ही था। बरसात का मौसम था और रास्ते के व्यवधानों के कारण संध्या तक गोंदिया पहुंचना संभव नहीं हो रहा था। रास्ते में भारी बरसात के कारण यात्रा में कठिनाई जा रही थी तथा पेट्रोल भी कार में डालना था। यह सोचा कि जहां सूखा मिलेगा ,वहां कार रोक कर पेट्रोल डाल लेंगे। हम समय पर नहीं पहुंच सकेंगे यह घबराहट भी थी। चलते-चलते हम बालाघाट पहुंच गये। यहां भी घनघोर बारिश हो रही थी और रास्ता भी देखना दुष्कर हो रहा

था। हम ऐसी तूफानी बारिश में यह साहस भी नहीं कर पा रहे थे कि पेट्रोल के लिये कार को कहीं रोकते।

रात हो चुकी थी , कुछ भी भारी वर्षा के कारण दिखाई नहीं दे रहा था। एकाएक हमने देखा कि हम बालाघाट से भी 5-6 किलोमीटर आगे आ चुके थे। पूज्य गुरूजी एवं भैया अशोक जी गुम सुम बैठे थे और रात होने के पहले गोंदिया न पहुंच पाने के कारण हम असहज महसूस कर रहे थे। हम बहुत निराशा में थे। दूसरी भूल , समय पर कार में पेट्रोल , जो लगभग शेष हो गया था , न डालने की हुई। हम अन्दर ही अन्दर डर रहे थे और गुरूजी से मन में ही पूछ रहे थे कि गुरूजी क्या करें। इसी ऊहापोह में बिना कार रोके , यह सोचकर आगे बढ़ते जा रहे थे कि जहां कार बन्द होगी, तभी जो होगा, आगे देखेंगे। मन में प्रश्न उठने लगे कि बिना पेट्रोल के कार कैसे आगे जा रही है। इसी मानसिकता में गोंदिया से 5किलोमीटर पूर्व स्थित ''नागरा'' दिखाई दिया। यहां बारिश कम थी और हम धीरे-धीरे बिना पेट्रोल के कार आगे बढ़ाते हुए कुछ निश्चिंत भी हो चुके थे। ''कृपा सिन्धु'' की महान कृपा से गोंदिया पहुंचकर श्री राजेन्द्र जी के घर के सामने कार बन्द हो गई और हमें निश्चय हो गया कि पेट्रोल की जगह ''गुरू कृपा'' ने ईंधन बनकर कार को यहां तक लाये।

माह अक्टूबर 1993 में आदरणीय गुरूजी को लेकर इन्दौर श्री भटजीवाले के निवास पर पहुंचे। दूसरे दिन सुबह 8 बजे श्री भटजीवाले के फार्म हाउस पर वृक्षारोपण का कार्यक्रम था। हमारा भतीजा इन्दौर में रहता है। हमने गुरूजी से भतीजे के घर जाने की आज्ञा मांगी और सुबह समय पर आ जाने का आश्वासन भी दिया। देर रात तक जागने के कारण हम समय पर नहीं पहुंच पाये। चूंकि गुरूजी एवं अन्य समस्त परिवारजन हमारी समय पर पहुंचने की बात से आश्वस्त थे अत: समय पर गुरूजी को कुर्सी पर बैठाकर नीचे लाकर कार में बिठा दिया। हम लगभग 25 मिनिट देर से पहुंचे और देखा कि 6-7 कारें एवं 15-20 अन्य लोग इंतजार कर रहे थे। इसके पूर्व श्री भटजीवाले ने गुरूजी से निवेदन किया था कि एक कार छोड़कर बाकी सभी प्रस्थान करें परन्तु गुरूजी मौन रहे थे। हम काफी डरे और सहमें हुए वहां पहुंचे थे।

ऐसा अवसर पहली बार आया था जब गुरूजी को हमारी प्रतीक्षा करना पड़ी हो , अन्यथा हम सदैव समय पर गुरूजी को कार में ले जाते थे। हमने चुपचाप कार में बैठकर हमेशा की तरह गुरूजी की चरण वंदना करके चलने की आज्ञा मांगी और आदेश में गुरूजी ने मात्र ''जी'' शब्द का उच्चारण किया।

हमेशा गुरूजी कहा करते ''मैं किसी से क्यों? कहां? कैसे? नहीं पूछता'' और आज भी यही हुआ। अन्यथा हम तो चाह रहे थे कि एक बार देरी से आने की जो असावधानी हमसे हुई है, उसकी डांट फटकार हो ले, ताकि मन में व्याप्त सहमापन और डर चला जाये। धन्य हैं पूज्य गुरूजी! जिन्होंने हमसे कुछ भी नहीं पूछा और थोड़ी बहुत नहीं 25 मिनिट की देरी के बाद भी किसी तरह का कोई सवाल या तनाव , गुरूजी के मुखमण्डल पर देखने को नहीं मिला। हमारी प्रतीक्षा करना उनकी व्यवहारिकता एवं दयालुता की पराकाष्ठा ही कहा जा सकता है।

श्री भटजीवाले के यहां से निकलकर एक शिष्य के यहां नाश्ता भी करना था। जैसे ही हम वहां पहुंचे, गुरूजी ने अपने शिष्य से कहा कि हमारे जैन साहब बिना नाश्ते के आये हैं, इन्हें अवश्य खिला दीजिये। पूज्यवर की करूणा, दया और मातृवत स्नेह से हम रोमांचित हो गये। यह अविस्मरणीय घटना हमें वात्सल्य की मूर्ति का सदैव स्मरण कराती रहती है।

सन 1994 अप्रैल माह में आदरणीय गुरू जी को लेकर मुंगेली से रायपुर-नागपुर-वर्धा- अमरावती होकर खण्डवा में श्री ओ.पी. शर्मा के यहां पहुंचे। साथ में श्री अशोक भैया-भाभी, श्रद्धा तथा सन्जू (गुरू जी के बड़े सुपुत्र का पुत्र) साथ में आये थे। अमरावती से व्हाया परतवाड़ा होते हुए खण्डवा पहुंचे थे जबकि गुरू जी बुरहानपुर होते हुए अन्य शिष्यों से मिलकर आना चाहते थे। अधिक गर्मी के कारण ही हम बुरहानपुर होकर नहीं गये थे। खण्डवा पहुंचकर गुरू जी ने आदेश दिया कि हम कुछ दिन को भोपाल जाकर कारखाना देख आयें। हमें ज्वर भी आया हुआ था। गुरू जी ने हमें आराम करने की सलाह दी थी। हमें यह भी आदेश मिला था कि जब गुरू जी बुलायेंगे तो इन्दौर होते हुए श्री संजय भट्जीवाले एवं उनकी कार सहित आवें ताकि

समस्त लोग बाकी की यात्रा दो गाड़ियों में सुगमता से कर सकें। यहां यह उल्लेखनीय है कि अशोक भैया ने संजय को ए.सी.कार लाने को कहा था जबकि गुरू जी ने इसका विरोध किया था।

हमें जब भोपाल से खण्डवा जाने का आदेश मिला तो इन्दौर से संजय भटजीवाले के साथ हम खण्डवा पहुंचे तथा दूसरे दिन इन्दौर के लिये रवाना हुए। यह अप्रैल 1994 की बात है। गुरू जी ए.सी. कार में न जाकर अपनी कार में यथावत बैठ गये , साथ ही अशोक भैया के परिवार को संजय की ए.सी. कार में आने का आदेश दिया। इन्दौर पहुंचने पर पता चला कि हर सम्भव प्रयास के बाद भी श्री संजय भट्टजी वाले अपनी कार का ए.सी. चालू नहीं कर सके। उनकी समझ से परे थी , गुरूजी की यह अबूझ लीला।

इन्दौर पहुंचने पर हमें जैसे ही संजय ने यह बताया कि मैं नहीं समझ सका , ऐसा क्यों हुआ कि ना गुरूजी ए.सी. कार में बैठे , न इस कार का ए.सी. चालू हुआ , क्या वजह हो सकती है ? जब संजय भट्टजीवाले को ज्ञात हुआ कि गुरूजी ने ए.सी. कार लाने का विरोध किया था और साथ ही उन्हें एक तार भी लटकता दिखाई दिया जो ए.सी. कनेक्शन से अलग पड़ा था (जिसको लगाते ही गाड़ी का ए.सी. चलने लगा) , तब उन्हें यह वास्तविकता मालूम हुई कि गुरूजी की बात का विरोध की क्या परिणति हो सकती है। उक्त घटना हमें बहुत कुछ सिखाती है। हमें यह भी समझ लेना चाहिये कि उनके बताये मार्ग पर चलकर हम इस अभीष्ट को साकार कर सकते हैं जो अदृश्य है और कठिन है , किन्तु नामुमकिन नहीं है। उक्त घटना के बाद संजय जी ने एक ए.सी. यूनिट गुरूजी की कार में लगवाया किन्तु कतिपय कारणों से यह सफल नहीं हुआ। हमने अत्याधिक कष्ट इसकी वजह से उठाये , जिसका उल्लेख आगे आयेगा। इन्दौर से भोपाल आने पर 10 एचआईजी, में गुरूजी की सेवा का अवसर मिला।

भोपाल से गुरूजी को जून 1994 में श्री डी.एस. राय के पास रायसेन ले गये जहां वे कलेक्टर पद पर आसीन थे। रायसेन में गुरूजी ने श्री राय साहब को जो कि उनके

बहुत पुराने शिष्य हैं, सरकारी उच्च पदों पर रहते हुए, जीवन की अनबूझी राहों पर उॅच आदर्श स्थापित करने की सूझ बूझ दी। इस अवसर पर श्री राय साहब की पत्नी श्रीमती कुसुम राय भी थीं और गुरू जी द्वारा जो मार्ग बताया उससे बहुत अभिभूत और भावुक होकर जीवन के रहस्यों की गहराई को समझकर उन उच्च आदर्शों को पाने में श्री राय साहब की सहायक बनीं। यहां श्री देवेन्द्र राय द्वारा बताया गया एक अनुभव बताना उपयुक्त होगा। गुरूजी का रायसेन प्रवास उन्हीं दिनों हुआ था जब पूरे प्रदेश की तरह वहां भी पहली बार पंचायत चुनाव नये रूप में हो रहे थे। पूरे जिले में अव्यक्त तनाव था जो प्रशासन के लिए चिन्ता का कारण था। हजारों गांवों में चुनाव होना था, पुलिस बल की कमी थी और यह आशंका थी कि गांव के आपसी झगड़ों के कारण चुनावों में हिंसा की घटनायें न हों। परन्तु अन्दर ही अन्दर श्री राय आश्वस्त थे क्योंकि पूज्य गुरूजी चुनाव के दिन रायसेन में ही रूकने वाले थे और यही हुआ। छुट पुट घटनाओं के अलावा चुनाव निर्विघ्न एवं शांतिपूर्वक सम्पन्न हुए और श्री राय ने चैन की सांस ली।

सभी परिवारजनों ने हमेशा अनुभव किया है कि पूज्य गुरू जी अपने शिष्यों के कल्याण के लिये स्वयं चलकर उनके पास जाते थे। भोपाल लौटकर उन्होंने गोंदिया राजेन्द्र कुमार जी के पास चलने का आदेश दिया। हम व्हाया नागपुर-गोंदिया के लिये निकले, किन्तु कार में लगा ए.सी. हमें अत्यन्त कष्ट दे रहा था और अंत में नागपुर पहुंचकर कार बंद हो गई। गुरूजी की कृपा से यह शहर के बीच हुआ , किसी जंगल में नहीं। उसे दुरूस्त कराने का भरसक प्रयास होता रहा पर रात को लगभग 10:30 बज गये और कार चालू नहीं हो सकी।

भैया अशोक ने डा. जलगांवकर के यहां चलने का प्रस्ताव रखा , जिसे गुरूजी ने स्वीकार नहीं किया। अंत में उस ए.सी. यूनिट को बाहर करके किसी तरह कार चलाने योग्य हुई। नागपुर से गोंदिया गुरू जी ने हमें कैसे पहुंचाया यह मात्र गुरू जी ही जानते होंगे। रात में लगभग 12 से 1 बजे गोंदिया से आती हुई एक जीप मिली। उसमें हमारे बहुत पुराने परिचित श्री कुन्दनलाल जी भी थे। हमने उन्हें बताया कि

रेडियेटर का पानी सूख कर खूब गर्म हो रहा है तथा कार बन्द हो जाती है। श्री कुन्दनलाल जी के साथ अन्य लोग भी थे जिन्होंने कार का थोड़ा बहुत परीक्षण किया। पर रात के अंधेरे में किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। अंत में यही निष्कर्ष निकला कि कार बन्द होते ही रेडियेटर में पानी डाला जाये और आगे बढ़ते जायें। उनके पास जितना पानी था , वह हमें दे दिया। रास्ते में पानी मिलना भी दुर्लभ हो रहा था। एक जगह खेत दिखाई दिया , वहां कुएं से पानी लाकर और कई बार रास्ते के गड्ढों से भी पानी मग में लेकर हम रेडियेटर में डाल देते थे। दो-ढाई घण्टे का सफर लगभग साढ़े छ: घण्टे में पूरा किया। दुर्भाग्य से कार में लाइट भी नहीं थी। सामान्यत: ऐसी स्थिति में कार चलने लायक ही नहीं रह जाती है। पूज्यवर का कार में होना और गन्तव्य तक पहुंचने की उनकी इच्छाशक्ति ही कार को आगे बढ़ाने में हमें सूझ-बूझ दे रही थी। रास्ते में कितनी बार कार रोकी और कितनी बार उसे चालू गुरूदेव कराते रहे, यह गिनना कठिन है।

सुबह 5 बजे गोंदिया पहुंचकर कार की पूरी वायरिंग , जो जल चुकी थी बदलवाई गई। गुरू जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था हमने भी उन्हें डा. जलगांवकर के यहां जाने का आग्रह किया था पर गुरू जी ने कहा तुम्हें अकेला छोड़कर नहीं जायेंगे। इतनी यात्राओं के बाद हम समझ सके हैं कि गुरूजी के रोम रोम में बसी व्यवहारिकता के साथ साथ वे गन्तव्य के लिये रवाना होने से पहले सर्वशक्तिमान को नमन (मेरा अनुमान) करके संकल्प करते थे। उन्होंने उस गन्तव्य तक पहुंचने के पूर्व कई बाधाओं के बावजूद भी अपना लक्ष्य जिस गन्तव्य का बनाया है , वह कभी नहीं बदला। उनकी इस दृढ़ इच्छाशक्ति को हमारा बारम्बार नमन। गोंदिया से रायपुर गुरू पर्व 1994 के लिये रवाना हुए और गुरू कृपा नर्सिंग होम में निवास किया।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब गुरूजी ने अपने शिष्यों की अनेकों बीमारियों को अपने ऊपर ले लिया था। मुंगेली के स्थान पर रायपुर में उनके उपचार की भी बेहतर सुविधाओं को महसूस करके 1994 में गुरू पूजा कार्यक्रम में (जो कि रायपुर में चल रहा था) पूज्य गुरू जी की आज्ञा लेकर गुरू जी को मुंगेली से रायपुर निवास का

हमने प्रस्ताव रखा। तदनुसार लगभग 1 लाख 85 हजार की राशि शिष्यों से एकत्र हुई और डा. पंधेर ने अपनी जमीन भी गुरू निवास के लिये देना प्रस्तावित किया। सभी कुछ तय होने पर भी यह कार्य विभिन्न कारणों से आगे नहीं बढ़ सका और अंत में यह राशि वर्तमान ट्रस्ट को सौंप दी गई।

सम्भवत: यह घटना 1995 की है, जब हम गुरूजी को लेकर भोपाल से छिन्दवाड़ा होते हुए सिवनी के रेस्ट हाउस में आकर रूके थे। कार चलाते समय गुरूजी को यह जानकारी दी जाती थी कि किस स्थान से निकल रहे हैं तथा अक्सर कार किस स्पीड से चल रही है यह भी गुरू जी पूछा करते थे। गुरूजी 60-70 किलोमीटर प्रति घण्टे की स्पीड पर जाना पसंद करते थे। अनेकों बार हमने यह मनोभाव भी गुरूजी का समझा कि वे किसी किसी गन्तव्य पर शीघ्र पहुंचना चाहते थे। छिन्दवाड़ा से सिवनी के रास्ते पर हम काफी स्पीड से 80-90 प्रति घण्टा से जा रहे थे, तब पूज्य गुरूजी ने कहा ''आपको कार चलाना नहीं आती अभी तक सिवनी भी नहीं पहुंचे''। उनके उक्त कथन का आशय हम नहीं समझ सके और उसी रफ्तार से गन्तव्य तक पहुंच गये। हमारे साडू भाई स्वर्गीय चक्रेश जी ने वहां हमारी व्यवस्था रेस्ट हाउस में की थी। यहां दो-तीन बातों का उल्लेख करना पूज्य गुरूजी की आध्यात्मिक ऊँचाईयों, उनकी सांसारिक व्यवहारिकता तथा कृतज्ञता के भाव को प्रगट करता है।

जैन साहब -गुरूजी की कार ड्राइव करते हुये

सिवनी से निकलने के पूर्व आदेश मिला कि गोंदिया चलना है और पहले हमें चक्रेश जी से मिलना है। चक्रेश जी का परिवार हमारे पूज्य गुरू जी में बिलकुल आस्था नहीं रखता था। जैसे ही गोंदिया के लिये निकलने के पूर्व उनके घर के सामने कार रोकी। चक्रेश जी सपरिवार आए। पूज्य गुरू जी ने हाथ जोड़कर उनके द्वारा की गई व्यवस्था तथा अन्य प्रबंधों के लिये आभार मानने की बात कही तथा यह भी आशीष दिया कि ''कभी भी, कहीं भी, कैसी भी परिस्थिति या विपत्ति आने पर इस नाचीज को याद करें-आपका काम बन जायेगा''।

पूज्य गुरूजी के द्वारा दिया गया आशीष कितना प्रभावी होता है यह भी यहां उल्लेखनीय होगा। जैन समुदाय के लोग बहुत कट्टरवादी होते हैं और बाकी सभी को पूजना मिथ्यात्व की परिधि में आता है जैसा कि हमारे रिश्तेदार स्वर्गीय श्री चक्रेश जी का परिवार था। इनकी दो कन्यायें थीं। एक कन्या का विवाह नहीं हो पा रहा था, जिसके लिये सतत 3 वर्ष यह परिवार प्रयास करता रहा पर सफलता नहीं मिल रही थी।

हमें एकाएक गुरूजी की बात याद आई और हमारे मन में आया कि उनकी पुत्री को सुयोग्य वर शीघ्र मिल सके , इसके लिये किसी तरह चक्रेश को मुंगेली भेजा जाये। उस समय मन्दिर निर्माण का कार्य चल रहा था तथा चक्रेश जी आर्किटेक्ट थे। अत: हमने उन्हें निर्माण कार्य में ने दीक्षा देकर उन कन्याओं की मनोकामना पूरी की , भोजन ग्रहण किया। आदरणीय गुरूजी की संकल्पशक्ति और अनबूझे भविष्य को स्पष्ट देखने की क्षमता किसी दिव्यात्मा के लिये ही सम्भव है। मार्ग की अड़चनें और विषमताओं को उनके शिष्य, उन्हीं के आशीष से दूर कर पाते हैं।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि गुरूजी स्वयं स्वस्थ रहते थे , पर जरूरत पड़ने पर शिष्यों के कल्याण के लिए स्वयं कष्ट उठाते थे। अपने एक शिष्य की , जो तेल्हारा का था, अपने ऊपर सोरियेसिस नाम की बीमारी ले ली थी, जिसका निदान उस शिष्य की मृत्योपरांत ही हो सका था।

गुरूजी ने अपने शिष्यों की टी.बी. , कैंसर, मिर्गी, प्लूरिसी आदि अनेकों बीमारियां अपने ऊपर लेकर अपने शिष्यों को ध्यान धारणा योग और आध्यात्मिक उंचाईयों पर पहुंचने का मार्ग सुलभ कराया था। 1995 में प्लूरिसी की वजह से डा. स्वर्णकार ने पीठ की तरफ से फेंफड़े से लगभग 1 लीटर पानी निकाला था। गुरूजी का 1995 में ही कूल्हे का फ्रेक्चर (शिष्य की मिर्गी बीमारी अपने ऊपर ली थी) हुआ। तब अक्टूबर 1995 में डा. सुदर्शन रायपुर वालों ने आपरेशन किया था जिसमें डा. संजय पाण्डे एवं डा. यदु सहयोगी थे। डा. पन्धेर और डा. आचार्या दम्पत्ति की उपस्थिति में आपरेशन करके जांघ में स्टील का गोला डाला गया था , पर यह गोला अंतिम संस्कार के बाद जब फूल एकत्र किये गये , तब गायब था। गुरू कृपा नर्सिंग होम में पूज्य गुरूजी की सेवा का सुअवसर डा. आचार्य एवं डा. अर्चना दम्पत्ति को बहुत समय तक मिलता रहा है। इस दम्पत्ति की निश्छल और नि:स्वार्थ सेवा के फलस्वरूप उपरोक्त आपरेशन के बाद गुरूजी ने इस नर्सिंग होम में होने वाली मरीजों की डिलेवरी के समय कोई भी अनहोनी घटना न होने का अभय दान दिया था जो आज भी कायम है।

जनवरी 1996 में गुरूजी को डा. चौबे जी के पास बिलासपुर में ले जाया गया और परीक्षण से पता चला कि 3 सेंटीमीटर से 4 सेंटीमीटर बड़ा ट्यूमर है , जो किडनी और यूरेटर को दबा रहा है। परन्तु आयु को देखते हुए डा. चौबे जी ने आपरेशन करने की सलाह नहीं दी। इसके बाद हमें गुरूजी ने मुंगेली बुलाया। उस समय उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। गुरूजी कहने लगे कि ''आप हमें सभी जगह लेकर सबसे मिला लाईये। हमें गुरूजी की बात सुनकर अचम्भा लग रहा था , क्योंकि उनके इस कथन में गहरा रहस्य छिपा हुआ था और उनका स्वास्थ्य सफर के योग्य नहीं था।

गुरूजी ने आगे कहा कि इस बार हर स्थान पर निश्चित दिनों के लिये ही रूकेंगे। मुंगेली से चलकर रायपुर आये। उस समय गुरूजी को डाक्टर आचार्य ने भी मना किया कि आप न जावें। उनकी पत्नी का स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था तथा वे बम्बई जा रही थीं। पर गुरूजी ने बड़ी दृढ़ता से यह अवश्य कहा था कि इन्हें कुछ नहीं होगा , सब ठीक है। पूज्य गुरूजी नहीं मानेंगे, ऐसा डाक्टर आचार्य ने, हमें कहा। गुरूजी को लेकर हम नागपुर डा. जलगांवकर के यहां पहुंचे। हमने डाक्टर साहब से गुरूजी का पूरा चेकअप कराने का अनुरोध किया तथा 2 दिन रूककर, चेकअप कराकर वर्धा के लिये निकले।

डाक्टर जलगांवकर ने मुझे कुछ दवाओं की जानकारी दी तथा उनकी हालत की निरंतर जानकारी देते रहने को कहा और बताया कि गुरूजी का स्वास्थ्य जाने योग्य नहीं है, पर वे नहीं मानेंगे, अत: आप ले जावें। वर्धा, प्रभाकर पांडे जी के घर पहुंचने पर मैंने देखा कि गुरूजी के मुंह से खून निकला था। तभी डाक्टर जलगांवकर को फोन पर बताकर कुछ दवायें लेकर वापिस श्री पांडेजी के घर पहुंचा और गुरूजी को दवायें दीं, गुरूजी को कुछ नहीं बताया था। इस बीच पांडे जी के यहां फोन आया और डाक्टर अर्चना आचार्य जो बम्बई में चैकअप के लिये गईं थीं उनके बारे में जानकारी दी गई। श्री पांडे जी के घर में किसी बच्ची ने फोन पर बात की थी। डा. श्रीमती अर्चना आचार्य के स्वास्थ्य संबंधी समाचारों से गुरूजी काफी विचलित हो

गये। वास्तव में बच्ची ने ठीक से नहीं समझा था , इस कारण गुरूजी हमें तलाश रहे थे।

हम जैसे ही गुरूजी की दवाई लेकर घर पहुंचे तो गुरूजी ने बिना बताये जाने पर हमें डांटा और कहा-''ऐसा हो हीं नहीं, सकता ''। आप तुरंत पता करें, डा. अर्चना के स्वास्थ्य के बारे में। हमने फोन करके सही स्थिति पता की और गुरूजी को बताया कि डा. अर्चना का परीक्षण बम्बई में हो चुका है और सारी रिपोर्ट सामान्य आई है अत: चिन्ता का कोई विषय नहीं है। उक्त रिपोर्ट के बारे में सुनते ही गुरूजी की भाव भंगिमा और जो प्रसन्नता उनके श्री मुख पर आई थी वह लिखना शब्दातीत है और गुरूजी जोर से बोले-''ऐसा हो ही नहीं सकता कि अर्चना की रिपोर्ट सामान्य न हो । गुरूजी को अपने स्वास्थ्य की चिन्ता कभी नहीं हुई , पर अपने शिष्यों के स्वास्थ्य के लिये हमेशा सजग और शुभ समाचार जानने के लिये अत्यंत उत्सुक रहते थे और इस बात का उन्हें पूरा विश्वास रहता था कि परिणाम वही मिलेगा , जिसके बारे में वे पूर्व में बोल चुके हैं।

एक दिन श्रीमती शीला पांडे जी ने दो फोटो फ्रेम कराये , उन्हें गुरूजी को बताया और गुरूजी को पहली फोटो उनके शरीर पर रखकर बताया कि इसमें श्रीकृष्ण भगवान अपनी गोपियों के साथ नौका विहार कर रहे हैं। काफी समय से पूज्य गुरूजी की आंखों की रोशनी (लौकिक) नहीं थी। इस फोटो पर गुरूजी हाथ फेरते रहे तथा दूसरी फोटो गुरूजी के पेट पर रखकर शीला पांडे जी ने बताया कि गुरूजी इसमें श्री कृष्णजी अपनी गोपियों के साथ रासलीला कर रहे हैं। गुरूजी यह सुनकर शांत हो गए और पता नहीं किस लोक में चले गये। उनका हाथ फोटो पर रखा था और अत्यंत भावुक होकर उनकी आंखों से अश्रुपात होने लगा। कुछ समय उपरांत गुरूजी ने अत्यंत क्षीण आवाज में , बड़ी मधुरता और सजल नेत्रों से कहा कि-शीला! यह किसी स्वप्न या ध्यानावस्था की या काल्पनिक बात नहीं वरन हमने अपनी इन्हीं आंखों से यह रासलीला गोपियों के साथ प्रत्यक्ष देखी हैं। बाद में यह अलौकिक

रहस्य उन्होंने हमें बताया कि शास्त्रानुसार ''कोई भी, चाहे वह योगी हो, भक्त हो या ज्ञानी हो, वह परमात्मा की विशेष कृपा के बिना रासक्रीड़ा नहीं देख सकता। ''

नियत तिथि पर वर्धा से अमरावती चलने तथा तीन रात वहां रूकने का आदेश मिला। अमरावती जाते समय पहली बार स्पीड ब्रेकर दिखाई नहीं दिया , गाड़ी उस पर से उछल गई तथा गुरूजी के माथे पर बहुत बड़ा गूमड़ पड़ गया, जिसका आकार एक नींबू के बराबर था। बिना नाराज हुए गुरूदेव ने उसे स्पर्श किया और वह गायब हो गया। अमरावती से खण्डवा श्री ओ.पी. शर्मा के यहां चलने को कहा। वहां पर 7 दिन रहने का निश्चय था। हम भोपाल जाकर कारखाना देख आवें ऐसा आदेश दिया। अशोक भैया के अलावा तेजवानी जी भी साथ में थे। हम निशं ,ि◌चत होकर भोपाल के लिये निकल गये। गुरूजी के स्वास्थ्य और उनकी हर तरह की देखभाल तथा सेवा श्री शर्मा जी एवं तेजवानी जी कर रहे थे। वापिस 7 दिन बाद खण्डवा पहुंचकर गुरूजी को स्वस्थ देखकर हमें अत्यंत खुशी हुई। फिर गुरूजी के आदेशानुसार हम इन्दौर भटजीवालों के घर पहुंच गये। यहां गुरूजी ने तीन दिन रहने का आदेश दिया था। इसके बाद गुरूजी ने भोपाल ले चलने को कहा और अंत में गुरूजी भोपाल आकर 10 एचआईजी में विराजमान हुए।

खण्डवा में जो देखभाल पूज्यवर की हुई थी , उससे उन्हें काफी अच्छा लग रहा था। कुछ दिन के बाद पुन: गुरूजी ने श्री डी.एस. राय के पास , जो उस समय रायसेन में थे-चलने को कहा और वहां जाकर 2 दिन रहने का आदेश दिया। वहां से 2 दिन बाद ही भोपाल आ गये।यह फरवरी 1996 का समय था। गुरूजी भोपाल में आकर काफी समय रहे और इस बीच उनके दर्शनार्थ हजारों श्रद्धालु विभिन्न स्थानों-अमरावती , वर्धा, औरंगाबाद, अकोला, रायपुर, बिलासपुर, मुंगेली, इन्दौर, ग्वालियर आदि से आ रहे थे। सुबह से रात तक कतारों में भोपाल के अलावा अन्य स्थानों से जहां कहीं भी उनके शिष्य हैं उनके दर्शन के लिये आ रहे थे। गुरूजी के मन में एक स्थान ग्वालियर और बचा था जहां उनकी जाने की तीव्र इच्छा रह गई। उनके स्वास्थ्य के कारण यह लम्बा सफर करने में अनेकों रूकावटें थीं और भोपाल में जो एक

अविस्मरणीय मेला उनके दर्शनों को उमड़ रहा था। इसलिए आदरणीय गुरूजी ने ग्वालियर न जाने की बात मान ली। एक दिन गुरूजी कहने लगे ''आप लोगों की सेवा ने मेरी उम्र 8 वर्ष ''। इसके बाद मात्र लगभग 2 वर्ष बाद गुरूजी ने शरीर त्याग दिया था। हम व्यक्तिगत रूप से इस संबंध में काफी विचार करते रहे कि हमारे पूज्य गुरूजी ने इतने शीघ्र शरीर त्याग क्यों किया? पूज्य गुरूजी स्वयं चलकर लगातार 20 वर्षों तक अपने जैसा बनाने के लिये भ्रमण करते रहे और हमें जगाते रहे। पर हम उनके अनुरूप नहीं बन सके और अंत में पूज्यवर ने शरीर छोड़ने का निर्णय लिया होगा। शरीर छोड़ने पर जाते-जाते भी हमें 500 वर्षों तक राह दिखाने का दीपक दे गये। गुरूजी कहते थे- गुरूजी हमारे हैं-यह सब बोलते हैं किन्तु एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिला जो कहे कि हम गुरूजी के हैं। हम गुरूजी के हैं माने-आकर रहो पास में-सब छोड़ो। है हिम्मत? तो तात्पर्य है मेरा तो कोई नहीं यहां।''

पानी में मीन प्यासी रे, मोय सुन सुन आवत हंसी रे, क्या काबा क्या काशी।

हमारा यह निष्कर्ष इस बात से भी प्रमाणित होता है कि इन्हीं दिनो रात करीब 10-11 बजे हमसे कहा कि ''हमें एक गीत सुनना है जिसके बोल शुरू होते हैं-पानी में मीन प्यासी.....हमने भाई राजेन्द्र जी को गोंदिया फोन किया और उन्हें बताया कि पूज्यवर एक गीत सुनने का आग्रह कर रहे हैं। राजेन्द्र जी ने बताया कि यह बहुत पुराना गीत है जिसे खोजना पड़ेगा, क्योंकि मुंह जबानी याद नहीं है। कुछ अन्तराल के बाद फिर फोन करके यह गीत गुरूजी को रात में ही उन्होंने गाकर सुनाया था। गीत इस प्रकार है -

घर में वस्तु धरी नहीं सूझे बाहर ढूंढन जाती रे, मोय सुन सुन आवे हंसी रे, मृग की नाभि माही कस्तूरी वन वन फिरे उदासी,

तेरे प्रभु तेरे घट में बसत हैं काहे होत उदासी रे।

मोय सुन सुन आवे हंसी रे , दुर्लभ मानस देह कबीरा मांगन से नहीं पासी रे , प्रभु भक्ति में लीन रहो सब गुरू चरणन में लीन रहो सब सहज मिले अविनाशी रे। मोय सुन सुन आवे हंसी रे,

गुरूजी की इच्छानुसार संपूर्ण समर्पण शायद ही किसी शिष्य ने किया होगा? गुरूजी ने शरीर छोड़ने का निर्णय लेने के बाद ही 1996 में सभी शिष्यों से मिलने का निर्णय लिया , आज यह प्रमाणित हो चुका है। पूज्य गुरूजी के मन का दुख व असंतोष इस भजन से हमें स्पष्ट हो रहा है। ''कारक'' सामने होते हुए भी हम ''स्मारकों'' में भटक रहे थे और साक्षात ईश्वर के अवतार को अपने बीच पाकर भी अज्ञानी बने हुए थे। गुरूजी के शिष्य न होते हुए भी गुरूजी को बहुत करीब से पहचाना था बिलासपुर के स्वर्गीय श्री नरेन्द्र सिंह जी ने। गुरूजी को न पहचान पाने का हमें मलाल रहेगा और आज अधिकांश शिष्य इस बात से उदासी में डूब जाते हैं कि हम गुरूजी के सामीप्य को पाकर भी अपने को उनके अनुरूप क्यों नहीं बना सके? इसके बावजूद भी वंदनीय हैं यह अवतारी महापुरूष , कि उन्होंने अपने परिवार को गहन स्नेह और प्यार दिया और जो कार्य सशरीर सामीप्य से नहीं हो सका, वह सूक्ष्म रूप से 500 वर्षों तक हमें प्रकाश मार्ग पर ले जाने का संकल्प लेकर आज भी हमें मार्गदर्शन कर रहे हैं।

इसी बीच श्री योगेश शर्मा रायपुर से गुरूजी का एक बड़ा फोटो बनाकर भोपाल लाये और हमें भेंट किया। हमने उस फोटो को फ्रेम करवाकर पूज्य गुरूजी की गोदी में रख दिया। बहुत देर तक गुरूजी इस फोटो पर चारों तरफ हाथ फेरते रहे और पूछा कि हम इस फोटो को कहां लगायेंगे। गुरूजी अच्छी तरह जानते थे कि जैन लोग मिथ्यात्व की चर्चा बहुत करते हैं और अपने तीर्थंकरों और साधु संतों के अलावा सभी को मिथ्यात्व पूजने वाला मानते हैं। शायद यही बात हमारे मन में भी हो, यही सोचकर गुरू जी बोले कि आप इतनी बड़ी फोटो को कहां लगायेंगे ? हमने पूज्य गुरूजी से कहा कि आप आज्ञा दें वहीं इसको लगायेंगे। तब गुरूजी बोले-आप अपने फ्लैट के बड़े हाल में इसको टांग दीजिये और आपसे कभी भी , कोई भी यह

जानकारी नहीं मांगेगा कि यह फोटो किसका है। आप पर मिथ्यवादी होने का आरोप कोई नहीं लगा सकेगा। आज इस घटना को लगभग 15 वर्ष बीत चुके हैं और यह बात सत्य सिद्ध हुई है कि किसी भी व्यक्ति ने '' किसका फोटो है ''? यह कभी नहीं पूछा। बल्कि अब हम स्वयं ही हमारे पूज्य गुरूजी का चित्र हैं , बोलकर परिचय देने लगे हैं।

भोपाल प्रवास के दौरान श्री बुआ साहब शिन्दे ने अनुरोध किया कि चिकित्सा की दृष्टि से रायपुर का प्रस्ताव नहीं जमा , अत: ग्वालियर का ही प्रयास किया जावे , क्योंकि सभी मेडिकल सुविधायें वहां उपलबध हैं। इसके लिये आदरणीय बुआ साहब ने रहने ठहरने के अलावा सभी तरह की सुविधायें देने का आश्वासन दिया था , पर यह भी कभी सम्भव नहीं हुआ, जिसका कारण गुरूजी बेहतर जानते होंगे।

पूज्य गुरूजी के साथ 7 वर्षों में लगभग 40 हजार किलोमीटर की थी और इस दौरान कभी कोई खराबी कार में नहीं आई और न ही कभी कार का पहिया पंचर हुआ क्योंकि गुरूजी को यह मालूम था कि उनके ड्रायवर को न पहिया बदलना आता है और न अन्य किसी तरह का ज्ञान कार के संबंध में है। कार द्वारा इस लम्बे सफर में हमें इस बात का आभास रहता था कि गुरूजी के साथ रहने से कभी कोई परेशानी नहीं होगी और जरूरत पड़ने पर आवश्यक मदद भी मिल जायेगी , क्योंकि वे मानव शरीर में साक्षात परमेश्वर और वीतरागी थे , जो उनके साथ सफर के दौरान अनेकों घटनाओं से प्रमाणित हो चुका है। पर धन्य हैं गुरूजी! जो हमेशा इस दौरान कहते थे ''आप साथ रहते हैं तो हमें कोई चिन्ता नहीं ''। हमारे तमाम जन्मों का पुण्यफल था जो हमें और हमारे पुत्र राजेश को भी अनेकों बार साक्षात परमेश्वर को उनके शिष्यों के द्वार पर ले जाकर अपने अपने जीवन को धन्य करने का अवसर मिला। ऐसे महान गृहस्थ संत और योगी के द्वारा पूरे परिवार को शिष्यत्व देना अपने आप में भाग्योदय का प्रतीक है जो निश्चय ही अनेकों जन्मों का पुण्य उदय होने पर सम्भव होता है। उनका इतना सामीप्य पाना भी उनकी ही कृपा है। धन्य हैं! करूणामयी मूर्ति पूज्य भगवान वासुदेव जी , जिन्होंने हमारा जीवन कृतार्थ कर

दिया। हम और हमारे समस्त परिवार का रोम रोम उनका ऋणी है और परम पूज्य की दया और करूणा के कारण ही आज हम सुखी और सम्पन्नता का जीवन यापन करते हुए हर पल उस विराट , महान, सरल, ममतामयी एवं वात्सल्य की मूर्ति को याद करते हैं, जो जन्म से ही योगी और मात्र ''अपनों'' का कल्याण करने मां की कोख से अंतिम बार अवतरित हुए थे।

23 जुलाई 1997 के गुरूपर्व के बाद पूज्य गुरूजी भोपाल में विराजमान रहे और हम सभी को उनका सामीप्य मिला जो हमारे जीवन का बहुमूल्य समय था। तदुपरांत हम अपने परिवार के साथ गुरूजी को लेकर 30-31 अगस्त 1997 को मुंगेली निकले थे। स्वयं गुरूजी की एवं पूज्य गुरूजी के साथ कार यात्रा का यह अंतिम अवसर था। रास्ते में जो कुछ हुआ और मुंगेली आश्रम पहुंचकर पूज्य गुरूजी के सानिध्य में हमने जो कुछ देखा-सुना उसे हम अपने हृदय की गहराईयों से बाहर लाकर अपनी और पूज्य गुरूजी की उस पीड़ा को बांटना नहीं चाहते। आज तक पूज्य गुरूजी के साथ जितनी यात्रायें हुईं उसमें कभी कभी हमारा पुत्र राजेश साथ रहा है। भोपाल की गुरूपूजा के बाद हमारा पूरा परिवार भी गुरूजी को विदा करने गये और ऐसा संयोगवश ही हुआ।

यह मात्र गुरूजी ही जानते होंगे कि यह उनका कार यात्रा का अंतिम सफर हमारे साथ हुआ था और हमारे पूरे परिवार को उन्होंने अंतिम विदाई का यह पुण्य अवसर देकर परिवार के सभी सदस्यों को कृपापात्र बनाया था। हमारा परिवार ऐसे सद्गुरू को प्राप्त कर अपने को सौभाग्यशाली मानते हुए, उन्हीं के चरणों में साधनारत रहने की विनम्र प्रार्थना करते हैं और गुरू कृपा से ऐसा हो रहा है।

गुरूजी का स्वास्थ्य निरंतर गिर रहा था क्योंकि उनका शरीर अपने अनेकों शिष्यों की व्याधियों को अपने में समेट चुका था। 1997 की गुरू पूजा का भोपाल में आयोजन भी तय हो चुका था। गुरू जी को भोपाल लाने की योजना हम निरंतर बना रहे थे और यह भी ज्ञात था कि गुरूजी को लाना कठिन होगा। श्री जे. के. जैन ने एम्बेसडर कार इस ढंग से तैयार की कि गुरूजी सोते हुए कार से आ सकें। डाक्टर

अरविन्द चैहान को साथ लेकर मुंगेली पहुंचकर उन्होंने देखा कि गुरूजी अधिक अस्वस्थ हैं और मुंगेली के डाक्टर अग्रवाल ने उन्हें सफर न करने की सलाह दी थी। गुरूजी ने हमें फोटो से पूजा करने की सलाह दी परन्तु उनके मनोभाव से यह लगा कि गुरूजी स्वयं भोपाल आना चाहते थे।

डाक्टर अरविन्द को लेकर श्री जे. के. जैन ने डाक्टर अग्रवाल के घर जाकर सारी चर्चा की तथा उनसे अनुरोध किया कि जो भी टेस्ट जिस किसी इंस्ट्रूमेंट से आपने किये हैं, क्या उनसे और अधिक श्रेष्ठ इन्स्ट्रूमेंट से आप फिर से गुरूजी के शरीर का परीक्षण कर सकेंगे? डाक्टर साहब उनकी बात मान गये और फिर से परीक्षण करके मदद करने का आश्वासन दिया। शाम को तथा रात में डा. अग्रवाल ने फिर से गुरूजी के शरीर का परीक्षण किया तथा बताया कि उन्हें आराम से ले जाने में सफर में कोई खतरा नहीं होगा। अन्धा क्या चाहे-दो आंखें? यही हाल श्री जैन तथा डाक्टर अरविन्द का था। यह सुनकर गुरूजी के चेहरे पर जो खुशी के भाव देखे गए उन्हें शब्दों में व्यक्त करना सम्भव नहीं है। गुरूजी ने अशोक भैया को आवाज दी और कहा कि डाक्टर साहब ने चलने की इजाजत दे दी है-चलो।

अशोक भैया सहित बड़े आराम से कार में लेटाकर पूज्य गुरूजी को मुंगेली से लेकर यह दल रवाना हुआ। चिल्पीघाटी पर होटल के सामने गाड़ी रोककर गुरूजी को जल पान कराया। इस सफर में श्री जैन व डा. अरविंद ने अनुभव किया कि गुरूजी का स्वास्थ्य, जैसा वे चाहें , उसी अनुरूप हो जाता है। उनका बड़ा अनुग्रह हम भोपालवासियों पर है जो 23 जुलाई 1997 का अंतिम पर्व उनके शरीर में रहते हुए भोपाल में मनाया गया था। ऐसा लगा मानो पूज्य गुरूजी ने भोपालवासियों की अनर्तआत्मा की आवाज सुनकर ही अपने स्वास्थ्य की दिशा बदल दी थी।

पूज्य गुरूजी की सशरीर उपस्थिति में 23 जुलाई 1997 का गुरू पर्व अंतिम था जो उनकी दिव्य शक्तियों और उनके ही दृढ़ संकल्प और भोपालवासियों के प्रति उनका अनुराग का प्रतीक (ऐसा हम मानते हैं) बनकर मनाया गया था , जिसकी प्रशंसा पूज्य सद्गुरू ने स्वयं भी की थी। सभी शिष्य परिवार के लोगों के प्रति गुरूजी का

अनुराग समान था और एक साथ गुरू पर्व के मंच से जहां तक हमारी जानकारी है पूज्य गुरू जी से 101 परिवार दीक्षित हुए थे जिसमें समस्त शिष्यों की संख्या सपरिवार 146 थी। सामूहिक दीक्षा का यह प्रथम और अंतिम अवसर था। इसके बाद गुरूजी द्वारा उनके परिवार में अन्य कोई सम्मिलित नहीं किया गया।

पूज्य गुरूजी की स्वीकृति मिलने के बाद इस कार्यक्रम को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिये विभिन्न समितियां बनाई गईं थीं। भोपाल बड़ा शहर होने से व्यवस्था करना आसान नहीं था। श्री जे. के. जैन एवं परिवार श्री डी. एस. राय , श्री दिलीप मराठे, श्रीमती सुलभा माकोड़े एवं परिवार, श्रीमती प्रतिभा गुर्जर, श्री नेपाल सिंह एवं परिवार, श्री चन्द्र भूषण शर्मा , श्री बसंत राठौर , श्री कृष्णा कराडे आदि ने आवास वाहन एवं भोजनयवस्था, कार्यक्रम स्थल की सज्जा आदि का भार सम्हाला था। कार्यक्रम रविशंकर नगर स्थित माध्यमिक शिक्षा मण्डल के हाल में किया गया था। 21 जुलाई 1997 से भोपाल में तेज पानी बरस रहा था परन्तु गुरूजी की कृपा से चमत्कारिक रूप से बरसात 22-07-97को दोपहर बाद बन्द रही और कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद ही 24-07-1997 को बरसात पुन: शुरू हुई। गुरू पर्व को मनाने के लिये पूज्य गुरूजी को एक चल समारोह के रूप में श्री जैन साहब के निवास से कार्यक्रम स्थल तक लाया गया। इस चल समारोह में लगभग 15 वाहन शामिल थे।

गुरू पूजन एवं दीक्षा कार्यक्रम के अलावा संध्या का कार्यक्रम आदरणीय रिटायर्ड चीफ जस्टिस एवं मानव अधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री सोहनी साहब की अध्यक्षता में नव निर्मित आरती गायन से शुरू किया गया था। पूज्य गुरूजी का सम्बोधन एवं आशीष वचन आगे दिया गया है। इस महान पर्व पर सदगुरू की आरती ''एक अमरत्व कृति'', स्तुति वन्दन और गुरू नगरी की महिमा का उल्लेख करना प्रासंगिक होगा।

अ. सद्गुरू की आरती - एक अमरत्व कृति

गुरूजी के शिष्य राजू काण्णव को याद करना आवश्यक होगा क्योंकि वे काफी विचलित थे और उनके मन में इस बात की पीड़ा थी कि इस महान योगी को रोज स्थूल रूप से स्मरण करने हेतु कोई विधि नहीं है। अत: श्री घुसे साहब नागपुरवाले , जिन्हें गुरूजी ने 1996 के नागपुर प्रवास के दौरान ही इस जन्म में मुक्त होने का आशीष दिया था , से राजू काण्णव ने उन्हें गुरूजी की आरती लिखने का अनुरोध किया। श्री घुसे जी ने कहा कि वे कोई लेखक या कवि नहीं हैं और बिना गुरूजी की प्रेरणा के और बिना उनके मार्गदर्शन के यह महान कार्य सम्भव नहीं होगा। यह बात भी राजू द्वारा जब गुरूजी तक पहुंचाई गई तब पूज्य गुरूजी ने कहा कि इस अमरकृति का निर्माण श्री घुसे द्वारा ही होगा और यह रचना अमर होगी-ऐसा आशीष भी मिला।

यहां श्री घुसे साहब का परिचय देना आवश्यक होगा-श्री श्रीधर सीताराम पंत घुसे। नागपुर निवासी घुसे साहब से गुरूजी के शिष्य राजू काण्णव हमेशा चर्चा किया करते थे। घुसे साहब भी वर्धा में तकवाले जी के यहां गुरूजी से मिल चुके थे और उन्हें सभी धर्म के लोगों को ईश्वर का सानिध्य दिला देने वाले योगी मानते थे। श्री घुसे संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान एवं व्याकरणाचार्य हैं और उन्होंने अपने गुरू से हमारे सद्गुरूजी से आध्यात्मिक चर्चा और मार्गदर्शन की जिज्ञासा के लिये आज्ञा मांगी तो उन्होंने बताया कि अवश्य उनके पास जावें-वे तो जन्मसिद्ध योगी हैं।

23 जुलाई 1997 के कार्यक्रम की पत्रिका जैसे ही श्री घुसे जी को मिली , वह एक विशिष्ट ध्यान अवस्था में पहुंच गये। यही वह क्षण था जब उन्हें इस अमर कृति को रचने का संदेश और प्रेरणा गुरूजी द्वारा दी गई और वर्तमान आरती के 4 छन्द उन्होंने लिख लिये। इसके आगे उन्हें कुछ समझ नहीं आया कि आगे क्या लिखा जाये। तब गुरूजी को याद करते हुए उनके मन में आया कि हमने गुरूजी से कुछ मांगा नहीं है। इसके बाद ही आरती के अन्तिम 2 छन्दों की रचना गुरूजी की प्रेरणा से श्री घुसे जी ने की थी। इस अमर कृति को , भोपाल, जहां गुरूजी विराजमान थे , भेजा गया। उसका श्री घुसे द्वारा लिखित आरती का पन्ना श्री जे. के. जैन को गुरूजी

ने दिया तथा तत्काल उसका फ्रेम बनवाने का आदेश दिया जो आज भी उनके पास सुरक्षित है। 9 जुलाई 1997 को रचित यह आरती पूज्य गुरूजी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को प्रकट करती है और आज उसकी धुन और सत्य के पुजारी की महिमा का वर्णन चिरकाल तक इस महान योगी की गाथा के रूप में हम सभी को प्रेरणा देती रहेगी और स्वयं को सौभाग्यशाली होने का आभास कराती रहेगी। किसका है। आप पर मिथ्यवादी होने का आरोप कोई नहीं लगा सकेगा। आज इस घटना को लगभग 15 वर्ष बीत चुके हैं और यह बात सत्य सिद्ध हुई है कि किसी भीं व्यक्ति ने ''किसका चित्र हैं ? यह कभी नहीं पूछा। बल्कि अब हम स्वयं ही हमारे पूज्य गुरूजी का चित्र हैं, बोलकर परिचय देने लगे हैं।

भोपाल प्रवास के दौरान श्री बुआ साहब शिन्दे ने अनुरोध किया कि चिकित्सा की दृष्टि से रायपुर का प्रस्ताव नहीं जमा , अत: ग्वालियर का ही प्रयास किया जावे , क्योंकि सभी मेडिकल सुविधायें वहां उपलबध हैं। इसके लिये आदरणीय बुआ साहब ने रहने ठहरने के अलावा सभी तरह की सुविधायें देने का आश्वासन दिया था ,पर यह भी कभी सम्भव नहीं हुआ, जिसका कारण गुरूजी बेहतर जानते होंगे।

पूज्य गुरूजी के साथ 7 वर्षों में लगभग 40 हजार किलोमीटर की यात्रा की थी और इस दौरान कभी कोई खराबी कार में नहीं आई और न ही कभी कार का पहिया पंचर हुआ क्योंकि गुरूजी को यह मालूम था कि उनके ड्रायवर को न पहिया बदलना आता है और न अन्य किसी तरह का ज्ञान कार के संबंध में है। कार द्वारा इस लम्बे सफर में हमें इस बात का आभास रहता था कि गुरूजी के साथ रहने से कभी कोई परेशानी नहीं होगी और जरूरत पड़ने पर आवश्यक मदद भी मिल जायेगी , क्योंकि वे मानव शरीर में साक्षात परमेश्वर और वीतरागी थे,जो उनके साथ सफर के दौरान अनेकों घटनाओं से प्रमाणित हो चुका है। पर धन्य हैं गुरूजी! जो हमेशा इस दौरान कहते थे ''आप साथ रहते हैं तो हमें कोई चिन्ता नहीं''।

हमारे तमाम जन्मों का पुण्यफल था जो हमें और हमारे पुत्र राजेश को भी अनेकों बार साक्षात परमेश्वर को उनके शिष्यों के द्वार पर ले जाकर अपने अपने जीवन को

धन्य करने का अवसर मिला। ऐसे महान गृहस्थ संत और योगी के द्वारा पूरे परिवार को शिष्यत्व देना अपने आप में भाग्योदय का प्रतीक है जो निश्चय ही अनेकों जन्मों का पुण्य उदय होने पर सम्भव होता है। उनका इतना सामीप्य पाना भी उनकी ही कृपा है। धन्य हैं! करूणामयी मूर्ति पूज्य भगवान वासुदेव जी, जिन्होंने हमारा जीवन कृतार्थ कर दिया। हम और हमारे समस्त परिवार का रोम रोम उनका ऋणी है और परम पूज्य की दया और करूणा के कारण ही आज हम सुखी और सम्पन्नता का जीवन यापन करते हुए हर पल उस विराट, महान, सरल, ममतामयी एवं वात्सल्य की मूर्ति को याद करते हैं , जो जन्म से ही योगी और मात्र "अपनों" का कल्याण करने मां की कोख से अंतिम बार अवतरित हुए थे। हमारा परिवार ऐसे सद्गुरू को प्राप्त कर अपने को सौभाग्यशाली मानते हुए, उन्हीं के चरणों में साधनारत रहने की विनम्र प्रार्थना करते हैं और गुरू कृपा से ऐसा हो रहा है।

जय जय जय गुरूजी

आपकी चरण रज - चन्दा

शिष्यानुभव

‘ ईश्वर हरदम हमारे साथ रहता है,
जब महान विपदाओं में हम खुद को अकेले पाते हैं,
तब ईश्वर हम में होता है ‘

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में कोटि –कोटि प्रणाम्।

परम पूज्य श्री गुरूजी के युगल चरणों में प्रणाम कर उन्ही की कृपा से अपनी स्वानुभूति लिखने का प्रयास कर रही हूँ । मेरे परिवार (मैं, मेरे पति व 2 बच्चे) के सभी सदस्यों को स्वयं परम पूज्य गुरूजी द्वारा दीक्षा बिलासपुर के गुरूपर्व के समय 22 जुलाई 87 को प्रदान की गई थी । उस समय हमारा परिवार अनेकों परेशानियों से घिरा हुया था । परम पू. गुरूजी से दीक्षा के उपरान्त, उनके सिर्फ दर्शन मात्र से हमने अपने जीवन में असीम सुख शांति का अनुभव किया । ऐसा महसूस हुआ मानों परेशानियों के सागर में डूबते हुये मनुष्य को जीने का आधार मिल गया हो । हम सभी के सौभाग्य से पूज्यनीय डॉ. शिंदे दीदी का स्थानान्तरण भोपाल हो गया । उनकी वजह से परम पूज्य गुरूजी के दर्शन लाभ का सानिध्य और अधिक समय के लिये तथा जल्दी –जल्दी मिलने लगा । आज लग रहा है कि हम कितने भाग्यशाली हैं। पू. गुरूजी कितने धैर्य व प्यार से हमारे दुख–दर्द सुनते रहते थे। इस तरह उनके सानिध्य में घन्टो समय निकल जाता था और पता भी नही चलता था। कभी–कभी जब पू. गुरूजी विश्राम करते रहते, उस समय मौन रहकर उनके पास बैठने से कितनी आत्मिक शांति व अपार आनन्द का एहसास होता था। यह पू. गुरूजी की दिव्य उर्जा का प्रभाव था, जो अविरल गति से सतत प्रवाहित होती रहती थी और हम सभी उसमें डूबे रहते थे। यह सब बातें, आज समझ में आ रही है । आज हम सबको दुख होता है कि उस समय हम कितने

अज्ञानी थे और अपने ही काम–धंधे में खोये रहते थे। आज हमारे पास सिर्फ पश्चाताप के शिवाय कुछ भी नही है । आज बारंबार यही आदरणीय राजेन्द्र जैन जी (जीजा जी) का भजन याद आता –

''गुरूजी आ जाओ इक बार, गुरू आ जाओ, आ जाओ ।
मेरे मन की प्यास बुझा जाओ, दर्शन दे दो, एक बार ।। ''

हमारे पू. गुरूजी के जैसा इतना लंबा आशीष कभी किसी ने नहीं दिया, न हमने किसी के मुख से सुना तथा वह आशीष अक्षरशः फलित होता था, उस आशीष में घर, बच्चे, धन–धान्य, आध्यात्म सभी कुछ सम्मिलित रहता था। आज सब कुछ याद आ रहा है । पू. गुरूजी कहा करते– संबंध बना रहे, तब इसका अर्थ समझ नहीं आता था । पर आज ऐसा लगता है इस आशीष द्वारा पू. गुरूजी का कहना था कि हम सब जैसे भी है, पर सभी एक मोती की माला मे पिरोये हुये मनकों की तरह आपस में जुड़े रहे और उस पथ पर चले जो हमारे प्रिय श्री गुरूजी ने दिया है, तभी हमारा जीवन सार्थक होगा तथा जिससे हमारे गुरूजी की यश–कीर्ति चारों दिशाओं में प्रकाशित हो और हम स्वयं अपना एवं जन मानस के कल्याण में सहभागी बन सकेंगे। ''ईश्वर अपनी महती कृपा से दिनों दिन हमारे जीवन में वृद्धि करते हैं, इसलिये नहीं कि आपको इसकी जरूरत है बल्कि किसी अन्य को आपकी प्रतिदिन जरूरत है'' ।

न किस्सों में, न किश्तों में ।
जिंदगी की खूबसूरती है, रिश्तों में ।।

एक दिन हम और आप सिर्फ एक ''याद'' बनकर रह जायेगें, इसलिये कोशिश कीजिये ''याद'' अच्छी बनी रहे । परम पूज्य गुरूजी से आज्ञा लेकर उनकी प्रेरणा से कुछ लिखने का साहस किया है । अगर कुछ गल्तियॉ हो तो क्षमा प्रार्थी

हूं । अगर कुछ बुरा है, वह मेरा है और जो कुछ अच्छा है, वह सब परम पूज्य गुरूजी का प्यारमय आशीष है । परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में कोटि –कोटि नमन ।

श्री गुरू चरणों में

मणी जैन भोपाल

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में कोटि –कोटि नमन।

मैं सन् 13/4/2003 में दीक्षित हुआ। घ्यान क्यों और कैसे करू ? उस विषय में मुझे कुछ भी पता नहीं था। गुरूजी शिष्यों पर अपनी आध्यात्मिक ऊर्जा संचारित करते हैं और जिसके कारण हमारे शरीर के अन्दर प्रतिक्रिया के रूप में कुछ हलचल होती है। इसका मुझे सिर्फ किताबी ज्ञान था।

मैं दीक्षा ग्रहण करनें के बाद वर्धा आश्रम जाता रहा। वहॉ पर समय–समय पर गुरू बन्धुयों द्वारा बहुत अच्छा कार्यक्रम आयोजित किया जाता था। उससे बड़ा ही ऑतरिक सुख मिलता था। मेरे गुरू भाई श्री दीपक हरदास जी के यहॉ सप्ताह में एक दिन गुरूजी का सत्संग होता था। मुझे भी वहॉ जाने का अवसर मिला। मै 2014 से लगातार सत्संग में जा रहा हूॅ। मैं पूज्य0 गुरूजी की लीला और कृपा का बखान करने में असमर्थ हूॅ।

मैं और मेरा परिवार ईंझापुर गॉव में मेरे बडे भाई द्वारा र्निमित घर में रहते हैं। वह घर करीब 20 वर्श से खाली पडा था। उसमें कोई रहने को तैयार नहीं था। वहॉ पर लाईट भी नहीं थी। बडे भाई साहब किसी को रहने की अनुमति नहीं देते थे। उनके निधन के बाद मैने वहॉ रहने की कोशिश की, परन्तु कोशिश व्यर्थ रही। कुछ लोगों की सलाह पर वहॉ सुन्दरकाण्ड का पाठ करवाया, रामायण करवायी। मेरे अन्दर का डर खतम हो गया। कुछ लोगों ने वहॉ गुरूजी का सत्संग करवाने

की सलाह दी और वहॉ पर गुरूजी का सत्संग भी होने लगा। एक दिन हमारी एक गुरू बहन वहॉ हाल में अभ्यास करने बैठी थी। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे नीचे के तलघर से कोई शक्ति उन्हें ऊपर की ओर पूरी शक्ति के साथ घक्का दे रही है और ऐसा भी महसूस हो रहा था कि वह शक्ति छत फाड़कर ऊपर आ जायेगी। इतने में परम पूज्य0 गुरूजी उन्हें सीढियों पर ऊपर चढते हुये दिखे और गुरूजी एक हाथ मे घोती पकड़े हुये, उस आसन पर जो परम पू0 गुरूजी के विराजमान होने के लिये सजाया गया था, गुरूजी पूरी ताकत के साथ उस आसन पर धम्म से जा बैठे और गुरूजी ने उस शक्ति को जो छत फाड़कर ऊपर आना चाहती थी। गुरूजी ने अपनी शक्ति से पूरी तरह से नीचे दबा दिया। फलस्वरूप गुरूजी का रंग कुछ क्षण के लिये नीला पड़ गया। उस गुरू बहन ने बतलाया कि यहॉ पर किसी आत्मा का निवास था अब परम पूज्य0 गुरूजी की कृपा से सब कुछ ठीक हो गया है और उस आत्मा को भी अब छुटकारा मिल गया और अब आप सभी र्निभय होकर यहॉ रह सकते है। तब से हम सभी यहीं रह रहे हैं।

मेरे घर के प्रॉगण में हनुमान जी का मंदिर है। हम लोग हर मंगलवार कों सुन्दरकाण्ड का पाठ करते हैं। मैं मंजीरा बजाकर गाकर कभी कभी दिन में 2–3 बार सुन्दरकाण्ड का पाठ कर लेता था। परम पू0 गुरूजी का कार्य जिस तरह से साकार रूप में चल रहा है। उसी तरह का गुरूजी का कार्य निराकार रूप में भी चल रहा है। एक दिन मेरी गुरू बहन के माध्यम से परम पू0 गुरूजी का एक संदेशा प्राप्त हुआ कि आप सुन्दरकाण्ड का पाठ करना अब बन्द कर दे। मैने यह आदेश सहर्ष स्वीकार कर सुन्दरकाण्ड के पाठ की जिम्मेदारी अपने मित्रों को सौप दी। इस घटना के चार दिन बाद मेरे एक हाथ की बाजू मे बहुत जोर का दर्द होने लगा और मैं हाथ भी नही उठा पा रहा था। मैनें उसे हल्के मे लिया और दूसरी रात्रि में दूसरे हाथ में भी दर्द होने लगा। मैं घबरा गया क्योकि दो दिन पहले लॉक डाउन शुरू हो गया था। सभी दरवाजे बन्द हो चुके थे। मैने डा0 साहब को फोन कर अपनी समस्या बताकर समाधान प्राप्त किया, दवा लेने पर कुछ भी लाभ नहीं हुआ। दर्द के कारण मै बेचैन हो गया और किसी भी समय सो नहीं पा रहा था। फिर मैं गुरूजी की प्रतिमा के पास बैठ कर प्रार्थन करता और फिर आधे घन्टे के लिये सो जाता। ऐसा ही क्रम 3 दिन लगातार चला। परम पू0 गुरूजी की कृपा से दर्द कुछ कम हुआ। लॉक डाउन हटने पर मैनें 6 हफ्ते फिजियोथेरैपी करवाई,

उससे भी कोई आराम नहीं मिला फिर डा0 साहब से मिला, उन्होने एम आर आई नागपूर में करवाने की सलाह दी लेकिन दूसरे ही दिन मेरा हाथ ऊपर उठने लगा। तब डा0 ने कहा कि अब आपको एम आर आई करवाने की आवश्यकता नहीं है। 14 दिन बाद कहा कि अब आप नियमित रूप से व्यायाम कर सकते है। ठीक होने में 6 माह लग सकते है।

इतनी तकलीफ के बाबजूद मैने अभ्यास नहीं छोड़ा, निरन्तर जारी रखा। इसका फायदा यह हुआ कि मैं दो महीने में पूरी तरह से ठीक हो गया। डा0 साहब को मेरे ठीक होने पर बहुत आश्चर्य हुआ। जिस स्थिति में तुम मेरे पास आये थे तुम्हें तो पैरालाइज/लकवा हो जाना चाहिये था। आप बहुत भाग्यशाली हो आपके गुरूजी ने आपको बचा लिया। मेरे घर के सभी सदस्य गुरू परिवार सें जुडे हैं। हमारे धर नित्य परम पू0 गुरूजी की मानसिक पूजा, आरती एवं अभ्यास होता हैं। परम पू0 गुरूजी की कृपा से हमारे सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक कार्य सफल हेा रहे है और हमारी साधना में परम पू0 गुरूजी के साकार और निराकार रूप का सतत् मार्गदर्शन मिल रहा है। जय जय जय गुरूजी

आपका रामजी रामनारायण साहू
ईंझापुर , वर्घा , महाराष्ट्र

ॐ श्री सद्गुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों मे कोटि –कोटि प्रणाम्।

मेरी दीक्षा 14 फरवरी सन् 2019 को परम पूज्य गुरूजी की समाघि स्थली पर शिवपुर आश्रम मुंगेली में हुई। मुझे परम पूज्य गुरूजी द्वारा बताई गई ध्यान सम्बन्धी सभी बातों से अवगत कराया गया। उसी पद्धति से मैनें अपना अभ्यास प्रारम्भ कर दिया। फलस्वरूप गुरूजी की कृपा से अनुभव आना प्रारम्भ हो गये।

1.–एक बार घ्यान में मुझे मेरे स्वयं की काले रंग की आकृति दिखी। वह मेरे सामने बैठी थी। उसकें अन्दर एक और दूसरा शरीर दिखाई दिया ।

2–.इस शरीर (दूसरे शरीर) के मूलाधार से सुनहरा प्रकाश अनेक चक्रों को पार करता हुआ सहस्त्रार तक पहुॅच रहा था ।

3–.अब वह प्रकाश मेरूदण्ड के एक एक मनके /वरटिब्री को प्रकाशित करता हुआ ऊपर की ओर चढता हुआ दिखाई दे रहा था।

4 अब यह सुनहरा प्रकाश मूलाधार से सहस्त्रार के बीच एक सुनहरे गोलाकार रूपं में दिखाई देने लगा।

5–.मूलाधार से सहस्त्रार के बीच प्रकाश के ऊपर चढने की प्रक्रिया की पुनरावृत्ति लगातार जारी रही और यह सुनहरा प्रकाश बार –बार गोलाकार रूप में दिखाई देने लगता। इस तरह प्रकाश के बार–बार गोलाकार रूपं में परिवर्तित होने के कारण मुझे प्रकाश का प्रारम्भिक बिन्दु और अन्तिम बिन्दु समझ में नहीं आ रहा था कि प्रकाश कहॉ से प्रारम्भ हो रहा है और कहॉ पर अन्त।

6–.मेरूदण्ड का प्रत्येक मनका पूरी तरह से गोल्डेन प्रकाश के साथ ऊपर चढता हुआ दिखाई दे रहा था।

7–.ध्यान की इस प्रक्रिया के दौरान मेरा मन पूर्णतया विचार शून्य हो गया था। उस समय मुझे समय और स्थान का कोई भी भान नहीं था। अभ्यास के खतम होने के साथ वह प्रक्रिया समाप्त हो गई। किन्तु मेरा मन पूरी तरह से शान्त और प्रकाशित होता दिखाई दे रहा था और मै परम आनन्द में डूबा हुआ महसूस कर रहा था।

1/7/2019 को आषाढी एकादशी थी। हमारे घर पर सत्संग का कार्यक्रम रखा गया था। उस दिन मै सुबह 4 बजे अभ्यास कर रहा था। घ्यान में मुझे एक वरिष्ट गुरू भाई दिखे, जिनके घर से एक साधक गुरूजी की पादुका लेकर बाहर आये। फिर पादुका की जगह स्वंय परम पूज्य गुरूजी दृष्टिगत होने लगे और साथ में बातचीत करते हुये वरिष्ट गुरू भाई के साथ गेट तक आये और यह दृश्य अब अदृश्य हो गया और अब मुझे परम पूज्य गुरूजी हमारे ऑगन की सीढियों की रैलिगं पकडकर सीढियों से चढते हुये दिखे, जहॉ पर गुरूजी का आसन लगाकर रखा था, परम पूज्य गुरूजी उस आसन पर विराजमान हो गये। हमारे घर सत्संग 12 बजे दोपहर तक चला। उसके बाद सभी लोग घ्यान में बैठ गये फिर गुरूजी की आरती हूई उसके बाद सभी ने शान्ति मंत्र बोला। इसके बाद परम पूज्य गुरूजी

पुनः सभी को आशीष देते हुये दर्शन दिये। परम पूज्य गुरूजी की कृपा सतत् हम सभी पर बरस रही है। हमारी साधना में परम पू0 गुरूजी द्वारा उनके साकार और निराकार रूप का सतत् मार्गदर्शन मिल रहा है। जय जय जय गुरूजी

आपका ओंकार रामजी साहू ईंझापुर ,
वर्धा , महाराष्ट्र,

ऊॅ श्री सद्गुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों मे शत् शत् नमन।

मेरी दीक्षा सन् 2003 में हुई। मैं अपने पति के साथ वर्धा आश्रम गई थी । मेरा उद्देंश्य दीक्षा लेना नहीं था किन्तु पति के आग्रह करने पर मैने दीक्षा लेना स्वीकार किया, उस वक्त मेरे साथ दो और लोगो की भी दीक्षा हुई। एक दिन मैं अभ्यास में बैठी थी । मुझे परम पू0 गुरूजी के चरण कमल मिट्टी और धूल से सने दिखाई दिये और मैं उनके चरण कमल धोकर घर लाती हूॅ। मेरा घर खेत में बने होने के कारण घर के चारो ओर मिट्टी और धूल है। इस तरह से मुझे परम पू0 गुरूजी की कृपा से उनके दर्शन होते रहते है।

एक बार मेरे मन में विचार आया कि मुझे गुरूजी के चरणों की छाप लेकर रखनी चाहिये और जहॉ गुरूजी की पादुका रखते हैं वहॉ पर इसे भी रखना चाहिये। मुझे परम पू0 गुरूजी का दर्शन हुआ और मैनें कहॉ कि गुरूजी रूकिये और एक सफेद कपडा लाकर मैंने उनके चरणों के सामने बिछा दिया। परम पू0 गुरूजी ने कृपाकर उस पर अपने चरण कमल रख दिये जिस पर गुरूजी के चरणों की छाप बन गई। मैंने उस कपडे को सम्भालकर रख लिया । हमारे घर नित्य परम पू0 गुरूजी की मानसिक पूजा, आरती एवं अभ्यास होता हैं। जीवन का प्रत्येक कार्य उन्ही के नाम स्मरण से शुरू होता है। उनका सतत् मार्गदर्शन हमारे परिवार को मिलता रहा है। कभी कभी कई सॉपों के दर्शन, तो कभी परम पू0 गुरूजी के प्रकाश के साथ दर्शन होते हैं। जय जय जय गुरूजी /

आपकी कविता–रामजी साहू , ईंझापुर , वर्धा , महाराष्ट्र

ऊँ श्री सद्गुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों मे कोटि –कोटि प्रणाम्।

मेरी दीक्षा 14 नवम्बर सन् 2019 को स्वंय परम पूज्य गुरूजी द्वारा समाधि स्थली पर शिवपुर आश्रम मुंगेली में हुई। मुझे परम पूज्य गुरूजी द्वारा बताई गई ध्यान सम्बन्धी सभी बातों से अवगत कराया गया। उसी पद्धति से मैनें अपना अभ्यास प्रारम्भ कर दिया, फलस्वरूप गुरूजी की कृपा से अनुभव आना प्रारम्भ हो गये।

प्रथम अनुभव– एक दिन मैं अभ्यास में बैठा था कि मेरे ऑखों के सामने सुनहरा प्रकाश दिखा जिसके अन्दरं मुझे **'ऊँ'** के दर्शन हुये। थोड़ी देर बाद एक नीले रंग की मानव आकृति दिखाई दी, उसी देह में मुझे मूलाधार से लेकर सहस्त्रार तक के बीच के सारे चक्र दिखाई देने लगे। मै प्रत्येक चक्र के सभी रंगो को साफ–साफ देख पा रहा था।

मूलाधार चक्र ..... लाल रंग
स्वाधिष्ठान चक्र ..... पीला रंग
मणिपुर. चक्र ..... .केशरी रंग
अनाहत चक्र ..... .नीला रंग
विशुद्ध.. चक्र .... हरे रंग
आज्ञा चक्र ..... सुनहरे रंग
सहस्त्रार...चक्र..... जामुनी या बैगनी रंग का दिखाई देने लगा।

द्वितीय अनुभव– एक बार मुझे ध्यान में ऐसा लगा जैसे कि मेरे मस्तिष्क के अन्दर पूरा पानी भरा हुआ है फिर उसमें प्रकाश आया, फिर उसमें कमल का फूल खिल गया , फिर उसमे परम पू0 गुरूजी बैठे हुये दिखे।

तीसरा अनुभव– एक बार मै अभ्यास में बैठकर मानस पूजा कर रहा था और उसमें आरती करने के बाद मैं आरती देने लगा। इसके बाद आरती मैनें अपने घर में चारो तरफ घुमाई। इस दौरान मुझे मेरे घर की ईटों की दिवार दिखाई देने लगी और प्रत्येक ईटं पर **वासुदेव** लिखा दिखाई देने लगा। यह **वासुदेव लिखा अक्षर**

प्रकाशमय सुनहरे रंग का था । यह सब सद्गुरूजी की कृपा है कि हमारे घर के कण–कण में मेरे प्यारे गुरूजी का वास है। परम पूज्य गुरूजी की कृपा सतत् हम सभी पर बरस रही है। हमारी साधना में परम पू0 गुरूजी के साकार और निराकाररूप का सतत् मार्गदर्शन मिल रहा है। जय जय जय गुरूजी

आपका अर्जुन रामजी साहू
ईंझापुर , वर्धा , महाराष्ट्र

ऊॅ श्री सद्गुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों मे शत् –शत् नमन।

यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे परम पूज्य गुरूजी का सानिघ्य बचपन से मिला। जब मैं और मेरा छोटा भाई विजय कुपटकर छटवी–सातवीं में पढते थे। उसी समय परम पूज्य गुरूजी का शुभ आगमन टिकरापारा– बिलासपुर में श्री ठाकरे परिवार के यहॉ हुआ। हमारे माता –पिता परम पूज्य गुरूजी से दीक्षित थे। जिसके कारण हम सभी परम पूज्य गुरूजी के दर्शन के लिये प्रतिदिन श्री ठाकरे जी में यहॉ जाते और हमारी पूरी दोपहर परम पूज्य गुरूजी के सानिध्य में गुजरती थी। मैं, मेरा अनुज, ठाकरेजी का पुत्र मोहन और परम पूज्य गुरूजी का पौत्र नरेश, गुरूजी के साथ रहते और खेलते थे।

एक दिन गुरूजी ने हम सबको एक लाइन में अपने सामने बैठने को कहॉ, और कहा कि आज का दिन बहुत अच्छा है और कहा– कि जैसे मैं मंत्र बोलता हूॅ, वैसे तुम्हे भी मंत्र बोलकर दोहराना है। ऐसा कहकर परम पूज्य गुरूजी ने हम सबको मंत्र बताया और कहॉ– कि अभी ध्यान में नहीं बैठना। उसके बाद हम सबको पता चला कि गुरूजी ने हमें मंत्र बताकर दीक्षा दी है। हम सबके आनन्द का ठिकाना न रहा। जब भी परम पूज्य गुरूजी बिलासपुर आते, मै और मेरा अनुज, पिताजी के साथ गुरूजी को घर लानें के लिये गुरूजी के पास जाते। हमारे घर आने के साथ गुरूजी जल ग्रहण करते फिर विश्राम करते फिर हमारे साथ खेलते। यह प्रसंग आज भी हमारे सामने ताजा रहता है। परम पूज्य गुरूजी साक्षात ब्रह्म है, परम पिता

परमेश्वर है। हम सबके पालनहार है तारणहार है। परम पूज्य गुरूजी साकार एवं निराकार भी है।

अनुभव प्रसंग– मैं नागपुर में रहता हूॅ। मेरा कार्य क्षेत्र देवली जिला वर्धा है। एक बार जब मैं नागपुर से वर्धा जा रहा था तब भूलवश ऐसी ट्रेन में बैठ गया, जिसका स्टापेज वर्धा नहीं था। जब मुझे पता चला कि यह ट्रेन वर्धा में नही रूकेगी। मै थोड़ा घबराया फिर मैनें परम पू0 गुरूजी से प्रार्थना की। गुरूजी मेरे पास इतने पैसे भी नहीं हैं कि मैं अगले स्टेशन में उतरकर बस से वापस चला जाऊॅ। गुरूजी मुझे इस संकट से आप ही उबार सकते है। ट्रेन अपनी पूरी गति से जा रही थी और मैं गुरूजी से सतत् प्रार्थना कर रहा था। मेरे बाजू में बैठे यात्री कह रहे है कि यह ट्रेन कहीं नही रूकती। तभी अचानक वर्धा के आउटर पर ट्रेन की गति कम हो गई और सेवाग्राम के स्टेशन पर रूक गई और जल्दी से मैं ट्रेन से उतरा। स्टेशन मास्टर से ट्रेन रूकने का कारण पूॅछने पर पता चला कि आगे कुछ काम चल रहा है इसलिये ट्रेन रूकी थी। मेरी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। मैं कॉलेज न जाकर वर्धा आश्रम में गुरूजी के पास जाकर बैठ गया।

<u>दूसरा प्रसंग</u> –एक दिन ठंड के दिनों में मैं नागपूर से वर्धा बस से आया। मै कहीं भी जाता हूॅ परम पू0 गुरूजी को साथ लेकर चलता हूॅ। उस दिन ठंड ज्यादा होने के कारण मन ही मन गुरूजी से कह रहा था कि गुरूजी चलिये चाय पीते हैं। बस ऐसा सोचा ही था कि मेरे बगल में एक व्यक्ति की आवाज आई और मेरे कंधें पर हाथ रखकर बोला कि साहब– चाय पिलाओगे नहीं क्या ? आज ठंड कुछ ज्यादा है। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। तब मैनें उसे चाय पिलाई और कॉलेज जाने के लिये प्रस्थान किया। सोचा कि गुरूजी हम सबका कितना ख्याल रखते है। गुरूजी हर क्षण हर पल साथ में हैं। परम पू0 गुरूजी के साकार और निराकार रूप का सतत् मार्गदर्शन मिल रहा है। गुरूजी की लीला, उनकी महिमा अपरम्पार है। परम पूज्य गुरूजी की कृपा सतत् हम सभी पर बरस रही है।

जय जय जय गुरूजी

आपका अजय कुपटकर, नागपुर, महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

मैं सन् 14/11/2019 में प्रातः 9.30 पर गुरूजी की समाधि स्थली के सामने (शिवपुर आश्रम) बैठा और पू0 गुरूजी से दीक्षा प्राप्त करने की मानसिक विनती कर रहा था। तभी समाधि पर प0 पूज्य गुरूजी का दर्शन हुआ और उन्होने मुझे मंत्र बताकर दीक्षा प्रदान की। परम पूज्य गुरूजी ने मुझे पूजा एवं ध्यान सम्बन्धी सभी बातें बताई। मैं परम पूज्य गुरूजी की बताई गई पद्धति से अपना अभ्यास प्रारम्भ कर दिया जिसके फलस्वरूप गुरूजी की परम कृपा से अनुभव आना प्रारम्भ हो गये।

दि0 20/2/2020 महाशिवरात्रि के दिन, भाम 5 बजकर 10 मि0, (पुणे, महाराष्ट्र) प्रत्येक दिन की तरह मैं अपने दिनचर्या में व्यस्त था तभी अचानक मेरी ऑखों के सामने अँधेरा आ गया और उसी क्षण एक सुनहरे रंग का डी0 एन0 ए0 / DNA दिखा। वह सुन्दर मणियों का बना था और प्रत्येक मणि से सुनहरा प्रकाश निकल रहा था। थोड़ी देर के बाद यह दृश्य ओझल हो गया।

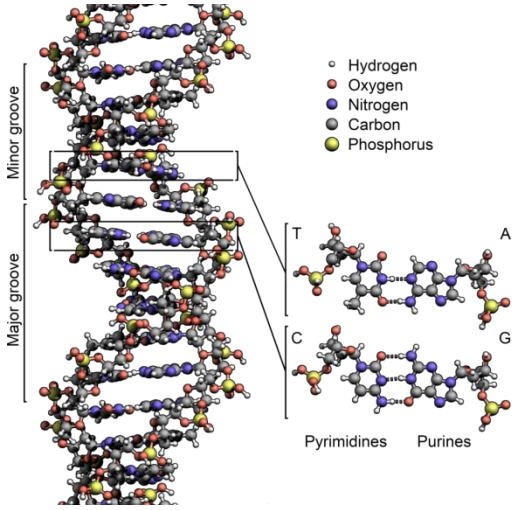

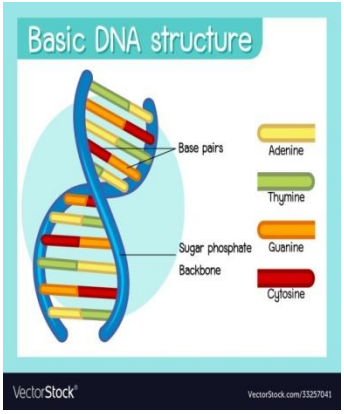

दि0 31/3/2020 / चैत्र नवरात्रि सप्तमी को शाम 7.50 पर मैं गुरूजी का नाम स्मरण करते हुये ध्यान कर रहा था। तभी परम पू0 गुरूजी ने मुझे मृत्यु केन्द्र पर साधना के दौरान साधक पर होने वाले शारीरिक प्रभाव का अनुभव कराया ।

उस दौरान –

1 मेरे स्वास – प्रश्वास की गति बहुत धीमी हो गई, दम घुटने जैसा लग रहा था।

2. मेरे हृदय की धडकन भी कम हो गई थी।

3. शरीर भारी हो गया था।

4. मेरे मुख के जबडों में जोरो की जकडन, असहनीय दर्द के साथ हो रही थी।

5. ऐसा लग रहा था कि मेरी मृत्यु हो जायेगी।

तब मैंने परम पू0 गुरूजी से विनती की कि गुरूजी बहुत ही असहनीय प्राणलेवा दर्द हों रहा है, गुरूजी इससे उबारिये फिर प0 पूज्य गुरूजी की कृपा से सब कुछ सामान्य हो गया।

उसके बाद गुरूजी के विराट स्वरूप का दर्शन हुआ।

परम पू0 गुरूजी का विराट स्वरूप

परम पू0 गुरूजी पहले भवेत प्रकाश में बदल गये और उनकी उचॉई– 92 फीट से भी अधिक हो गई और बाद में परम पू0 गुरूजी से भवेत प्रकाश बाहर निकलने लगा और पूरा कमरा प्रकाश से भर गया और उस प्रकाश की तीव्रता अधिक होती जा रही थी। थोडी देर में वह प्रकाश सवर्त्र फैल गया और सब कुछ स्वेत प्रकाशमय हो गया। बाद में गुरूजी उस प्रकाश को घीरे– धीरे कम करते हुये अपने मूल स्वरूप में आ गये। परम पू0 गुरूजी की कृपा से उनके साकार और निराकार रूप का सतत् मार्गदर्शन मिल रहा है।

दि0 30/3/2020, प्रातः 9.30 मैं गुरूजी का नाम स्मरण करते हुये ध्यान कर रहा था। तभी एक सुनहरा समुद्र दिखा जिसकी सुनहरे रंग की लहरे समुद्र में हिलोरे ले

रही थी और सवर्त्र सुनहरा प्रकाश फैला हुआ था। तभी समुद के मध्य में परम पू0 गुरूजी अर्धपद्मासन में बैठे हुये मुझे दर्शन दिये। जय जय जय गुरूजी

आपका दिव्येश कुपटकर
नागपुर, महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत् –शत् नमन।

परम पू0 गुरूजी की असीम कृपाओं की प्राप्ति दीक्षा के पहले से ही हो रही थी। सन् 14/11/2019 को हमारी दीक्षा स्वंय परम पू0 गुरूजी के द्वारा समाधि स्थली पर प्रदान की गई। दीक्षा लेने के बाद मुझे भौतिक और आध्यात्मिक कृपा की प्रखर अनुभूतियॉ हुईं और हम गुरूजी के और करीब होते चले गये। हमारा पूरा परिवार गुरूजी की सेवा में कार्यरत है।

18 मार्च 2020 को सुबह मैं अभ्यास में बैठा था तब मुझे किसी लिपी के दो अक्षर दिखाई दिये। मैनें गुरूजी से पूछा– कृप्या मुझे इसका अर्थ बताईये।

परम पू0 गुरूजी – बतलाया कि पहला अक्षर हिन्दी भाषा के **"म "** अक्षर से मिलता है। यह **मूलाधार के भूमि तत्व** को दर्शाता है।

और जो **दूसरा अक्षर है वह "उल्टा ऊँ "** है और यह सहस्त्रार चक्र में जो **ऊँ है उसका उल्टा प्रतिबिम्ब मूलाधार में "उल्टे ऊँ " के स्वरूप में होता है। इसलिये यह " ऊँ उल्टा " दिखाई देता है।**

इस अनुभव के कुछ दिन पश्चात अभ्यास में मुझे एक गोल आकृति दिखाई दी। वह मध्यम आकार की थी फिर वह आकृति दो में विभाजित हो गई और उन दो गोलाकार आकृति सें जुडे कई छोटे– छोटे गोले बन गये जो कि नीले रंग के थे। उनका बाहरी आवरण लचीला था। उन सभी आकृतियों के अन्दर कुछ पार्टिकल्स भी थे। परम पू0 गुरूजी से मार्ग दर्शन मॉगा।

परम पू0 गुरूजी– बतलाया कि ये सभी मानव मस्तिष्क के विचारों के बुलबुले है उनका बाहरी आवरण बहुत ही लचीला और पतला होता है। ये एक दूसरे से जुड़े हुये होते हैं। हम एक विचार करते हैं उसमें अपने आप एक दूसरा विचार जुड जाता है और यह प्रक्रिया निरन्तर चलने के कारण यह विचार एक विशाल रूप धारण कर मनुष्य को अपने में समा लेता है। इस जाल से सद्गुरू कृपा और उनके बताये मार्ग पर चलने से ही मुक्त हो सकता है।

6 अप्रेल 2020 हमारे लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है इस दिन परम पू0 गुरूजी ने मुझे योग मार्ग की दीक्षा दी। आज सुबह कहा– कि अभ्यास में बैठो। तब परम पू0 गुरूजी ने अपनी पादुकायें दी। परम पू0 गुरूजी ऊपर कुर्सी पर विराजमान थे और मैं उनके चरणों में बैठा था। परम पू0 गुरूजी की पादुकायें –कैनवास के जूतों की थी। पादुकायें देने के पश्चात परम पू0 गुरूजी ने एक मंत्र उच्चारित करने को कहा। परम पू0 गुरूजी ने वह मंत्र बोला और मैं उनके पीछे– पीछे वह मंत्र दोहराने लगे फिर गुरूजी ने यह मंत्र ग्यारह बार दोहराने को कहा। हमने उनकी आज्ञा का पालन करते हुये ग्यारह बार मंत्र दोहराया। हमने गुरूली से प्रार्थना कि गुरूजी इस मंत्र की महती कृपा हमें बतायें। उन्होने कहा– कि यह कुण्डलिनी शक्ति का मंत्र है। इस मंत्र से तुम तेजोमय हो जायोगे और इसके बाद परम पू0 गुरूजी ने हमें अनेको आशीष दिये और ढेर सारा आर्शीवाद भी दिया। इस दिन के बाद गुरूजी हमें शारीरिक प्रक्रिया के अनुभव देते हैं। परम पू0 गुरूजी की असीम कृपा से मुझमें कई सकारात्मक परिवर्तन आये। परम पू0 गुरूजी अपनी शरण में लेकर हमारा जीवन सुखमय और सफल बना दिया।

श्री सद्गुरूचरणापर्णमस्तुः / जय जय जय गुरूजी

आपका चैतन्य पाटनकर
नागपुर, महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः
परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत–शत् नमन।

दीक्षा प्राप्त होने के पूर्व, परम पूज्य गुरूजी सन् 2014 में हमारे देवघर / पूजा स्थली एक पंलगं पर सफेद चादर बिछी है जो कि फूलों से सजी है। परम पूज्य गुरूजी एक बग्धी में बैठकर हमारे घर आये, उस वक्त उन्होनें सफेद शुभ्र धोती एवं बंगाली कुर्ता और ऑखों में काले रंग का गॉगल पहन रखा है। परम पूज्य गुरूजी बग्घी में से उतरे, उस दौरान उनके चरण जहॉ– जहॉ पड़ रहे थे वह पूरा रास्ता फूलों से भरा हुआ था। अब परम पूज्य गुरूजी जिस जगह पंलंग पर सफेद चादर बिछी थी, उस जबह जाकर विराजमान हो गये। थोडी देर में गुरूजी बाजू वाले रूम में जाते दिखे जहॉ पर बहुत सारे साधक और साधिकायें बैठी हुई थीं। इस तरह से परम पूज्य गुरूजी दीक्षा के पूर्व ही स्वप्न में मुझे दर्शन दिये।

हमारी दीक्षा सन् 2016 में परम पू0 गुरूजी के द्वारा समाधि स्थली पर हुई। दीक्षा लेने के बाद मुझे भौतिक और आध्यात्मिक अनुभव आते रहते है। परम पू0 गुरूजी की असीम कृपा हमारे परिवार पर एक वट वृक्ष के समान सदैव छाया देती रहती है। श्री सद्गुरूचरणापर्णमस्तुः /जय जय जय गुरूजी

आपकी किरन पाटनकर
नागपुर, महाराष्ट्र

।। जय गुरूजी ।।
परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत–शत् नमन।

23 जुलाई 1997 भोपाल में हो रहे गुरू पूर्णिमा पर्व के दौरान परम पूज्य गुरूजी द्वारा मुझे दीक्षा प्रदान की गई। तब से मुझे परम पूज्य गुरूजी का सतत् सानिध्य मिल रहा है। गुरूजी पर मेरी अपार श्रद्धा है। मै उनके प्रति भाव से उच्च स्वानुभाव का अनुभव कर रहा है। प0 पूज्य गुरूजी आज भी जैसे साकार रूप में कार्य करते हैं, वैसे ही वे निराकार रूप में भी कार्य करते है।। मेरा एक भरा पूरा परिवार था जिसमें मेरी माता, एक भाई और दो बहनें थी। परिवार में दोंनों बहनों और हम दोनों भाईयों की सादी हो गई। हम दो भाई एक साथ व्यापार करते थे। कुछ सालो

बाद हम दोनों भाईयों में व्यापार को लेकर अनबन होने लगी। थोड़ा– थोड़ा कलह घर मे बढने लगा। मैनें अपने आपको अलग करने का र्निणय ले लिया और व्यापार भी अलग करने लगा। अब जिम्मेदारी बढ गई और व्यापार भी कम हो गया तथा कमाई भी कम हो गई। किन्तु परम पू0 गुरूजी के बताये मार्ग/ ध्यान, अभ्यास में कोई कमी नहीं आई और मैं निरन्तर ध्यान करता रहा और मैं, मेरा बेटा और मेरी पत्नी गुरूजी के प्रत्येक सत्संग में जाते थे। परिस्थितियों से लड़नें ताकत भी गुरूजी की कृपा से आ गई थी। यह सिलसिला 2008 से 2016 तक चला। अब परिस्थिति और बेकाबू हो गई इस स्थिति में परम पू0 गुरूजी कोई न कोई मदद कर स्थिति सामान्य कर देते। हमारे घर गुरूजी का सत्संग भी बहुत दिनों तक चला। मकान मालिक को 6 माह से किराया भी नहीं दिया था किन्तु मालिक जी कभी कुछ भी नहीं बोलते थे। मेरे गुरू भाई बहन हर परिस्थिति से लड़नें की प्रेरणा देते थे।

एक दिन मेरे गुरू भाई–बहन मेरे घर आये, उस दिन हमारी स्थिति बहुत खराब थी ऐसा लग रहा था कि अब मृत्यु आ जाये तो बेहतर होगा ऐसी मानसिक स्थिति हो गई थी। मैनें उनसे बातचीत की। उन्होनें जाते वक्त कहा कि आज कुछ न कुछ व्यव्स्था अवश्य होगी 12 सें 24 घन्टे के अन्दर।

दूसरे दिन मेरे मामा साले का फोन आया उन्होने मुझसे पूछा– कि किसी मंदिर में पुजारी की हैसियत से काम कर सकते हो क्या ? मैनें बोला– मुझे कोई मंत्र नहीं आता परन्तु पूजा करने का थोड़ा ज्ञान है। उन्होने बोला कि आप इसी वक्त मेरे घर पर आ जायो। मै आपको उनसे मिला देता हूँ। मैं वहॉ पहुँचा तो उन्होने मंदिर के कार्याध्यक्ष से मिलाया। उन्होने मेरा इन्टरव्यु लिया, पर उनको मेरा पूजा का ज्ञान कम लगा परन्तु उनको पुजारी की शख्त जरूरत थी अतः उन्होने मुझे 9000 रू/माह की नौकरी दी साथ ही रहने और भोजन की निःशुल्क व्यव्स्था दी।

आज मै जो भी हूँ सिर्फ परम पू.0 गुरूजी की असीम कृपा से ही हूँ। आज मैं चिन्तामुक्त जीवन जी रहा हूँ यह सब गुरूजी की कृपा का ही परिणाम है।

जय जय जय गुरूजी / आपका रवि पाटनकर, नागपुर, महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

मेरा जन्म परम पू.0 गुरूजी के सशरीर रहते हुये हुआ किन्तु मेरे अनुभव परम पू.0 गुरूजी के समाधि लेने के बाद से प्रारम्भ हुआ। हर पल गुरूजी हमारे साथ रहने का एहसास कराते है।

मेरा प्रथम अनुभव– मेरे उम्र के तीसरे साल में आया। जब मैनें पिताजी को ध्यान मुद्रा में बैठे अभ्यास करते देखा था। तब से मैं भी उनके बाजू में जाके बैठ जाता था। एक दिन मॉ के नहलाने के बाद जब मै अभ्यास में बैठा तो परम पू.0 गुरूजी के चरण कमल मेरे सामने आये और मैंने चरणों की मानस पूजा की और पूजा जैसे ही समाप्त हुई तो मुझे महसूस हुआ कि मेरा शरीर तो ध्यान मुद्रा में ही बैठा है और मेरे अन्दर से एक दूसरा शरीर निकला जो कि हवा में झूलने लगा। ये अनुभव 3 मिनट तक चला। यह अनुभव जब मैनें पिता जी को बताई तो उन्होने ध्यान करने से मना कर दिया और बोले कि जब आप 12 वर्ष के हो जायोगे तब ध्यान करना। लेकिन मैं गुरूजी से दूर न हो सका गुरूजी vision में मुझे से बाते करते और कुछ पूॅछने पर जबाब भी देते जोकि आज भी जारी है।

दूसरा अनुभच– एक दिन जब मैं सो रहा था तब मैंने अपने घर को पूर्णतया जलते हुये देखा। मानों अग्नि पूरी तरह से सब कुछ भस्म कर देगी। उस समय मैं 5 वीं कक्षा में पढ़ रहा था। उस समय कुछ भी समझ में नहीं आया, न ही किसी को बताया किन्तु जब मैं 9 वी कक्षा में था तब यह दृश्य पुनः मुझे दिखाई दिया। सिर्फ मेरा घर जल रहा था बाकी लोगों के घर सामान्य थे। मॉ– पिता जलते हुये घर के अन्दर चले गये और मैं उन्हे रोकने की कोशिश कर रहा था परन्तु रोक न पाया बल्कि कुछ लोग भी अन्दर चले गये। मैं डर गया कि मॉ– पिता को कैसे बचॉऊ ? तब मैनें भी हिम्मत की और मैं भी घर के अन्दर प्रवेश कर गया। देखा कि आग से लोग जल रहे हैं किन्तु वे आग की लपटें मेरे शरीर के आर पार जा रही थी किन्तु मेरे शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुचॉ रही थी और यह अग्नि

सामान्य अग्नि से भिन्न थी। जैसे मैं आगे बढा तो देखा कि मॉ पिता बैठे थे वे पूरे पारदर्शित दिखाई दे रहे थे। वह आग की लपटें मेरे मॉ–पिता के शरीर के आर –पार जा रही थी परन्तु उन्हें जला नहीं रही थी किन्तु बाकी लोग सब जल रहे थे। यह अनुभव मैंने किसी को नहीं बताया। इस जलते हुये घर में एक खाली जगह थी, वहॉ पर कुछ तो था परन्तु स्पष्ट दिखाई नहीं दे रहा था।

23 वर्ष बाद यह अनुभव मुझे पुनः हुआ तब मैनें इस दृश्य के विषय में पूछा – लेकिल वे भी अनुमान नहीं लगा पा रहे थे। फिर मैनें अपनी गुरू बहन चन्दा दीदी से पूछा, तो बहुत खश हुई और उन्होनें कहा– कि जहॉ पर परम पूज्य गुरूजी सतत् विराजमान हूॅ। जहॉ पर सतत् ध्यान साधना का नियमित अभ्यास, परम पू0 गुरूजी की मानसिक पूर्ण सेवा चल रही हो, वहॉ पर ध्यान साधना से उत्पन्न आध्यात्मिक ऊर्जा एवं सदगुरूजी का तेजोमय प्रकाश अग्नि के रूप दिखाई दे सकता है जिसके कारण पूरा धर अग्नि रूपी लौ से धधकता दिखाई दे सकता है। जैसा कि मैनें योगीकथामृत मे पढा है कि जब योगानन्दजी हिमालय की अकेले यात्रा पर जा रहे थे। रास्ता भटक गये थे। उन्ही दौरान उन्हें रास्ते में योगी लाहिडी महाशयजी के गुरू भाई -श्री रामगोपाल मजूमदार की झोपड़ी को आग की लपटों में दूर से जलते हुये देखा था जो कि उनकी साधना का तपो बल था।

यह परम पू0 गुरूजी की महती कृपा और आपकी श्रृद्धा, भक्ति और जन्म –जन्मान्तर की अटूट साधना को प्रमाणित करता है। बहुत ही उत्तम स्थिति है। परम पू0 गुरूजी की अद्भुत लीला का क्या कहना। जहॉ पर खाली स्थान दिखाई दे रहा था, वहॉ पर परम पू0 गुरूजी विराजमान है। उनकी मानसिक पूर्ण सेवा सतत् चल रही है। गुरूजी हमें सत्य के अभ्यास का मार्ग–दर्शन सतत् देते रहते है।

श्री सद्गुरूचरणापर्णमस्तुः / जय जय जय गुरूजी

आपका मकरन्द हरिदास, रामनगर , वर्धा, महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

परम पूज्य गुरूजी की कृपा सब पर समान रूप से बरस रही है चाहे किसी ने उनके प्रत्यक्ष रूप में दर्शन किये या चित्र के रूप में । इसी संदर्भ में एक संस्मरण है जोकि मैं आप सबके साथ साझा करना चाहती हूॅ– कुछ वर्ष पहले की घटना है। हमारे घर एक शोभा यादव नाम की, मध्यम वर्गीय महिला रोटी बनाती थी। साधारण परिस्थितियों यह महिला अपने माता–पिता के खोने के पश्चात, अपने बहनों की जिम्मेदारी निभाते हुये एक छोटे से मकान में रहते हुये, घर– घर काम करते हुये, अपने सभी परिवार के सदस्यों का र्निवाह करती थी। बहनों के विवाह करने के साथ स्वयं के विवाह की उम्र निकल गई थी। हमारे घर पर वह पूज्य गुरूजी की आरती, पूजा आदि सब देखा करती थी। गुरूजी के विषय में होने वाले चर्चा करे वह ध्यान से सुनती रहती थी। यह सब देखकर, सुनकर उसके अन्दर भी परम पूज्य गुरूजी के प्रति भक्ति जाग्रत हो गई। यह सब गुरूजी की कृपा थी कि वह हमसे गुरूजी की उद्बोधन घर ले जाकर पढती थी। एक बार उद्बोधन के कुछ पन्ने ढीले होकर निकल गये। मुझे ध्यान आया कि परम पूज्य गुरूजी का चित्र निकल गया है। शोभा से पूछा– कि इसमें गुरूजी का फोटो नहीं है। शोभा ने कहा कि मुझे गुरूजी का फोटो मेरे घर में रखना था इसलिये ऐसा किया फिर हमने उसे परम पूज्य गुरूजी का एक फोटो दिया, जिसे उसने फ्रेंम करवा कर घर में लगा लिया। वह गुरूजी की नियमित आरती पूजा करने लगी। उसकी गुरूजी के प्रति सच्ची भक्ति थी। उसी समय एक युवक से उसका विवाह हो गया वह अपने ससुराल चली गई और हमारे यहॉ उसका काम छूट गया।

एक बार हमारा बेटा कृपेश जो नौकरी निमित्त पूना में रहता था। हमसे मिलने घर आया था, जब वापस जाने लगा तब हम लोग उसे बस स्टैण्ड छोड़नें के लिये गये थे। कृपेश अपने बाबा के साथ अगली सीट पर बैठा था और मैं पिछली सीट पर दाहिनी ओर बैठी थी और सामान बॉई ओर रखा था। घर से निकलकर 200 फीट पर एक सूमो कार रिर्वस करते हुये हमारी कार से टकराई। टकराहट इतनी जबरजस्त थी कि हमारी गाड़ी का पिछला दरवाजा बॉई ओर तक धस गया जिस तरफ सामान रखा था। मैं दूसरी तरफ, दाहिनी ओर बैठी थी। सुमो वाला अपनी गल्ती और घटना की गंम्भीरता को देखते हुये भाग गया। हम लोग जैसे तैसे कृपेश को बस स्टैण्ड छोड़कर, गुरूजी को बहुत –बहुत धन्यवाद देते हुये, गुरूजी का नाम

स्मरण करते हुये घर आ गये । गुरूजी की कृपा से ही सदैव हम लोग बचते हैं। ये भावना मन को भाव विभोर कर देती है।

दूसरे दिन शोभा हमारे घर आई। वह बहुत प्रसन्न थी और बोली कल रात में स्वप्न में गुरूजी के दर्शन हुये। गुरूजी घर के सामने वाले रास्ते पर टहल रहे थे। उन्हें मैंने प्रणाम किया और कहा– देशपाण्डे जी को बुलाकर लाती हूॅ। गुरूजी नें कहा–बुलाकर मत लायो, बोल देना गुरूजी आये थे। बाद में हमने कार के टकराने की घटना बतलाई और कहा कि गुरूजी की कृपा से आज हम सुरक्षित है। उसे खुब आश्चर्य हुआ और प्रसन्नता भी। गुरूजी की सच्ची भक्ति ने शोभा का जीवन बदल दिया। शोभा को गुरूजी का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं हुआ था।

जय गुरूजी

सौ0 नन्दा देशपाण्ड़े, नागपुर, महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

मेरे ऊपर परम पूज्य गुरूजी की अपार कृपा है उस अपार कृपा का कुछ भाग मैं आप लोगो के साथ साजा करना चाहती हूॅ। मेरे वरिष्ट गुरू भाई श्री दीपक हरिदास के घर पर वर्श में श्री दत्त भगवान का साप्ताहिक उत्सव मनाया जाता है और मैं उस उत्सव में मैं जरूर जाती हूॅ। आदरणीय दीपक दादा नें मुझे परम पू0 गुरूजी के चरणों में भजन की सेवा देने को कहा, क्योकि मैं संगीत की शिक्षिका हूॅ। जब – जब मैनें पू0 गुरूजी के चरणों में भजन की सेवा दी तो देखा कि वहॉ का वातावरण अत्यन्त ही सुखदायी एवं ऊर्जावान हो जाता और मैं महसूस करती कि मैं पू0 गुरूजी के ज्यादा नजदीक पहुॅच रही हूॅ। मैं इन सभी के मुखार बिन्दु से परम पू0 गुरूजी की दिव्य लीलायों के विषय में सुनती थी जिसके कारण मेरे मन मे भी गुरूजी के बताये गये साधना पथ पर अभ्यास करने की तीव्र इच्छा जाग्रत हो गई और मैंने कहा– दीपक दादा से कि मुझे भी दीक्षा लेनी है। उन्होने कहा– ठीक है।

हम सब मुंगेली जाकर गुरूजी की समाधि स्थली में दीक्षा लेगें। लेकिन कुछ कारणों से सम्भव नहीं हो पाया।

गुरूजी की असीम कृपा से दि0 25/5/2020 सबेरे के लगभग 4 बजे मेरे विजन में आया कि मेरे घर के सामने से परम पू0 गुरूजी के साधक गण जा रहे है और मुझे भी साथ चलने को आवाज दे रहे हैं और कह रहे हैं कि वहॉ पर गुरूजी आये हैं, वहॉ चल कर उनका दर्शन करते है लेकिन परम पू0 गुरूजी तो मेरे धर पर ही चेयर पर बैठे हुये है और उनके साथ सौ0 अर्चना भाभी भी आई हुई हैं।

परम पू0 गुरूजी ने मुझसे कहा कि मेरी ओटी यही अपने धर में भरो और कहीं और जगह तुम्हारी ओटी स्वीकार नहीं करूगा और मैंनें गुरूजी की ओटी भरी और परम पू0 गुरूजी ने मुझे एक मंत्र दिया। इस तरह से मेरी दीक्षा स्वप्न में परम पू0 गुरूजी द्वारा प्रदान की गई।

उस दिन से परम पू0 गुरूजी मेरा निरन्तर मार्ग दर्शन करते रहते है साथ ही संगीत में भी मेरा मार्ग दर्शन करते है।

जय जय जय गुरूजी / आपकी सौ0 श्रुति विवेक काण्णव
श्री सॉई मंदिर के पास वर्धा महाराष्ट्र

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

प्रथम प्रसंग– प0 पू0 गुरूजी की आरती से सम्बंधित है–स्वर्गीय आदरणीय जे0 के0 जैन साहब के साथ बिताये हुये सुनहरे पल की स्मृतियों की महक मैं आप सबके साथ साझा करना चाहता हूॅ। कहॉ से शुरूआत करू ? कुछ समझ में नहीं आ रहा। परम पूज्य गुरूजी की आरती तैयार होने के मूल कारणों में एक कारण जैन साहब भी है। शायद ही किसी को यह बात मालूम हो। परम पूज्य गुरूजी और श्रीधर धुसेजी का जो वार्तालाप हुआ था, उसका प्रत्यक्ष अनुभव जैन साहब जी ने दो –तीन बार नागपूर तथा अमरावती में अनुभव किया था। इसलिये 1997 भोपाल में जो गुरूपर्व मनाया गया था उसका निमंत्रण श्री धुसेजी को नागपूर से जैन साहब

ने बाईपोस्ट भेजा था। वास्तव में श्री धुसेजी परम पूज्य गुरूजी के शिष्य भी नहीं थे इसलिये उन्हे निमंत्रण पत्र भेजने का कोई प्रयोजन नहीं था लेकिन उन्होनें श्री धुसेजी को भी निमंत्रण पत्र भेजा था। जैसे ही श्री धुसेजी ने निमंत्रण पत्रिका देखी , तुरन्त ही श्री धुसेजी को गुरूजी की कृपा से प0 पू0 गुरूजी की आरती की एक– एक पंक्ति का भीतर से स्फुरण होने लगा। उन्होने उन पंक्तियो को क्रमानुसार लगाकर, कागज में लिखकर वर्धा में एक व्यक्ति के हॉथेा मेरे पास भेजा। मैनें तुरन्त स्पीड पोस्ट द्वारा आरती का पर्चा श्री जैन साहब के पते पर भेज दिया। पत्र प्राप्त होते ही जैन साहब जी ने प0 पू0 गुरूजी को आरती पढ़कर सुनाई। आरती सुनते – सुनते प0 पू0 गुरूजी के ऑखों में अश्रु बह निकले और 1997 की उद्बोधन में छपवाने के लिये जैन साहब को आज्ञा दी। उन्होने प0 पू0 गुरूजी की आज्ञा का पालन किया।

दूसरा प्रसंग– शिवपुर आश्रम में स्थित नई मूर्ति के र्निमाण से सम्बधित है–वह कुछ इस प्रकार है। घर में एक दिन मैं प0 पू0 गुरूजी के श्री चरणों यानि चरण पादुका के सामने उदास एवं निराश बैठा था। कारण ये था कि प0 पू0 गुरूजी की शिवपुर आश्रम में स्थित जैसी होनी चाहिये थी, वैसी नहीं बनी थी। इसलिये नई मूर्ति का र्निमाण किया जाय तो मन को बहुत प्रसन्नता होगी। इस विचार से चिंताग्रस्त हो गया था। तुरन्त भीतर से ऐसा लगा कि प0 पू0 गुरूजी कह रहे है कि जैन साहब को बोलो, वे ही इस कार्य को पूरा कर सकते है। मैनें जैन साहब को फोन किया और जैन साहब को बोला– कि एक बात मैं प0 पू0 गुरूजी की प्रेरणा से आपसे साझा करना चाहता हूॅ। जैन साहब– राजू बोलो, क्या बात है ? मैनें उन्हें नई मूर्ति की बात बतलाई तो वे इतने प्रसन्न हुये और बोले– राजू मैं आपको क्या बताऊ ? विगत अनेक वर्षो से ये दर्द मैनें अपने सीने में दबा कर रखा था। अव नई मूर्ति का र्निमाण करेगे। ये बात कहते –कहते गुरूजी भीतर से बता रहे हैं कि नई मूर्ति के र्निमाण का सारा खर्च भी जैन साहब करेगें। फोन चालू ही था, उनको कहा– कि भीतर से गुरूजी सूझ– बूझ दे रहें है कि मूर्ति के र्निमाण का सारा खर्च भी जैन साहब करेगे। जैन साहब इतने अधिक प्रसन्न हुये और बोलें–राजू ये कार्य पूरा हो गया, ऐसा समझों। मुझे इतना आनन्द आ रहा है कि इसे शब्दो में कहना असम्भव है। इस साल के भीतर ही नई मूर्ति का र्निमाण कार्य सम्पन्न हो जायेगा।

तीसरा प्रसंग– गुरूजी की नई मूर्ति के र्निमाण कार्य को लेकर–आदरणीय जैन साहब की इच्छा थी कि मैं और मोहन भइया, संतोष और नीलेश गुरूजी की जयपुर में तैयार मिट्टी मूर्ति तैयार हो चुकी है, उसको देखने के लिये देखने के लिये **जायो।** इसी समय मुझे परम पू9 गुरूजी की अन्तः प्रेरणा से हुई की मेरा प्रिय शिष्य स्वास्थ ठीक न होने के कारण गुरू पर्व में मुंगेली नहीं आ सकेगा। इसलिये आप मेरी पादुका लेकर भोपाल जायो और वहॉ गुरूपर्व का कार्यक्रम डा0 शिन्दे के साथ मिलकर करवायो। इस विचार को मैंने जैन साहब को बतलाया । उन्होने कहा– बहुत अच्छी बात है। भोपाल के गुरू परिवार के सभी सदस्यों को कार्यक्रम में बुलाया गया। उन्होने श्री ओ0 पी0 शर्मा जी को इस कार्यक्रम के लिये इन्दौर न्योता भेजा । मैं और मोहन भइया सुबह 8 बजे नाकपूर से चलकर शाम 5 बजे भोपाल के हबीबगंज स्टेशन पहुॅचे। जैन साहब का बेटा राजेश स्वयं कार लेकर गुरूजी की चरण पादुका को लेने के लिये हबीबगंज स्टेशन आया था। बडे ही आदर एवं सम्मानपूर्वक गुरूजी की चरण पादुका को लेकर हम उनके घर पधारे। श्री मती मणी चाची जी ने चरण पादुका का पूजन किया तथा आरती उतारी फिर हम लोग चरण पादुका के साथ भीतर गये। दूसरे दिन डा0 व्ही0 ए0 शिन्दे जी एंव डा0 श्री मती शाईदा शिन्दे जी दोनों ने मिलकर ने चरण पादुका का अभिषेक, पूजन एव आरती किया। इसके उपलक्ष्य में जैन साहब ने करीब 100 लोगेां के भोजन की व्यवस्था भी करवायी थी। बहुत ही आनन्द आया। उसके ठीक 1 माह पश्चात हमारे सबके चहेते परम पू0 गुरूजी की प्रिय शिष्य डा0 व्ही0 ए0 शिन्दे जी की आत्म –ज्योति गुरूजी के चरण कमलों में सदा के लिये विलीन हो गई।

चौथा प्रसंग– परम पू0 गुरूजी की मार्बल की मूर्ति पूर्ण रूपेण तैयार हो गई थी। इसलिये जैन साहब की इच्छा थी कि हम लोग फिर से एक बार जयपुर जाकर मूर्ति देख आये। इसलिये हम लोग छत्तीसगढ एक्सप्रेस द्वारा रात नाकपूर से भोपाल के लिये रवाना हुये। जो कि सुबह 6 बजे भोपाल के हबीबगंज स्टेशन पहुॅची। कार का ड्राइवर न आने के कारण जैन साहब स्वयं कड़ाके की ठन्ड में कार ड्राइव करके हम दोनों को लेने कें लिये स्टेशन पर आये थे। हम लोगों को बहुत संकोच हुआ कि जैन साहब हम स्वयं टैक्सी करके घर पर आ जाते। लेकिन उनको स्टेशन पर हम लोगों को लेने आने का आनन्द उनके चेहरे पर स्पष्ट झलक रहा था।

पाचवॉ प्रसंग–दिव्याम्बु निमज्जन के भाग –2 जोकि जैन साहब ने स्वयं तैयार की थी। उसकी प्रूफ रीड्डिग के लिये मैं और मोहन भइया छत्तीसगढ एक्सप्रेस द्वारा रात नाकपूर से भोपाल के लिये रवाना हुये, सुबह 6 बजे भोपाल के हबीबगंज स्टेशन पहुचे। इस बार भी ड्राइवर नहीं भेजा बल्कि अपनी स्वयं की बहु को क्रेटा गाड़ी के साथ हम लोगों को लेने के लिये स्टेशन भेजा था। बहु स्वयं गाड़ी ड्राइव कर रही थी। हमने जैन साहब से कहा – कि आप इतना कष्ट क्यों उठाते है हम लोगों के लिये ? उन्होने कहा– कि आप गुरूजी का कार्य करने आये हो , ये मेरे लिये सौभाग्य की बात है। दिव्याम्बु निमज्जन भाग –2 का कार्य 2– 3 दिन चला। शहडोल से संतोष शुक्ला तथा आनन्द मिश्रा भी इसी कार्य के लिये आये थे। उस दौरान जैन साहब ने हम लोगों का इतना ज्यादा ख्याल रखा , जिसे शब्दों में बया नहीं किया जा सकता। जैन साहब के हृदय में गुरू परिवार के प्रति अगाध प्रेम था।

छटवॉ प्रसंग– नई मूर्ति की स्थापना हेतु जैन साहब ने एक आपातकालीन बैठक शिवपुर आश्रम में स्थित समाधी स्थल पर आयोजित करवाई। इस कारण मैं और सुधीर भइया कार द्वारा अप्रेल माह में गये थे। जैन साहब जी ने पूछा– कितना पेट्रोल आने जाने में लगा होगा ? मैनें कहा– 5–6 हजार का करीब लगता है। बात वहीं समाप्त हो गई। हम सभी ने मिलकर भोजन किया। उसके बाद जैन साहब ने मुझे बाजू में बुलाया और हाथ सामने करने को कहा, मैं कुछ समझा नहीं। मैंने हाथ सामने किया, उन्होने मेरे हाथ में 5000 रू0/ पॉच हजार रू0 रखे। मैं भी चौक गया कि ये किसलिये ? जैन साहब बोले– आप मेरे छोटे भाई जैसे हो, चुपचाप इसे रख लो नहीं तो मुझे अच्छा नहीं लगेंगा। ऐसा कहने पर मुझे स्वीकार करना ही पड़ा। परम पू0 गुरूजी का समाधी स्थल को कैसे सुन्दर बनाये ? क्या करने से समाधी स्थली की सुन्दरता बढेगी ? इसी विषय में वे हमेशा सोचते रहते थे और मन लगाकर काम करते थे। समाधी स्थल और निवास हेतु भवन र्निमाण में कायीक, वाचीक तथा मानसिक रूप से उनका योगदान अतुलनीय एवं प्रशंसनीय है।

आपका गुरूबन्धु

राजू काण्णव, वर्धा

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत् शत् **नमन**

"सदगुरू"
(जो मैने सगुण रूप में सदगुरू वासुदेव रामेश्वर जी तिवारी से समझा)

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुरेव साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

गुरू ब्रह्म का, गुरू विष्णु का , गुरूदेव महेश का अर्थात ब्रह्मा, विष्णु और महेश का जो गुरू है, वह ही परमब्रह्म है।
मैं उस गुरू परमब्रह्म को नमन करता हूॅ। मैं उस गुरू की शरण लेता हूॅ। वह गुरू ही है मैं नहीं।
मेरा जन्म 23 जुलाई 1966 रायपुर, छत्तिसगढ में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। बचपन से यह समझने में आया कि कोई शक्ति है जो समर्थ है, जिसे भगवान, परमात्मा आदि. आदि कहते है। वह तैतीस करोड़ है, अर्थात अनेक है। इसी धारणा के साथ उनकी ओर भेद दृष्टी से जैसा आम लोगो का रहता हैं वैसा झुकाव मेरा भी रहा। लेकिन झुकाव विशेष था। मैं अपने मामा जी श्री जितेन्द दीवान की प्रेरणा से सन 1987.–88 में मुंगेली गुरूजी के कार्यक्रम में फोटोग्राफी करने गया। वहॉ कुछ शिष्य व स्वयं मामा श्री जितेन्द जी के सत्यनिष्ठ व्यक्ति्व व श्री गुरूजी के प्रवचन से प्रभावित होकर दीक्षा के लिये मेरे मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। सन् 1988 रायपुर में मेडिकल कॉलेज डॉ0 श्रीमती के0 के0 पंधेर के निवास में मेरी दीक्षा, दूसरा जन्म– दिन गुरूवार को अंधकार से प्रकाश अर्थात विकार से निर्विकार की ओर जाने के लिये हुआ। दीक्षा से पहले मैं एकांत में जाकर ध्यान आदि करना व्यर्थ समझता था। आंख बंद करके बैठने से क्या होगा। अपना कार्य सही करने से होगा ऐसी धारणा थी। परंतु दीक्षा में गुरूजी ध्यान के अभ्यास के द्वारा आत्म.योग की दीक्षा दिये। गुरूजी मुझसे पूछे किसे मानते हो ? मैने कहॉ भगवान श्री राम। गुरूजी बोले आत्मा–राम। श्री राम श्री कृष्ण ने भी ये साधना किये तब राम–राम व कृष्ण–कृष्ण हुये। दीक्षा देने के बाद गुरूजी बोले चलो हमारे परिवार में एक ब्राह्मण फोटोग्राफर आया।

गुरूजी के दीक्षा में सार 'योगश्चितवृत्तिनिरोधः' व ध्यानं निर्विषयं मनः

मन को जो लगातार संस्कारगत, विकारगत विचारों में रहना उसे एक में केन्द्रित करना। चित्त की वृत्ति जो लगातार एक विचार गया कि दूसरा उत्पन्न, दूसरा गया की तीसरा उत्पन्न जो अनवरत चलता रहता है। अभ्यास से कम होता जाता है व मन बाहर से अपने में अर्थात अपने भीतर स्थित महाशक्ति में (आत्मा) से जुड़ते जाता है। जैसे–जैसे आत्म योग होता है, दोष, विकार, समाप्त होते जाता है व हम ज्ञान (आत्म.ज्ञान) प्राप्ति की ओर आगे बढते जाते है। श्री गुरूजी कहते हैं जिसे पाना है वह तुम्हारे भीतर है, जिसे जानना है वह तुम ही हो। आत्मा–ज्ञान होने पर ऐसा कोई ज्ञान नही है, जो जानने के लिये शेष रह जाय व ऐसा कुछ भी प्राप्त करना शेष नही रह जाता। वह स्वयं समर्थ ज्ञानवान हो जाता है। परवश जीव स्ववश भगवंता। अर्थात इंद्रियों के वश में हो वह जीव व स्व अर्थात आत्म–वश (आत्मस्थ) हो वह भगवान है। श्री गुरूजी कहते है, सब में वो सूर्य रूपी आत्मा (परमात्मा) समान रूप से विराजमान है, विकार रूपी बादल से आच्छादित है। ध्यान–योग अभ्यास से विकार रूपी बादल हटता है। विकार रूपी बादल हटा कि सूर्य रूपी आत्मा प्रगट।

अतः उपरोक्त धारणा के साथ मैं नियमित ध्यान–योग अभ्यास में बैठता हूॅ। शुरू में निर्देश से ज्यादा बैठने लगा। कुछ समय पश्चात मैं बीमार पड़ गया। गुरूजी मुझे समझायें, धीरे–धीरे चींटी के चाल से चलो पचा–पचा कर करों। जैसे शरीर बनाने के लिये दण्ड़–बैठक करना हो तो शुरू में 5–6 करों फिर धीरे.धीरे बढ़ावों। एक दिन ऐसा आयेगा कि आप 100–200 दण्ड बैठक करोगे तो भी कोई नुकशान नही होगा। शरीर बनेगा। लेकिन एकदम से शुरू में ही बहुत करोगे तो शरीर बनना तो दूर बीमार पड़ जावोगे।

गुरूजी– कबीर जी का कहते थें।

सहज.सहज सब कोई कहें, सहज न चिन्हे कोय।
आठों प्रहर भीनी रहे, सहज कहावय सोय।।

गुरूजी कहते है–
उत्तमा सहजावस्था, मध्यमा ध्यान, धारणा।
मंत्र जपस्यात अघमा होम–पूजा अधमाधमा।।

ये आत्मयोग के सबंध में है, कोई अन्यथा न ले न जाने समझे। राम के सबंध में सुनना हो तो हमारे देश में अनेक विद्वान है, उनके पास जाईए हॉ राम को पाना हो तो यहॉ बैठिए, लेकिन याद रखिए वह अपने सिर की कीमत पर मिलते है। गुरूजी

मुझे समझायें है कि आप केवल जैसा बताया है वैसा अभ्यास में बैठों, बांकी सब अपने आप होगा अर्थात जो पाना है आत्मा –ज्ञान, वह मिल जायेगा व जो छोड़ना है दोष –विकार वह छूट जायेगा।

एक किसान का उदाहरण दिये. एक किसान सिर में हॉथ रखकर चिंतित खेत में बैठा था। एक अनुभवी व्यक्ति वहाँ से गुजरते है, वह किसान से पूछते है कि क्या बात है भाई ? परेशान लग रहे हों, किसान बोलता है– क्या बताऊॅ ? फसल अच्छा था, लेकिन पानी न मिलने से नष्ट हो रहा है। अनुभवी व्यक्ति किसान से कहते है– कि आपके खेत से कुछ दूर पर सरोवर है। अतः खेत सें सरोवर के बीच जो मिट्टी (रूकावट) है उसे हटाते जावों। किसान धीरे–धीरे ऐसा करते गये जैसे ही सरोवर के पास की मिट्टी (रूकावट) हटा, कि पानी खेत में पहुॅच गया। इसी प्रकार से ध्यान के अभ्यास में हमारे विकार रूपी रूकावट हटते जायेंगे जैस–.जैसे हम निर्विषय होंगे ज्ञान का प्रकाश (आत्म ज्ञान) हमें प्राप्त होगा। कुछ और करने की आवश्यकता नही है। श्री गुरूजी अपनी शैली में बोलते है, न कपड़ा रंगने की जरूरत न मुड़ मुड़ाने का न पूंछ दबाने का न घर–द्वार छोड़कर जाने की, आप केवल थोड़ा समय निकालकर नियमित ध्यान के अभ्यास में बैठो बॉकि सब अपने आप हेाता है।

श्री गुरूजी कबीर का कहते है–
योगी निरंजन से बड़ा। कपड़ा रंगे रंग लाल से वॉकिफ नही उस रंग से कपड़ा रंगे से क्या हुआ, पोथी पुस्तक किताबे बांचता, लोगो को नित समझाता, भृकुटी महल खोजे नही बक–बक मरा तो क्या हुआ ?

भृकुटी महल खोजना आज्ञाचक्र में ध्यान का अभ्यास करना।

श्री गुरूजी इस प्रकार धीरे.धीरे अभ्यास कराते हुये अन्दर व बाहर से मार्गदर्शन करते हुये मुझे अद्वैत का ज्ञान कराते गये क्रमशः श्री गुरूजी के द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन को रख रहा हूॅ। दीक्षा के प्रारंभिक दिनों में कुछ कार्य बिगड़ जाता था, तो गुरूजी बोलते थे कि तुम गुरूजी को भुल गये। उस समय के मनः दशा के आधार पर मन में प्रश्न उठता था। श्री गुरूजी की कृपा से समझ में आया कि गुरूजी को भूलना अर्थात भीतर विराजमान सदगुरू(आत्मा) को भुलना। गुरूजी बताते हैं सत् आर्थात आत्मा ही सदगुरू है। आत्मा परम है इसलिये परमात्मा कहते है।

तैतीस करोड़ देवी देवताओं के संबध में बताऍ है, कि तैतीस कोटी हैं। कोटी मायने– करोड़ नही, हमारे शरीर में तैतीस वर्टीब्रा है, जिसके बीच से सुषुम्ना मार्ग होता है, इसे तैतीस करोड़ कहा गया है। मै बी0 एस0 सी0 अंतिम की परीक्षा देकर वर्धा गुरूजी के पास पहुॅचा मेरे मन में दुविधा थी कि आगे पढाई के लिये क्या करें। मैने कुछ बोला नही जैसे प्रणाम किया गुरूजी बोले बस जितना हो गया बहुत है एक (आत्म ज्ञान) होने पर सब प्राप्त हो जाता है तो सबके पीछे क्यों पड़ना। मुझसे गुरूजी पूछे– क्या करोगे नौकरी ? मै चुप रहा गुरूजी बोले –इंडिपेंडेट रहो। मैं हूॅ न चिंता क्यों करते हो। दुकान चलने दो, वो गुरूजी की दुकान है। मन में कोई बात हो तो मुझे गुरूजी से बोलना नही पड़ता था ,समाधान कर देते है। श्री गुरूजी जीविकोपार्जन के लिये जो कार्य करते है, उसे उपजीविका कहते है व आत्मज्ञान के लिये जो कर्म करते है उसको जीविका बताऐं है।

आत्मसाक्षात्कार हेतु जो कर्म किया जाता हैए वही निष्काम कर्म है। बॉकी सब सकाम कर्म है। पुण्य और पाप दोनो बेड़ी है, एक सोने का बेड़ी, एक लोहे का बेड़ी। दोनो भोगना पड़ता है। निष्काम कर्म ही कर्म योग, धर्म है। प्रारंभ में कही कुछ अन्याय हो या दुःख किसी का हो तो मै दुःखित हो जाता था, क्योंकि सार्मथ्य की सीमा होने के कारण कुछ नही कर पाता था। गुरूजी मार्गदर्शन किये आत्मसाक्षत्कार के बाद में मैदान में उतरों, कोई हाथ नही पकड़ता।
गीता में श्री कृष्ण जी द्वारा दिये आश्वासन

अनन्याश्चिन्तयतो मां ये जनः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।

को किसी दूसरे स्थान पर मैनें कहॉ। वहॉ सें वापस गुरूजी के पास आकर जैसे ही प्रणाम किया गुरूजी बोलते है अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ..... क्या बात है ? इससे बड़ा आश्वासन क्या चाहिए।

एक बार एक स्थान पर मुझे किसी ने अपमानित किया जिससे मै बहुत ज्यादा दुःखित हुआ, कुछ समय बाद मुंगेली गया तो गुरूजी बिना कुछ बताये, बोले कि कोई अपमानित करें अनादर करे तो उसमें दुःखित होने की क्या बात है, अज्ञानी है, उस समय से मान–अपमान पर मन शांत रहता है।

दीक्षा के बाद गुरूजी मुझे प्रायः अपने सानिघ्य में रखते थे। श्री गुरूजी दीक्षा के बाद शिष्यों से कहते थे, जैसे बताया है, वैसा अभ्यास करों मै हमेशा साथ मे हूँ।

आज से मैं तुम्हारा बंधुवा मजदूर हूँ। कभी भी कोई संकट, आपत्ति –विपत्ति हो, एक बार याद कर लेना। मुझे भी ऐसा आश्वासन दिये व साथ में बोले है कि तुम जब कहों मैं तुम्हारे सामने इसी रूप में खड़ा हो जाऊँगा, तुम्हारा कार्य स्मरण से बनता है तो परीक्षा नही लेना। एक बार मैं बहुत बीमार था। मरणासन्न दशा में पहुँच गया था। डॉक्टर मेरी बिमारी समझ नही पा रहें थे, मेरा हिमोग्लोबीन 5 हो गया था। मैं बहुत हताशा के दशा में अगरबत्ती जलाकर बैठा व गुरूजी से कहॉ आपके होते मै मारे–मारे इस डॉक्टर से उस डॉक्टर के पास भटक रहा हूँ, जो भी करना है आप करो मै थक गया हूँ। मैं आपकी परीक्षा नही ले रहा हूँ, लेकिन मेरा मन अच्छा नही है, आप खडे होइये । ऐसा बोलकर मैं लेट गया पुनः बेहोशी /निद्रा में चला गया। श्रीमती जाग रही थी, उसे मै कुछ नही बताया था। उन्हे आवाज सुनाई दिया मै मरा नही हूँ , मै हूँ। ऐसा तीन बार गुरूजी की आवाज सुनाई दी व गुरूजी सामने खड़े हो गये व उसके बाद डॉक्टर को बिमारी समझ में आई और मेरा सही इलाज हुआ। गुरूजी कहते थे, कनफूकियॉ गुरू नही है। मंजाल है कोई तुम्हारी ओर टेढ़ी नजर से देखे। रायपुर आते पहले मुझे खबर भिजवा देते थे। रात्रि में गुरूजी के पास रहता था, व बीच–बीच मे गुरूजी बाहर रहते थे, वहॉ जाता रहता था। विशेषकर मुंगेली।

एक बार मै शनिवार को मुंगेली गया था रात्रि रूका दूसरे दिन मैने गुरूजी से कहा गुरूजी 2 बजे के बस से वापस जाऊँगा। गुरूजी बोले– हाँ, जाने वाले को कौन रोक सकता है फिर 2 बजे मैं गुरूजी को प्रणाम कर बस स्टेंड गया बस सवारी से भर गई थी, जगह नही होने से वापस पुनः आश्रम 4 बजे के बस से जाऊँगा सोंचकर पहुँचा। गुरूजी हँसे, फिर बोले –दो दिन रूक जावोगे तो बन जायेगा। मैने कहॉ रूक जाऊँगा गुरूजी ! और मै रूक गया, श्री गुरूजी मार्गदर्शन करते हुए बोले मै चाहूँ तो तुम्हे 15 दिन में मृत्युकेंद्र (विशुद्धचक्र) पार /पूर्णता करवा दूँ। है हिम्मत, स्टाम्प में दस्तखत करवा लुँगा या तो हो ही जायेगा या पागल हो जायेगा। श्री गुरूजी के बोलने के बाद मैने कहा कि गुरूजी आपके कृपा से मुझे आप पर पूरा भरोसा है, व स्टाम्प में दस्तखत भी कर दूँगा। लेकिन आप एक बात बोले है, गुरूजी बोले क्या – तो मैने कहा या तो हो ही जायेगा या पागल हो जायेगा। अतः यदि ऐसा हो जाय कि मै ज्ञानवान, समर्थ हो जाऊँ। अपना जीवन भार रहित व्यतीत कर सकुँ व लोगो के भी सहायक होऊँ तो मै तैय्यार हूँ। दूसरा पागल हो जायगा। इस पर मेरी तैय्यारी नही है मैं पृथ्वी पर भार नही बनना चाहता।

अतः गुरूजी बोले कि मै तुमको अमरकंटक के एक हठयोगी, जिन्हे गुरूजी मार्गदर्शन किये थे, के पास भेजूंगा। फिर कुछ समय में गुरूजी बोले तुम जो चल

रहे हो वह ठीक है, ऐसा ही चींटी के चाल से चलने दो मै हूँ न। फिर गुरूजी उस दिन जो हमेशा सबको आप करके बोलते थे, कभी तू तेरा नही बोलते थे, मुझसे बोले –तेरे को ही तो सबसे अधिक चाहता हूँ रे।

प्रत्येक गुरूवार को हम सब रायपुर गुरूपरिवार रात्रि 8 बजे सामुहिक आत्मा–योग के लिये ध्यान–योग अभ्यास में बैठते थे। बैठने के पूर्व श्री गुरूजी की आरती गाते थे। संयोगवश श्री गुरूजी सशरीर डा0 आचार्य के यहॉ आए थे उस दिन गुरूवार को हम सब अभ्यास में बैठे। बैठने के पूर्व मेडम आचार्य आरती गाई आरती के बोल थे राम–कृष्ण, तु रहिम, तु वासुदेव गुरू तू । पूजा के बाद मेडम, गुरूजी के पास भोजन की थाली लेकर गई तो गुरूजी बोले कि ये क्या तु .. तु सब तुम्ही तो हो। दीव्याम्बु निमज्जन में लिखा है जब तक कोई यह समझता है कि मै भजने वाला अलग व जिसे मै भज रहा हूॅ वह अलग है, तब तक वह विभक्त है। जिस दिन यह जान लेगा कि सब वही है मै (पक्का) ही हूँ। तब वह भक्त है।

जब मैं था, तब हरि नही, अब हरि है, मैं नाहिं।।

गुरूजी कहते थे दुनिया भर में देवी देवता भगवान खोजने व जानने के बजाय आप अपने को खोजों जानों, जिस दिन अपने आपको जान लोगे, सब जान लेंगे, सब प्राप्त कर लेंगे। आज मनः स्थिति ऐसी है कि सब में विराजमान एक ब्रम्ह जो मुझमें भी है,मन को लगाता रहता हूँ। जैसे समुद्र में स्थित जहाज का पंछी आसमान में उड़ता है फिर थककर पुनः जहाज में आकर विश्राम पाता है। ऐसा ही अभ्यास चलता रहता है। परिणाम स्वरूप जितने दोष है काम क्रोध, मोंह, लोभ, मान, मात्सर, द्वेष, धृणा, भय, चिंता दूर हो रहे है। मन शांत लगता है।

गुरूजी –कबीर कहते थे– **चाह गई चिन्ता मिटी, मनवा बेपरवाह, जिनको कछु न चाहिऐ वो शांहन के शाह।**

गुरूजी कहते थे – शास्त्र को हमारे अनुभव व हमारे अनुभव को शास्त्र प्रमाणित करता है। मेरा कोई दुःख.सुख नहीं है, मैं औरों के दुःख से दुखित व सुख से सुखी होता हूँ। अनुभव में आता है। अतः मैं यहि कहूॅगा कि मैने जो पाया है वह सबको मिले सब आनंदीत हो

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

आपका योगेश शर्मा

मो0 9617111108, 9165111108 शर्मा फोटो स्टुडियों
आमापारा चौंक रायपुर, छत्तिसगढ

ऊँ श्री सद्गुरूवे नमः

सन् 1982 की बात है, उस समय शहडोल में मिश्रा जी रहा करते थे, जिन्हें हम लोग बाबूजी कहते थे । मिश्रा जी शिक्षा विभाग में जिला शिक्षा अधिकारी के पद से सेवा निवृत्त हुये थे । होम्योपैथी का उन्हें अच्छा ज्ञान था । वह होम्योपैथी द्वारा मरीजों का इलाज करते थे अतएव उनका दवाखाना भी खुला था । मिश्रा जी की बहू और मैं एक ही स्कूल में पढ़ते थे । मेरी होम्योपैथिक इलाज सीखने में रूचि थी । इसलिये मैं भी मिश्रा जी के दवाखाने में जाकर कुछ समय बैठा करती थी ।

मिश्रा जी परम पू. गुरूजी के पुराने शिष्य थे । उस समय गुरूजी मिश्रा जी के यहाँ पधारे हुये थे । एक दिन बाबूजी मुझ से बोले– मिसेज खरे ! आप दवाखाने में बैठियेगा, हम गुरूजी के पास जा रहे हैं, थोड़ी देर में आते थे। इस तरह दो तीन बार गुरूजी के पास जा रहा हूँ, आप रहना कहकर चले जाते थे । अब मुझे भी गुरूजी दर्शन करने की तीव्र उत्सुकता हुई । एक दिन मैंने मिश्रा जी की बहू, श्रीमती मनोरमा मिश्रा से गुरूजी के बारे में जिकर किया उन्होंने कहा गुरूजी बहुत अच्छे है । चलो हम आपको उनके दर्शन करवा देते है । गुरूजी घर में ही बगल के कक्ष में ठहरे हुये थे । मैं उनके साथ गुरूजी के दर्शन करने गई । मैंने प. पू. गुरूजी को प्रणाम किया और वहीं थोड़ी देर के लिये बैठ गई । मैंने गुरूजी से कहा मुझे आपके दर्शन करने की बड़ी इच्छा थी । गुरूजी हँसे और बोले देख लिया मेरे नाक कान सब बराबर हैं उनके साथ मैं भी हँसी । मुझे गुरूजी बहुत अच्छे लगे । वे बहुत विनोदी एवं सरल स्वभाव लगे। मैं उनकी तरफ खिच सी गई ।

फिर तो मैं रोज ही गुरूजी के दर्शन के लिये जाने लगी । थोड़ी देर दवा खाने में बैठती और फिर गुरूजी की तरफ चली जाती । परम पू. गुरूजी का व्यक्तित्व आकर्षक एवं बड़ा ही प्रभावशाली था इसलिये सब, जो भी गुरूजी को देखता, उन्हीं का हो जाता था । अब तो मैं शाम को भी उनके दर्शन के लिये जाने

लगी और जब गुरूजी को भोजन परोसा जाता तब भोजन परोसने में भी लग जाती, इस तरह से गुरूजी के पास रहने का थोड़ा मौका मुझे और मिल जाता था ।

एक दिन मिश्राजी की बहू, श्रीमती मनोरमा मिश्रा ने मुझे बताया कि मैं कल प. पू. गुरूजी से दीक्षा ले रही हूँ । यह जानकर मुझे भी गुरूजी से दीक्षा लेने की प्रबल इच्छा होने लगी । अतः एक दिन पू. गुरूजी से मैंने प्रार्थना की कि मुझे भी दीक्षा देकर अपने चरणों में जगह देने की कृपा करें । पू. गुरूजी ने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर मुझे दीक्षा दी और दीक्षा देकर अपने चरणों में स्थान दिया । ये सन् 1982 का समय था । अक्टूबर माह में नवरात्रि के पवित्र दिनों में गुरूवार के दिन घर पधारकर मुझे दीक्षित किया । दीक्षा के समय उन्होंने मंत्र लिखवाया और ध्यान की विधि बतायी । उन्होंने मेरा **नाम 'श्रद्धा'** रक्खा। मैं जब भी गुरूजी के दर्शन करने जाती गुरूजी मुझे श्रद्धा कहकर ही बुलाते थे । उन्होंने कहा मंत्र का जाप करना और ध्यान करते रहना ।

उस समय मेरी पारिवारिक स्थिति अच्छी नहीं थी । एक लम्बी बीमारी के बाद सन् 1978 में मेरे पति की मृत्यु हो चुकी थी । मेरे तीन बच्चे अवयस्क अवस्था के थे, मैं नौकरी करती थी इसलिये किसी प्रकार घर चल रहा था । ऐसे समय में प. पू. गुरूजी का मिलना मेरे लिये बहुत बड़ा आधार था । प. पू. गुरूजी के बताये अनुसार मैं ध्यान करती और जाप करती और मन ही मन मंत्र जाप किया करती थी । एक दिन रात में सोते समय देखा कि एक बहुत बड़ा अजगर जो भूरे रंग का था, मेरे पैर के तलवे में चिपक गया है और उसने खून चूसना चालू किया मैं बेहोश होते जा रहा हूँ जैसे ही मैंने गुरूजी के बताये मंत्र का जाप किया उस अजगर ने मेरा पैर छोड़ दिया और वहाँ से चला गया । मेरी नींद खुल गई मैं बहुत डर गई थी अपना पैर देखा कि खून निकल तो नहीं रहा है, लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था सब ठीक था ।

एक दिन लेटे लेटे ध्यान कर रही कि अचानक भौहों के ऊपर एक ज्योति दिखी जो कि गोलाई में इधर से उधर आ जा रही थी । फिर वह कभी भी दिखाई देने लगती थी । इसी तरह प. पू. गुरूजी की कृपा से ध्यान में सत्यपुरूष के दर्शन हुये । सन् 1996 में सेवा निवृत्त हो गई थी । बड़ी बेटी की शादी हो गई थी। बेटे का जॉब लग गया था तथा उसका भी विवाह हो चुका था । बड़ी बेटी अपने पति

के साथ रीवा में थी उसी समय प. पू. गुरूजी डॉ. शिन्दे सा. के यहाँ पधारे हुये थे मेरी बेटी ने कहा मम्मी ! यदि आप प. पू. गुरूजी के दर्शन करना चाहती हो तो रीवा आ जाइये। मैंने भी इस अवसर का लाभ उठाया और रीवा पहुँच गई । वहाँ हम लोग डॉ. शिन्दे सा. के यहाँ गुरूजी के दर्शन करने गये । प. पू. गुरूजी उस समय बडी प्रसन्न मुद्रा में बैठे हुये थे, वे नाश्ता कर रहे थे । मैंने उन्हें प्रणाम किया जब मैंने उन्हें चरण स्पर्श किये तो उन्होंने मुझे श्रद्धा कहकर पुकारा और मुझे प्रसाद दिया ।

आते समय जब मैंने गुरूजी के चरण स्पर्श किया तो मैंने कहा गुरूजी वंदना का क्या होगा ? और मेरा गला भर आया । गुरूजी तो अंतर्यामी हैं उन्हें सब मालूम है उन्होंने कहा सब ठीक होगा । वंदना की शादी सन् 1991 में हो जायेगी उस समय सन् 1991 ही चल रहा था, और उन्होंने कहा–तुम्हें शादी का कोई इंतजाम नहीं करना पड़ेगा । लड़के वाले सब इंतजाम कर लेंगे । गुरूजी का ये आशीर्वाद है, और गुरूजी ने जैसा कहा था ठीक वैसा ही हुआ । वंदना की परम पू. गुरूजी के आशीर्वाद से शादी अच्छी प्रकार से संपन्न हो गई । धन्य है गुरूजी ! गुरूजी के चरणों में कोटि कोटि नमन ।

मैं अब बिल्कुल अकेली हो गई थी, सर्विस से भी रिटायर हो गई थी अतएव मेरी बड़ी बेटी जो कि लखनऊ में है अक्सर मुझे अपने साथ ले जाती थी । वहाँ भी सत्संग हो था मैं भी सत्संग में जाने लगी । धीरे–धीरे सत्संग का ऐसा प्रभाव पड़ा कि मैं सब भूल गई, यहाँ तक कि गुरूजी को भी, परन्तु मन ही गुरूजी की याद आती तो अपराध बोध लगता था और पीड़ा सी होती थी । इस तरह एक लम्बा समय गुजर चुका था एक साल पहले मैं बहुत बीमार पड़ी तो मैं छोटी बेटी के पास इन्दौर आ गई । यहाँ शुद्ध गुरूजी का वातावरण मिला । यहाँ गुरूजी की पूजा होती थी । प्यारी चंदा बेटी से अपनी मानसिक परेशानी साझा की । उसने कहा कि यह सब प. पू. गुरूजी की कृपा है जिसके कारण आपको अपराध बोध लगता था। अब सब ठीक हो जायेगा। जिसके कारण मुझे बड़ा ही मानसिक संवल मिला । अब मैं स्वस्थ हूँ अब मैं पुनः स्वतंत्र रूप से सुबह शाम प. पू. गुरूजी के बताये हुये मानसिक पूजा व अभ्यास करने लगी । प. पू. गुरूजी करूणा के सागर है, दीनबंधु है, माता–पिता है, उनके चरणों में जगह मिली और उनका प्यार मिला ।

मुझसे अधम अधीन उबारे न जायेंगे ।
तो आप दीनबंधु पुकारे न जायेंगे ।।

''ऊँ जय जय गुरूजी''

गुरू चरणों में कोटि कोटि नमन प्रणाम

आपकी चरणारबिन्दु श्री मती श्रद्धा/ सत्यावती खरे, इन्दौर, म0 प्र0

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम,

आज 19/3/2100 की शाम लगभग 7:30 बजे गुरु जी ने गंभीर आपदा से बाल बाल बचाया। मां 84 वर्षीय अवस्था में है कूल्हे की हड्डी का ऑपरेशन कुछ साल पहले हुआ है लेकिन गुरु जी कृपा से वाकर से चल लेती है। घटना के लगभग 10 मिनट पूर्व गुरु जी की आरती प्रज्वलित कर संपन्न किया उसके उपरांत मां भी लगभग उस कमरे के दरवाजे तक आ गई मैंने उन्हें आरती लेने के लिए आगे बढ़ाई इसके उपरांत घर के सभी सदस्यों को को भी आरती दी उसके उपरांत बैठक कक्ष में आकर कुछ आराम कर रहा था तभी बैठक का बाहर खुलने वाला दरवाजा खोलकर, मां 24 घंटे उनकी सेवा में लगी सेविका मीरा को खोजते हुए चौखट के नीचे खड़ी हुई मीरा को ना पाते हुए बेचैन रही और अचानक वाकर के पीछे की ओर गिरने लगी मैं तख्त पर कुछ विश्राम कर रहा था मां और मेरे बीच की दूरी लगभग 8 फीट थी अचानक उनके चिल्लाने की आवाज सुनकर स्तब्ध रह गया तखत के सामने एक बङा स्टूल रखा था जो मेरे और मां के बीच सांकेतिक अवरोध बना और मां की आवाज लगाने पर भी मैं कुछ क्षणों के लिए जड़ वत रह गया, तुरंत गुरु जी को पुकारा *जय गुरु जी जय गुरु जी जय गुरु जी जय गुरु जी*। इस आर्तनाद की पुकार के तुरंत बाद मेरे शरीर में हलचल हुई और एकदम से कूदते हुए मां के पास पहुंचा उस समय तक मां गिर चुकी थी, मन में आशंका भी रही के इतनी उम्र में सीधे खड़े खड़े नीचे गिरने पर हड्डी का न टूटना असंभव सा है,

मां की आवाज सुनकर मेरी पत्नी भी दौड़ कर सामने से आई और हम दोनों ने मां को कंधे से पकड़ा और अपनी हिम्मत ना होते हुए भी धीरे धीरे मां को खड़ा किया गुरु जी की कृपा के आगे वाणी मूक है , आश्चर्यजनक रूप से मां को खरोच तक नहीं आई हड्डी टूटना तो दूर की बात। शरीर जड़वत होते ही जो गुरुप्रेरणा से आवाज लगाई गई। गुरुजी निश्चय ही साक्षात उपस्थित हुए होंगे और मां ,हॉस्पिटल के पलंग जो अभी 20-25 दिन पहले ही मां को लंग्सके इंफेक्शन के दौरान लाया गया था उसे अभी लौटाए नहीं थे, उस पलंग के ऊपरी पैनल में मां बहुत ही आहिस्ता से टिकी और उसके बाद लगभग सरकते हुए पूरी तरह भूमि पर लेट गई पीठ के बल । आश्चर्यजनक बात यह भी है की पलंग का लीवर जो लोहे का है वह भी जमीन से लगभग 10 इंच ऊंचाई पर है और उसकी लंबाई लगभग 5 इंच है उस पर माताजी बिल्कुल भी नहीं टिकी। बिल्कुल आहिस्ता से गुरु जी ने पीछे हाथ लगाकर माता जी को बहुत ही सुरक्षित ढंग से लेटा दिया। गुरु कृपा ना होने पर विभीषिका इतनी जबरदस्त होती कि कूल्हा कमर या रीड की हड्डी में संघातिक चोट आना अवश्यंभावी था।

मैं स्वयं 4 दिनों से वायरल फीवर से ग्रस्त रहा हूं आज भी उसका प्रभाव रहा है इस अवस्था में यदि मां को कुछ हुआ होता तो उनका बिस्तर से उठ पाना बहुत ही कठिन होता । न केवल मां के लिए बल्कि हम परिवार जनों को बड़े संकट से गुरुजी ने बचाया है और गुरु जी ने जो आश्वासन दिया है जहां पुकारो वही उपस्थित होऊंगा वह पूर्णताया फलीभूत हुआ और हम सभी परिवारजनों और माताजी गुरु चरणों के प्रति अनंत कृतज्ञता अनुभव कर हम सभी गुरु भाइयों बहनों से प्रार्थना करते हैं गुरु जी के अलावा गुरु परिवार का कोई रखवाला नहीं है । जय गुरु जी, क्षमा चाहता हूं यदि कोई शब्द भावना में अनुचित लिख गया हूं तो क्षमा। चरण स्पर्श प्रणाम

गुरुजी के आश्वासन के अनुरूप ही अंतरात्मा की यह पुकार-----

जय गुरु जी

अम्बरीश श्रीवस्तव शहडोल म0 प्र0

।।जय गुरुजी।।

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम,

परम पूज्य गुरुजी सदैव कहते हैं, "बस गुरुजी को याद करो, और आपका काम बन जाएगा"। इस बात की प्रचिति कई बार आई है। कुछ प्रसंग गुरुजी की प्रेरणा से ही साँझा कर रही हूँ।

बात १९८५ जुलाई की है। तब गुरुजी इंदौर में ही विराजमान थे। गुरुजी को प्रणाम करके मैं व मेरे पति किसी कार्य से देवास जाने के लिए स्कूटर से निकले। स्कूटर में पेट्रोल रिज़र्व में था। इन्होंने कहा- रास्ते में जाते समय पेट्रोल भरवा लेंगे और हम लोग गुरुजी को यादकर के निकल पड़े। रास्ते में इंतज़ार करते रहे, पेट्रोलपम्प का। डीज़ल पम्प तो मिले, पेट्रोल कहीं नहीं मिला। जैसे जैसे आगे बढ़ते जा रहे थे, इनकी चिंता भी बढ़ रही थी, "अभी तक एक भी पेट्रोल पम्प नहीं आया, क्या करेंगे अगर बीच रास्ते में पेट्रोल ख़त्म हो गया तो ? साथ ही पछता भी रहे थे की इंदौर से ही पेट्रोल भरवा लेते तो। मैं गुरुजी का नामस्मरण करती जा रही थी पीछे की सीट पर बैठकर । गुरुजी को याद करती जा रही थी और सामने सूरज के साथ मुझे गुरुजी दिख रहे थे मुस्कुराते हुए, जैसे कह रहें हों, "कहो, अलका, कैसी रही ?" उनकी भुवन मोहिनी मुस्कुराहट और मैं निरंतर नामस्मरण करती रही। प्रणाम करती रही । ऐसे क़रीब आधा घंटे से अधिक समय निकल गया। हम लोग गंतव्य पर पहुँच गए बिना किसी विघ्न के। हमारा कार्य करके लौटे। स्कूटर शुरू किया तो शुरू नहीं हुआ, धकेल कर पैदल ही पेट्रोल पम्प तक, जो पाँच मिनट के रास्ते पर पास ही मिला। वहाँ पहुँच क रदेखा तो पेट्रोल की टंकी बिलकुल सूखी थी, ऐसा पेट्रोल भरने वाले लड़के ने कहा। हम सब आश्चर्य कर रहे थे की यहाँ तक स्कूटर बिना पेट्रोल के आई कैसे ? वापस इंदौर जाकर गुरुजी के पास पहुँचे, उन्हें प्रणाम किया, गुरुजी बोले, "क्यूँ अलका,

स्कूटर बराबर जाकर आ गई ना ?" मैंने कहा"गुरुजी आपने ही तो हमें पहुँचाया है !" फिर जैसे कि सदैव कहते हैं, "हमको नहीं मालूम" ऐसा कहकर मुस्कुरा दिए ।

ऐसा ही एक प्रसंग और है । हम जब ग़ाज़ियाबाद से इंदौर आए तो गुरुजी की कृपा से मुझे इंदौर के एक अच्छे स्कूल में शिक्षिका की नौकरी अनायास ही मिली। अपने बच्चों के एड्मिशन के लिए स्कूल गयी थी और सामने से पूछा गया की क्या आप नौकरी करना चाहती हैं ? और मिल गयी नौकरी । छोटे छोटे बच्चों को (३-६ साल के) पढ़ाना था प्रि-प्राइमरी में । ये घटना उस समय की है जब मैं केजी १ क्लास के बच्चों को पढ़ा रही थी। एक क्लास में क़रीब ४० बच्चे होते थे और छोटे छोटे बच्चे एक जगह पर अधिक देर नहीं बैठ सकते। उनको लिखना भी हाथ पकड़ कर ही सिखाना पड़ता है। मैं हाथ पकड़ कर एक बच्चे को लिखना सिखा रही थी, और बीच बीच में बाक़ी बच्चों से बात भी करती जा रही थी। कुछ बच्चे अपनी जगह से उठ कर इधर-उधर घूम रहे थे। उनसे कह रही थी कि अपनी जगह पर ही बैठो। इतने में ही एक बच्चा, "नवनीत प्रसाद" जिसका नाम था, बेंच पर खड़ा हो गया। उसको पास जाकर नीचे बैठाती पर इतने में ही उसका पैर फिसला, और वह गिर गया। दांतों के बीच उसकी जीभ आ गयी, और कट गयी -- ३/४ कट गयी, १/४ बची थी, साथ ही खून बहने लगा। मैंने उस बच्चे को उठाया और एक रिक्शॉ में (स्कूल के बाहर बच्चों को ले जाने वाले) उसको लेकर नर्सिंग होम, जो हमारे स्कूल के बिलकुल पास ही था गई। आया से कह दिया की प्रधान अध्यापिका को सूचित कर दे और क्लास में बाक़ी बच्चों का ध्यान रखे। गुरुजी को निरंतर प्रार्थना कर रही थी कि "गुरुजी सम्हालिए इसे, देखिए ना क्या हो गया!" नर्सिंग होम जाकर डॉक्टर ने देखा और कहा जीभ में टाँके लगाने पड़ेंगे। बच्चे के आइ-कार्ड पर से फ़ोन नम्बर देख कर उसकी माँ को सूचित किया। जब तक माँ वहाँ आई, टाँके लग चुके थे। गुरुजी की कृपा से टाँके लगाते समय नवनीत बिलकुल नहीं रोया, ना ही कोई अवरोध किया। अच्छे से जैसे डॉक्टर कहते रहे, वैसे ही करता रहा। नवनीत की माँ उसे घर ले जाते समय बोलीं "धन्यवाद, आपने समय रहते डॉक्टर के पास ला कर तुरंत इलाज कराया"। मैं भी स्कूल वापस लौटी। सारी बातें प्रधान अध्यापिका को बतायीं।

गुरुजी की कृपा से सूझ-बूझ मिली और सब ठीक हो गया। अब मुझे चिंता थी की बच्चे के जीभ में टाँके लगें हैं। कहीं उसके बोलने में, उच्चारण में कोई तोतलापन तो नहीं आ जाएगा। यदि वो स्पष्ट नहीं बोल सका तो उसका जीवन कष्टमय होगा। रोज़ गुरुजी से प्रार्थना करती की "गुरुजी इस बच्चे की रक्षा करिए। इस घटना का बच्चे की ज़िंदगी पर कोई विपरीत परिणाम ना हो। मैं अपने को कभी क्षमा नहीं कर पाऊँगी"। कुछ ८-१० दिन बाद जब नवनीत स्कूल में आया, मैंने देखा वह पहले जैसे ही बोल पा रहा है। कहीं कोई नुक़्स नहीं है। तोतलापन वग़ैरे कुछ नहीं। गुरुजी को कोटि कोटि धन्यवाद दिए। ऐसे हैं अपने गुरुजी सदैव सहायक, रक्षक हर रूप में अपने साथ सदैव विद्यमान हैं।

"कोटि कोटि प्रणाम गुरुजी"

आपकी अलका गीद

।।जय गुरुजी।।

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम,

परम पूज्य,नित्य स्मरणीय,अंतर्यामी, पूज्य गुरुजी की कृपा से मुझे असीम शांति प्राप्त हुई है। जीवन में आने वाले दुखों को भी धैर्य से, गुरुजी की कृपा से सहज तौर पर लेकर, बाहर आ सकी। मुझे याद है जब प्रथम बार उनके दर्शन करने गयी तब नाम बताया "साधना", तुरंत उन्होंने कहा " साधना याने तपस्या। अच्छा है तपस्या से ही जीवन निखरता है"।

एक बार राम नवमी पर मुंगेली गए थे। परम पूज्य गुरुजी विश्राम कर रहे थे। आदरणीय अशोक भैया ने कहा " साधना आई है" मैंने सहज ही कहा, " गुरुजी सोए हैं, हम बैठते हैं"। परम पूज्य गुरुजी ने कहा, "साधना, गुरुजी सोते नहीं हैं, वे सोने वालों को जगाते हैं" और प्यारी सी मुस्कान उनके मुख पर थी। उनके आशीर्वाद से प्रकाश दिखता है, बैठते ही ध्यान भी लगता है। कभी-कभी ज्योति बाएँ से दाहिने ओर आती सी दिखाई

देतीहै । उनके आशीर्वचन सुनते ही प्रकाश दिखता है। एकादशी के दिन हृदय में जैसे ज्योति दिखाई देतीहै । अनुभव बहुत हैं, उनका आशीर्वाद सदैव बना रहे।

एक और अनुभव बताना चाहती हूँ। मेरे लिए वह स्वर्णिम दिन था। १४/०६/२०१९ की दोपहर मैं सो रही थी। ध्यान करते समय नीचे झुककर साष्टांग दण्डवत करने की इच्छा रहती पर कमर दर्द के कारण मन से ही प्रणाम करती थी। अपनी असहाय स्थिति को लेकर दुखी होती थी और उस दिन परम पूज्य गुरुजी पलंग के पास खड़े हैं और मैं उठ गयी व चरण स्पर्श करने की कोशिश करने लगी। पूज्यवर ने मुझे उठाया वे मुझे इतने ऊँचे दिखाई देने लगे की मेरा सिर उनके चरणों पर था, सहज रूप से। मैं देखती रही। सर्वांग रोमांच से भर उठा। अश्रुपूर्ण नज़र से देखती रही।

जय गुरुदेव। **आपकी** साधना, ना**सिंक**

परम पूज्य श्री गुरूचरणों में मेरा शत्–शत् प्रणाम...

मैं सौ. अर्चना राजीव भटजीवाले, श्री बी. एस. भटजीवाले (भाउ साहब) की सबसे छोटी बहू हूँ। माह सितम्बर में मेरी बेटी जो कि लंदन में रहती है, गर्भवती थी और उसे डॉक्टर ने सितंबर के अंतिम सप्ताह में डिलीवरी की संभावित तारीख दी थी। अगस्त में मेरा जाना लगभग तय था, किंतु कोरोना के बढ़ते प्रकोप के कारण, सभी थ्सपहीजे रद्द कर दी गई थी। रोज पूजा करते समय गुरूजी के सामने अश्रू आ जाते थे कि आगे क्या होगा, मेरी बेटी की डिलीवरी कैसे होगी, इतने सब के बीच पुनः लंदन से फोन आया कि बेटी को नौवें माह में गेस्टेशनल डायबिटिस हो गई। उसके काफी सारे खान– पान में पाबन्दी लग गई।
पूरे समय मेरा मन दुःखी रहने लगा। गुरूजी से मन ही मन बाते करती थी कि गुरुजी आगे क्या होगा, एक दिन हर रविवार की तरह जब राजू कण्णव भैया रविवार को पूज्य गुरुजी का भाव चिंतन कर रहे थे कि अचानक मेरी ऑखें बंद हो गई, मुझे दिखा कि मेरी बेटी लंदन में ही ऑपरेशन थीयेटर में है, उसके पास लेडी डॉ. सीजर लेकर खडी है। उसी समय परम पू0 गुरूजी अवतरित हुये, उन्होने आ ीश देने के लिये अपना हाथ मेरी बेटी की तरफ बढाया। गुरूजी के कर कमलों से एक नीले रंग की दिव्य ज्योति निकली और मेरी बेटी मे पेट में प्रवेश कर

गई । इतने में मेरी ऑख खुल गई। एक पल के लिये मुझे कुछ समझ में नहीं आया कि यह क्या हो रहा है ?

फिर राजू भैया के भाव चिंतन की वाणी सुनाई दी। इस तरह गुरुजी का आशीष पाते ही मेरी ऑखों से अश्रुओं की धारा बहने लगी जो कि रूकने का नाम नहीं ले रही थी,। फिर मेरे पति श्री राजीव भटजीवाले अपनी बहन श्री मती अलका गीध से बात की। उनके कहने पर हमने राजू काण्णव भैया से बात की। राजू भैया ने मेरी बहुत मदद की एवं उन्होंने नागपूर के डॉ. से बात कर मुझे ढांढस दिया और कहा कि जब स्वयं गुरूजी ही आप के साथ हैं तो आप किसी भी बात की चिंता मत करो और उन्होनें पूज्य गुरूजी के बताये गये नियम के अनुसार 5 एकादशी के व्रत करने की सलाह दी। जिसके करने से कई गुरु बंधुओं और गुरु भगिनियों उसका लाभ प्राप्त करा चुके है।

इस तरह हमारे परम पूज्य गुरूजी की असीम कृपा से तथा गुरू परिवार के सदस्यों के आ ीिवाद से मेरी बेटी को 29 सितम्बर 2020 को पुत्र प्राप्त हुआ। डिलीवरी के बाद बेटी की डायबिटिस भी खत्म हो गई और आज मॉ, बेटा दोनों परम पू ज्य गुरूजी की कृपा से स्वस्थ हैं।

धन्य हैं हमारे सद्गुरुजी जिन्होने न केवल सशरीर रहते हुए हमें मार्ग दर्शन दिया और सभी संकटों से हमें बचाये रखा बल्कि आज भी दिव्य ज्योति के रुप हमें सद्मार्ग दिखाते हुये अनेकानेक संकटों से बचाते रहते हैं।

एक बार पुनः श्री गुरू चरणों में मेरा व मेरे परिवार का शत् शत् नमन।

आपकी

सौ. अर्चना भटजीवाले

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम

19/4/21 को हम हमारे पैतृक गॉव डोबी में थे। वहॉ हमको सर्दी, जुखाम एवं बुखार आना भुरू हां गया था। 2–3 दिन घर पर ही दवा ली। ठीक नहीं हुआ।

22/4/21 को हम भोपाल आये। 21/4/21 को रात्रि को हमारे धर पर परम पू0 गुरूजी का एक फोटो हमेशा की तरह दिवाल पर टगां था। सुबह देखा कि गुरूजी वह फोटो डाइनिंग टेबल पर रखी हुई दिखी । धर वालों से पूछने पर कि गुरूजी की फोटो को किसने टेबल पर रखा ? सभी ने कहा कि पता नहीं। फिर प्रणाम कर हम डा0 साहब को दिखाने चले गये। जॉच करने पर पता चला कि हम कोरोना पाजिटिव हैं। धर पर रहकर ही दवा ली 5–6 दिन में ठीक हो गये। हमारी पत्नी एवं बेटे भी कोरोना पाजिटिव हो गये। 9–10 मई को सभी ठीक हो गये। हमारे परिवार पर एक बडी विपत्ति आई थी परन्तु श्री गुरूजी की कृपा से सब कुछ ठीक हो गया।

परम पू0 गुरूजी के चरण कमलों में प्रार्थना है कि सभी गुरू भाई– बहनों को कोरोना जैसी महामारी से रक्षा करें तथा हमारे जीवन में परम पू0 गुरूजी के श्री चरणों में स्थाई अनुराग एवं भक्ति बनी रहे। परम पू0 गुरूजी के चरणों में कोटि–कोटि नमन्।

आपका हीरालाल चौहान
ग्राम– डोबी, जिला– सिहोर म0 प्र0

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम

1,मेरा पुत्र/श्री मिश्री लाल पांडेय, मनीष जो कि 8 वर्ष का है, 1,9,86 को बिलासपुर में,एक जीप से उसका शाम 6 बजे एक्सीडेंट हो गया। लड़का जीप के सामने पहुंच गया तथा अंदर अगले चक्के के पास गिर गया। ड्रायवर के द्वारा जीप को ब्रेक लगाकर रोक दिया गया। लोगों के पुकार लगाने पर कि बच्चा जीप से कट गया। वह जीप को आगे न ले जाकर,पीछे को बैक किया तथा जीप को लेकर भागा और सिविल लाइन बिलासपुर पुलिस थाने में जाकर रिपोर्ट किया कि मुझसे एक बच्चे का एक्सीडेंट हो गया है। बच्चा शायद जीवित नहीं है।

2,यह गुरु कृपा ही थी कि यदि ड्राइवर जीप को पीछे घुमाकर न भागता तो जीप के दोनों चक्के बच्चे के सीने से निकल जाते। बच्चे को काफी चोट लगी थी, लोगों के द्वारा

तत्काल मेन हॉस्पिटल बिलासपुर ले जाया गया। उसे खून की उल्टी हुई, हेड इंजुरी थी,सीने में काफी दर्द था, स्वांस लेने में काफी परेशानी थी, आक्सीजन दी जा रही थी।

3,बच्चा आंख बंद किये पड़ा था, उसे खून की बोतल लगी थी,करीब तीन बजे आंख बंद किये ही मुझसे बोला कि पापाजी मुझे गुरुजी वाली दवा खिलाइये। तब बगैर समय की प्रतीक्षा किये डॉ पाण्डेय(गुरु भाई) द्वारा दी गई होम्योपैथिक दवा को बच्चे के मुंह में डाल दिया। बच्चा आंख बंद किये पड़ा था,घड़ी के मुताबिक मात्र 10 मिनट में,बच्चे ने आंख खोली और मेरी तरफ देखकर बोला-पापा, गुरुजी की दवा खाने से मेरे सीने का पूरा दर्द खत्म हो गया तथा स्वांस लेने में भी तकलीफ नहीं है। बच्चा उस समय से स्वस्थ महसूस होने लगा, नर्स आकर बोली कि अब बच्चा खतरे से बाहर है, केवल घाव बचे है, वह तो ठीक हो जायेगा।

डॉ पाण्डेय(गुरु भाई) को जाकर बताने पर, उनके द्वारा यह कहा गया कि वह मात्र दवा नहीं थी बल्कि उसमें एक शक्ति गुरुजी की कृपा की थी। घर जाकर एक घण्टा उस बच्चे के लिए गुरुजी का स्मरण किया था, मुझे मालूम था कि बच्चा ठीक हो गया होगा। ।।स्मरणिका,से।। सादर प्रणाम, जयगुरुजी, जयजयगुरुजी, जय हो।

श्री मिश्री लाल पांडेय , बिलासपुर

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम

परमपूज्य श्री गुरूजी के चरणों में बारम्बार नमन करते हुए - उनकी दिव्य कृपा से आप्लावित हुए जीवन में कृतज्ञता के लिए शब्द नहीं है । श्री गुरूजी के शिष्यों का परिवार तो उनके संरक्षण में सदैव आनंद में रहता ही है फिर भी वे समय समय पर आशीष दिया करते थे कि मैं हूं न - जब भी कहीं परेशानी होगी - गुरूजी को याद करना । कोई भी प्रकट होगा काम करेगा और चला जाएगा । सारे शिष्यों के पास ऐसे अनुभवों का भंडार भरा है । ऐसा ही एक

अनुभव गुरुजी की कृपा से प्राप्त हुआ । संभवतः 1990 की गर्मियों के दिन थे । उन दिनों मैं अपने घर ग्वालियर आया हुआ था । परम पूज्य गुरूजी भी ग्वालियर में श्रद्धेय काका साहब शिन्दे के यहां रुके थे । परम पूज्य गुरूजी का दर्शन और आशीष पाने की अभिलाषा लेकर सांयकाल में भी पंहुंचा । प्रणाम निवेदित कर एक ओर बैठ गया । उस समय गुरूजी उनके श्री चरणों में बैठे एक सज्जन के साथ चर्चा कर रहे थे । वार्तालाप की अधिकांश शब्दावली मेडिकल सांइस से संबधित थी और मेरी समझ में नहीं आ रही थी । बस इतना ही समझ सका कि श्री गुरूजी उनसे कह रहे थे कि अभी विज्ञान को मस्तिष्क में यह यह और मिलेगा - साथ वे उसकी कुछ आध्यात्मिक व्याख्या भी कर रहे थे ।

बाद में एक अन्य गुरूभाई से पूछने पर पता लगा कि गुरुजी की वार्ता अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति के न्यूरोलॉजी विशेषज्ञ डॉ धारकर से हो रही थी । मेरे मन एक विषाद पूर्ण विचार आया कि - ऐसी चर्चाएं अपने तो कुछ भी समझ नहीं आती । बस दो तीन दिन बाद मैं अपने कार्यस्थल छुईखदान पंहुच गया । वहां जब अपने अधिकारी के घर मिलने गया तो औपचारिक चर्चा के बाद वे बोले कि मैं एक पुस्तक लाया था मेरी समझ में तो नहीं आ रही - शायद आपके लिए ही ले आया हूं । वे भी एक आध्यात्मिक रूझान के व्यक्ति थे और हमारी आध्यात्मिक चर्याएं भी हुआ करती थी । पुस्तक दिल्ली के किसी योग आश्रम से प्रकाशित थी । जब घर आकर मैने उसे पढ़ना आरंभ किया तो मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा । सद्गुरु की करुण चेतना ने मेरे विचार को न सिर्फ पढ़ लिया था अपितु उसके समाधान के लिए यह व्यवस्था भी कर दी थी । पुस्तक पढ़ने के साथ श्री गुरूजी की व डॉ धारकर साहब की जिस चर्चा के समझ न आने को लेकर मैं विषाद में था - वह कुछ कुछ समझ आ रही थी । अधिक समझने के लिए जिस गहन साधना से उत्पन्न अनुभूति की आवश्यकता थी - वह पात्रता मेरे पास न थी । फिर भी यह अनुभव गुरुजी की शिष्यों के प्रति करूणा व गहन चैतन्य जुड़ाव का मेरा अनुभव है । ऐसे सतगुरु जी की कृपा के अनुभव जीवन को धन्य कर देते हैं । श्री गुरूजी के चरणों में बारम्बार प्रणाम निवेदित करते हुए यह प्रार्थना भी है विश्वास भी है कि आपकी करूणा से यह शिष्य परिवार भयावह आपदा में भी सुरक्षित स्वस्थ व आनंद में बना रहेगा । पुनः पुनः गुरु चरणों में वंदन

जगदीश गुप्त ग्वालियर

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

मेरा बचपन से गुरूजी के चरणों में लगाव एवं प्रेम था क्योकि मैं अपने घर वालों से गुरूजी के विषय में बहुत कुछ सुनती रहती थी। हम दोनों बहनों की दीक्षा मेरी द्वार गुरूजी के फोटो के सामने बिठाकर प्रदान की गई थी और मैं अभ्यास में बैठना प्रारम्भ कर दिया।

मुझे शुरू से ही बैगनी, नीला, हरा, सुनहरा, सफेद, इन प्रकाशों के दर्शन हो रहें है। परम पू0 गुरूजी के चरणों के दर्शन भी होते है। शरीर के कुछ भागों के दर्शन भी होते हैं जोकि एक्स– रे की तरह दिखाई देते हैं।

एक बार में जब ध्यान में बैठी थी तब मेरा शरीर – विशुद्व से सहस्त्रार तक चेतना शून्य हो गया था, मेरे कान में आवाज सुनाई देना बन्द हो गया था और अभ्यास से उठने के बाद मेरा माथा ठंडा हो गया था।

अभ्यास के दौरान मेरे मन मे जो भी प्रश्न उठते हैं, उन सभी का उत्तर मेरे श्री दीपक चाचा और सौं अर्चना चाची के द्वारा प्रश्नों का समाधान मिल जाता है।

मुझे ऐसा लगता है कि परम पू0 गुरूजी के सशरीर के समय बहुत सारे लोग उनके सानिध्य में आये। मै अपने को बहुत भाग्यशाली कहती हूॅ कि मुझे उनके निराकार स्वरूप का भी सानिध्य मिला और हमको उनका दर्शन भी होता है और मार्गदर्शन भी मिलता है।

जय गुरूजी , सद्गुरूशरणम्

आपकी वेदांगी – विवेक काण्णव
श्री सॉई मंदिर के सामने , वर्धा महाराष्ट्र

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि कोटि प्रणाम,

गुरुर्ब्रह्मा ग्रुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

अत्यन्त ही दुःख के साथ ये कहना पड़ रहा है कि दि0 25 अप्रेल 2021 रविवार को आदरणीय प्रिय राजू काण्णव भइया द्वारा मार्च 2020 से प्रारम्भ परम पूज्य गुरूजी के वाक्य यज्ञ में परम आदरणीय, परम श्रृद्धेय जैन साहब एवं परम आदरणीय दीदीजी भी अनुपस्थित थे । यह समझ में ही नहीं आया कि उन दोनों की अनुपस्थित का क्या कारण है ? लेकिन संजय छलोतरे भइया का अचानक फोन आया कि कुछ पता चला दीदी, जैन साहब के यहॉ का। मैं सुनकर डर गई फिर कहा कि कुछ नहीं पता– भइया। उन्हांने कहा पूरा घर, कोराना प्रभावित है। हे गुरूजी ये क्या है ?

गुरूजी की परम कृपा से ही आदरणीय जैन साहब ने करीब एक माह पहले मुझे मेरे जैन साहब के सुपुत्र श्री राजू भइयाजी का मोबाइल नम्बर दिया था। मैंनें तुरन्त राजू जैन भइया को कॉल कर हाल पूछा–स्थिति से अवगत हुई जोकि अत्यन्त कष्टप्रद था आदरणीय जैन साहब स्वास्थ लाभ को लेकर आल इडिया मेडिकल इन्स्टियूट में भरती थे न्युरो सर्जन के निगरानी में उन्हे माइस्थिीनिया ग्रैविश जो कि माइल्ड स्थिति में था रखा गया था। दि0 1/5/2021 शनिवार को आदरणीय जैन साहब वेन्टिलेटर पर थे। समस्त गुरू परिवार , आदरणीय जैन साहब के शुभचिन्तक रिस्तेदार, स्वंय मणी दीदी, राजू जैन भइया, वर्धा परिवार के 11 लोग तुंरन्त सतत् जाप एवं प्रार्थना करना प्रारम्भ कर दिये कि गुरूजी– हमें जैन साहब चाहिये, गुरूजी हमें सिर्फ जैन सा0 चाहिये। सभी परम पूज्य गुरूजी से अथक विनती /प्रार्थना निम्न मंत्रो के साथ शुरू कर दिया–

ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय का जप,

गुरू मंत्र का जप,

ऊँ क्लीम् मधुकैटभ विद्रावि विधात्र वरदे नमः रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, दिशो जहि, क्लीम् ऊँ

ऊँ क्लीम रोगा न शेषा पहन्सिं तुष्टा रूष्टा... का जप करने लगे।

शिवपुर आश्रम में गुरूजी की प्रेरणा से **अखण्ड ज्योत जलवा** दी गई। चैतू को भी समाधि और मंदिर में मंत्र जाप करने को कहा।

राजू जैन भइया ने परम पू0 गुरूजी का हाथ पूर्णतया जकडकर पकड रखा था साथ ही ऊँ क्लीम् मधुकैटभ विद्रावि विधात्र वरदे नमः रूपं देहि, जयं देहि, यशो देहि, दिशो जहि क्लीम् ऊँ का अखण्ड जाप कर रहा था।

दि0 3 मई 2021 सोमवार सुबह 10 बजे सारा प्रयास जप तप सब विशाल शोंक सागर में डूब गया कि यह क्या हो गया गुरू जी ? हमारे गुरू परिवार पर किसी की नजर सी लग गई। परम पूज्य गुरूजी की इच्छा के आगे हम सभी नत मस्तक और मूक हो गये।

आज भी विश्वास नहीं हो रहा है कि उनका स्थूल शरीर हमारे साथ नहीं है। परम आदरणीय, परम श्रृद्धेय जैन साहब के व्यक्तित्व को शब्दों की भाव रूपी माला में पिरोना अत्यन्त ही कठिन है।

हमारे शिवपुर आश्रम के अत्यन्त और सबसे मजबूत स्तम्भ थे उनका शिवपुर आश्रम के विकास में बहुमूल्य अनूठा योगदान रहा है। शिवपुर धाम को उन्होने अत्यन्त अदभुत, एवं मनोहर रूप प्रदान किया।

गुरू परिवार के सदस्यों की पंक्ति मे हमारे जैन साहब सबसे मजबूत स्तम्भ के रूप में सदा ही सबसे आगे रहते थे। उनके पीछे रह कर कार्य करने का एक अलग ही आनन्द रहता था।

उनके आश्रम में उपस्थिति मात्र से पूरा आश्रम ऊर्जावान हो जाता था हम सभी खुशी से प्रफुल्लित हो जाते थे। हम लोगों को उनके आश्रम आने का बेशबरी से

इन्तजार रहता था। जैन साहब द्वारा गुरूजी की शाम की आरती हो इसके लिये हम सभी उनकी राह देखते रहते थे। सभी को साथ लेकर चलना उन्हें बहुत अच्छा लगता था।

परम आदरणीय, परम श्रृद्धेय जैन साहब परम पूज्य गुरूजी के अनन्य भक्त और सेबक थे–

अनन्य भक्त होने का परिचय उनकी गुरूजी के प्रति पूर्ण निष्ठा, एक निश्ठता, दृढ विश्वास , गुरूजी जैसा सदगुरू आज के इस परिवेश में मिलना असम्भव है। न भूतो न भविश्यति। हम सभी बहुत भाग्य ाली है कि गुरूजी ने अपने चरण कमलों में हमें स्थान दिया है इन वाक्यों को जैन साहब अक्सर दोहराते थे। उनकी प0 पू0 गुरूजी के चरण कमलों में अटूट निष्ठा और पूर्ण समपर्ण था।

प0 पू0 गुरूजी की सेवा में जैन साहअ की दृष्टि में अर्थ /पैसे का कभी कोई महत्व नहीं रहा। गुरूजी की सेवा ही उनके लिये सर्वोपरि थी। गुरूजी की सेवा यानि आश्रम की सेवा में उनके दोनों हाथ सदैव खुले रहते थे। आश्रम के सतत् विकास के लिये वे सदैव चिन्तित रहते थे।

प0 पू0 गुरूजी की **दिव्याम्बु निम्मज्जन का दूसरा भाग** अपनी स्वयं की कठोर लगन और साधना के बल पर पूर्ण रूप दिया , उस पुस्तम को छपवाने पर पूर्ण खर्च स्वयं वहन किया। इसके अतिरिक्त **गुरूजी की दिव्य लीलाय**ों पर भी पुस्तक तैयार की। **दिव्याम्बु निम्मज्जन का प्रथम भाग** समाप्त हो जाने पर उन्होने अपनी कडी मेहनत द्वारा पुनः लिखकर 300 प्रतियॉ स्वंय के खर्च से तैयार करवाई। पुस्तकों के रखरखाव का खर्च भी स्वंय वहन किये। शिवपुर आश्रम में प. पू0 गुरूजी की अति सुन्दर मनोहर मूर्ति जयपुर से स्वंय के खर्च से स्थापित की गई उसके पीछे उनकी बहुत ही कडी मेहनत है। उसको शब्दों के द्वारा बयॉ नही किया जा सकता। हमारे सद्गुरू परिवार में उनका नाम हमेशा के लिये अजर– अमर हो गया जब तक शिवपुर आश्रम इस धरा पर रहेगा उनका नाम एक सुनहरे सितारे की तरह सदैव चमकता रहेगा। उनका ये बलिदान अमिट तथा अवर्णिय है।

उन्होने गुरूजी की मूर्ति को बहुत ही सम्भाल कर जयपुर से भोपाल मंगवाई उसके तुरन्त बाद उन्होने एक भव्य कार्यक्रम अपने घर पर रखा। करीब 150 से 200

लोगों के भोजन की अति उत्तम व्यवस्था । जिस प्रसाद का स्वाद आज भी मुझे याद है। वह प्रसाद कितना स्वादिष्ट तथा अमृतमय था। कुछ लोग गुरू परिवार के कुछ लोग गुरूजी की मूर्ति वाली गाडी के साथ शिवपुर आश्रम के लिये रवाना हुये। उन्होने रास्ते में चाय पानी करने के लिये भी पैसे दिये। साथ ही एक गाडी जिसमें हम कुछ लोग थे उसका खर्च भी स्वंय वहन किया । एक खाश बात ये भी थी कि उन्होने हम सभी को जो मूर्ति के साथ जा रहे थे उन सभी को कुछ रूपये दक्षिणा के रूप में लिफाफे में रखकर दी थी आज भी वह दक्षिणा लिफाफे के साथ मैनें सम्भालकर रखी है। उस दिन उनके द्वारा यह एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हुआ था सारा वातावरण पुर्णतया गुरूमय एवं हर्श उललास से भरा हुआ था उनकी ऑखें में प्रसन्नता – आशुयों के रूप में झलक रही थी। इस दृश्य को देखकर मेरी ऑखों में भी ऑशु आ गये । आदरणीय जैन सा0 ने मेरे ऑखों में अश्रु देखकर मेरे सिर पर हाथ रखा और कहा – अरे पगली ये क्या है ? तू तो मेरी बेटी मीनू –जैसी है। अच्छे से सब लोग जाना। उनका यह स्नेह कभी नहीं भुलाया जा सकेगा और सब कार्य बहुत अच्छे से करना।

23 जुलाई / 14 मार्च /6 अक्टूबर के कार्यक्रम आदरणीय जैन सा0 एवं आदरणीय दीदीजी जब आश्रम आते। तो मुझे प0 पू0 गुरूजी की प्रेरणा मिलती की ये अपने गुरूजी कें समर्पित प्रतिनिधि है उनकी सेवा बहुत ही खुश मन से करना। उन्हे सुबह 4– 5 बजे गरम पानी कमरे के सामने उपलब्ध कराना, 2 प्याली गरम गरम चाय पहुचाना । कभी मैं, तो कभी चैतु भइया को उनकी सेवा करने को कहती क्योकि मै मंदिर एवं समाधि स्थलि की व्यवस्था प्रातः 4 बजे के पहले ही कर देती क्योकि कुछ भाई बहन उस समय ध्यान करने के लिये आ जाते थे। उन सभी की साधना में किसी तरह का विघ्न या आवाज न हो इसलिये यह सब करना पड़ता है।

14 मार्च 2020 उनके लिये आश्रम में अन्तिम उपस्थिति थी। सुबह 3 बजे उठकर स्नान आदि करके गुरूजी की महार्निवाण के समय की पूजा के लिये प्रातः 4 बजे गुरूजी की समाधि स्थलि पर आदर0 जैन सा0 और आदर0 मनी दीदी जी भी उपस्थित हो गई और बोले –राजू अभी तक नही आया । मैनें कहा कि सर– आ रहे होगे। उस समय प0 पू0 गुरूजी की पूजा के लिये उन दोनों के अन्दर अत्यन्त उत्साह तथा उतावलापन नजर आ रहा था। तभी राजू भइया मोहन भइया

आदि समाधि स्थलि में आ गये और समय पर पूजा प्रारम्भ हो गई। पूजा करके अत्यन्त ही आनन्दित हो रहे थे और बोले– कि चन्द्रा तुम लोग बहुत बदमाश हो अकेले अकेले इस महार्निवाण पूजा का आनन्द ले रहे थे। अब मै हर बार इस पूजा में उपस्थित हूँगा, मुझे तो आज– बहुत आनन्द आया। लेकिन नियति को तो कुछ और ही मंजूर था।

अनन्य भक्ति की झलक उनके सम्पूर्ण जीवन में देखने को मिलती है उन्होने बडे बाजार आश्रम में अतिरिक्त र्निमाण, गुरूजी के पास एक स्वयं की कार होनी चाहिये इन सभी कार्यो में उनकी अहम् भूमिका थी। उन्हे गुरूजी की उसी कार को 40000 किलोमीठर चलाकर एक कीर्तिमान एवं सौभाग्य हासिल हुआ जो कि कोई भी न कर सका। उस वक्त उनकी घर की भी समस्यायें थी लेकिन उन सभी को आदर0 जैन सा0 ने गुरूजी चरणों में समर्पित कर, गुरूजी के विभिन्न प्रवासेां में, गुरूजी के साथ जाते रहे। कभी न नही कहा। धन्य है जैन सा0। उस यात्रा के दौरान गुरूजी की अदभुत् लीलायों का साक्षी बनने का भी उन्हे सौभाग्य प्राप्त होता था। आदर0 जैन सा0 बहुत ही भाग्यशाली थे।

1997 में 23 जुलाई का कार्यक्रम अत्यन्त – अत्यन्त भव्य समारोह के रूप में आदरणीय जैन साहब की लीडरसिप सम्म्पन्न हुआ था। गुरूजी बहुत प्रसन्न थे और उन्होने कहा – कि ऐसा कार्यक्रम न भूतो , न भविष्यति।

करीब 2 वर्ष पहले की बात है– मैंने उन्हें शिवपुर के मुख्य गेट के सामने का एक फोटो भेजा और उन्हे बतलाया कि सर, रात्रि में एक अजगर अकसर इस गेट के पर देखने को मिलता है जोकि ठीक नहीं है। छोटे – छोटे बच्चे उसके आस– पास खेलते रहते है। आदर0 जैन सा0 ने तुरन्त वहॉ पर दिवाल बनवाने का र्निणय लिया और करीब साढे तीन लाख रू0 कन्ट्रीब्यूट एकत्र करके आ0 लूनियाजी को दिवाल र्निमाण के लिये दिया था।

हमारे गुरू परिवार में ऐसा अनन्य भक्त, अनन्य सेवक, विलक्ष्ण प्रतिभायुक्त व्यक्तिव्य मिलना दुर्लभ है। उन्होने समय समय पर यह बात दोहराई है कि अब मेरे जाने का समय हो गया है। यह पूर्णतया सत्य है कि वे प0 पू0 गुरूजी की सदगुरूलोक में भी अपनी सेवा देने के लिये बिना विलम्ब अपने परिवार को प0 पू0 गुरूजी के चरणों में समर्पित कर दिव्य लोक में प्रस्थान कर गये।

दि0 30 अप्रेल को वेन्टीलेटर में जाने के पूर्व सुबह प्रिय राजू जैन भइया ने जैन सा0 को गुरूजी की आरती और आर्शीवचन का आडियो सुनाया उन्होने हाथ जोडकर यह सब सुना, फिर गुरूजी कीी फोटो कों प्रणाम किया। राजू भइया ने कहा– पापा आप स्ट्रेस मत लेना सब ठीक हो जायेगा। जैन सा0 ने कहा कि मुझे कोई स्ट्रेस नहीं है मैं कमफरटेबल हूॅ। उसके बाद ही फिर सारा खेल प्रारम्भ हो गया। 15 लिटर आक्सीजन पर जाना फिर 1 मई को वेन्टीलेटर पर जाना फिर 3 मई सुबह 10 बजे आदरणीय जैन साहब दिव्य ज्योति रूप में परम पू0 गुरूजी के चरणो में हमेशा के लिये विलीन हो गये।

मैं परम आदर0 परम श्रृद्धेय परम प्रिय, जैन साहब के चरित्र को समय की सीमायों में मैं बॉधने में असमर्थ हूॅ। उनके कुछ और करने की इच्छायें /कार्य रह गये उन्हे हम सभी मिलकर पूरा करने का अथक प्रयास करेगें और उनके जैसा बनने का भी भरसक प्रयास करेगें जोकि कठिन है पर असम्भव नहीं।

यह मेरे गुरू परिवार की अपुर्ण क्षति है ऐसे एकनिष्ठ अनन्य शिष्य को गुरूजी सदैव अपने चरण कमलों में स्थान एवं अपना अपार स्नेह दे। मेरी जैन सा0 के चरणों में यही श्रृद्धा सुमन है । प0 पू0 गुरूजी से सतत् प्रार्थना है कि जैसी कृपा आप जैन सा0 पर लुटाते रहे, उससे कहीं ज्यादा उनके परिवार के सभी सदस्यों पर अविरल बरसाते रहे। उनकी सारी समस्यायों को आसानी से निपटाते रहै। अन्त में जब तक हमारी सॉसे है परम आदर0 परम प्रिय जैन साहब की यादें सदैव हमारे हृदय में अखण्ड दीप की तरह सतत् जलती रहे और अपने शूक्ष्म शरीर के माध्यम से सतत् मुझे मार्ग दर्शन प्रदान करते रहे।

समस्त गुरू परिवार की तरफ आदरणीया शोभा दीदी, आदरणीय छलोतरे जी, आदरणीय जैन साहब, आदरणीय अनिल चौवे जी और आदरणीय श्री मती प्रभा तिवारी जी के चरणो में भाव भीनी श्रृद्धान्जिली अर्पित करती हूॅ।

जय गुरूजी सर्वे भवन्तु .. .जय जय जय गुरूजी

आपकी चरण रज / चन्दा

श्रृद्धान्जली

श्रृद्धान्जली

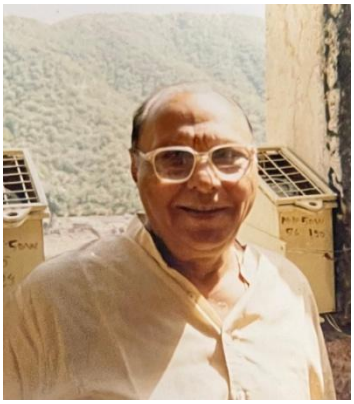

जय गुरु जी

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि कोटि प्रणाम

पापाजी का जन्म 1936 में चन्देरी के सराफ परिवार में हुआ था वे चार भाई थे उनके पिता का नाम श्री पूनमचन्द जी सराफ एवं माताजी का नाम मुन्नीबाई था। पापा की सारी शिक्षा गुरूकुल में हुई थी। और गुरूकुल में आपको अपना सरनेम सिर्फ जैन ही लिखना पड़ता था इसलिये पापाजी को अपने नाम के आगे जैन लिखना पड़ा।

पापाजी का परिवार बहुत गरीब था। चार भाइयों में से किसी एक को ही शिक्षा दी जा सकती थी इसलिये पापाजी सबसे छोटे थे, अतः उनको ही पढ़ाने का निर्णय लिया गया। उन्होंने स्कूल की शिक्षा खूराइ के गुरुकुल में उन्होंने की।

गुरुकुल में फीस विलम्ब से जमा होने के कारण परीक्षा परिणाम बहुत विलम्ब से आते थे अतः उन्होंने उसके बाद की शिक्षा यानि उज्जैन से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की तथा स्नातकोत्तर, एम0 एस0 डब्लू, एल0 एल0 बी0, की डिगरी, लखनऊ यूनिवर्सिटी से प्राप्त की थी।
सारी शिक्षा प्राप्त करने के बाद बाम्बे तथा कलकत्ता जैसे महानगरों में उन्होंने बेड़ा एयरकन्डीशनर सिम्पलेक्स कांक्रीट पाइल्स इन्डिया लिमिटेड जैसी कम्पनियों में अपना कैरियर प्रारम्भ किया । उसके बाद 1978 में संयुक्त परिवार के बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये भोपाल में रबर फैक्टरी की स्थापना कर अपने सभी भतीजों को व्यवसाय में सेटल किया। उन्होंने अपनी कडी मेहनत से यह सब प्राप्त किया था।

काल चक्र को किसने जाना है ? 23 अप्रैल 2021—मैं दोपहर में फैक्टरी में था, चार बजे शाम के आस —पास मुझे मेरी पत्नी प्रिया का फोन आया कि उसका गला खराब हो रहा है, उसको थोड़ा बुखार भी आ रहा है मैंने उसको दवाई लेकर सोने का बोला। उसके पश्चात करीब छह बजे शाम के आस —पास मुझे मेरी पत्नी का फिर से फोन आया और उसने मुझे बताया कि मेरी बेटी तनिस्का का भी गला खराब हो रहा है और बुखार लग रहा है। यह सुनकर मुझे थोड़ी चिंता हुई और मेने उन दोनों से पूरी तरह से आइसोलेशन से रहने को कहा हमारा दो मंजिला मकान हैं हमारा कमरा और बच्चों का कमरा प्रथम मंजिल पर है और मम्मी —पापा नीचे रहते हैं तो मैंने उन्हें नीचे जाने को माना किया और कहा की — मम्मी —पापा से एकदम दूरी बनाके रखे । मैंने तुरंत अपने मित्र नितिन पालिवाल को फोन किया और मैंने उसको बोला कि मम्मी —पापा को अपने घर ले जायें,
उनके लिये ये बीमारी बहुत रिस्की है क्योंकि उनकी इम्यूनिटी बहुत कम है और पापाजी को माइस्थिनिया ग्रेाविस नामक बीमारी 2008 से हैं जिसके कारण पापाजी इम्युनोसप्रेसेन्ट दवाइयाँ खाते हैं तथा उनके शरीर में इम्यूनिटी बिलकुल नहीं है और यही कारण है कि मैं उनको किसी से मिलने नहीं देता था और पिछले डेढ़ साल से घर में ही रहने को बोलता था।
हर रविवार को सामूहिक गुरू परिवार का ध्यान का कार्यक्रम होता था। उसके लिये भी मैंने सबसे निवेदन किया था कि कृपया अपने—अपने घर में ही ध्यान का कार्यक्रम करें क्योंकि मम्मी —पापा के लिये यह बीमारी रिस्की है।

23 अप्रेल की रात 3 बजे मुझे बहुत तेज बुखार आया साथ ही गला भी एकदम से खराब हो गया। मुझे लगा कि क्या मैं कोरोना पाजिटिव हो गया। मैंने तुरन्त सुबह उठकर मैने दोनो बच्चो एवं पत्नी और स्वयं का आर टी पी सी आर टेस्ट करवाया।

24 अप्रेल को पापा जी का जन्म दिन था लेकिन उनका मन उदास था क्योंकि हम चारो लोग ऊपर आइसोलेटेड थे और हम लोग नीचे भी नही जा सकते थे। उन्होंने अपना फोन थोडी देर के लिये बन्द कर दिया था फिर फोन चालू कर लिया था। घन्टी बजती रही पर उन्होंने किसी का भी कॉल नही उठाया और किसी से भी जन्म दिवस की शुभ कामनायें रिसीव नही की। रात 2•30 बजे मेरे पास पैथोलाजिस्ट का फोन आया कि मैं, मेरा बेटा और पत्नी तीनो पाजिटिव हैं और बैटी तनिस्का नेगेटिव है। मैनें उनका फोन रखा। हम सब अलग अलग रूम में आइसोलेटेड थे। मैं परम पू0 गुरूजी के मंदिर के सामने ही सो रहा था। मैनें गुरूजी की तरफ देखा और बोला कि गुरू पता नहीं क्यों ? मुझे ऐसा लग रहा है कि मेरे जाने का समय आ गया है और अगर मैं चला गया तो इस घर का क्या होगा ? कौन सबको देखेगा ? गुरूजी मै कैसे पाजिटिव आ गया ? मैं तो पाजिटिव हो ही नहीं सकता था। मैं रोज आपका चरणामृत पीता हूँ । मैं कैसे पाजिटिव आ सकता हूँ। मेरा मन मान नही रहा है कि मैं पाजिटिव आ सकता हूँ परन्तु ऐसा हो चुका था।

सबेरे हम सब की दवा शुरू हो गई। करीब 3 बजे दोपहर के आस पास मेरे मोबाइल में मैसेज आया क्योंकि आर टी पी सी आर टेस्ट की रिर्पोट सरकारी र्पोटल पर अपडेट करनी पड़ती है। मैनें वह मैसेज पढा जिसमें मैं, प्रिया और तनिस्का की रिर्पोट नेगेटिव थी और बेटे का टेस्ट पाजिटिव था। मैसेज को देखने के बाद आश्चर्य हुआ कि यह ऐसे कैसे हो सकता है। मैंनें लैब में फोन करके उनसे अपने रिर्पोट की हार्ड कापी मांगी। मैनें कुछ नहीं बोला कि आपने मौखिक तौर पर पाजिटिव बोला था और रिर्पोट नेगेटिव है। मैंनें उनसे बोला कि मुझे आप रिर्पोट की हार्ड कापी भिजवा दे या वॉटसप पर भेज दे। उन्होने वॉटसप पर हम चारो कि रिर्पोट भेज दी। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। बेटे की आर टी पी सी आर टेस्ट की वैल्यु 33 थी 34 ऊपर के आर टी पी सी आर टेस्ट की वैल्यु नेगेटिव होती है। इसका मतलब बेटे को भी बहुत थोड़ा इन्फेक्शन था। शाम को 5 बजे मेरे पास नागपुर से राजू कॉणव भइया का फोन आया और उन्होने मुझे से बोला कि आप पर

गुरूजी की कृपा है। आप पाजिटिव नहीं हो सकते। मम्मी से उनकी बात हुई थी , सभी खुशी थे लेकिन मम्मी ने भाायद यह भी बताया था कि 2–3 दिन पहले पापा को भी उल्टी हुई थी और वे भी थोड़ी कमजोरी महसूस कर रहे थे। इसलिये उन्होने अपना फोन नही उठाया।

राजू भइया ने बतलाया कि डा0 जलगॉवकर जी का कहना है कि मैनें पापा का आर टी पी सी आर टेस्ट क्यों नही कराया ? मुझे मम्मी –पापा का भी आर टी पी सी आर टेस्ट करवाना चाहिये और पापा को जो उल्टी हुई थी आजकल ऐसे लक्षण भी कोविड में देखने को मिल रहे है। यह सुनकर अब मैं बहुत दुखी हो गया और मैंने मम्मी –पापा दोनों का आर टी पी सी आर टेस्ट करवाया, जिसका डर था वही हुआ। पापा की रिर्पोट पाजिटिव आयी उनके लिये यह बहुत गम्भीर समस्या थी । अपने परिचित के डाक्टर मित्रों से सुझाव लिया और दूसरे दिन/ 26 अप्रेल 2021 को उन्हें आल इन्डिया हास्पिटल में भरती किया।

20 अप्रेल को पापा की तबियत ठीक नहीं लग रही थी, मैनें पापा को रूटीन टेस्ट करवाने को कहा। कोविड बहुत ज्यादा फैला हुआ था इसलिये पापा का सैम्पल लैब वाले से कार में ही लेने को कहा। यूॅ तो पापा हमेशा तैयार रहते थे लेकिन उस दिन चलने मे 2 घन्टे लगा दिये और मम्मी ने कहा कि आप जा क्यों नहीं रहे है राजू बाहर बैठा है। बाहर आकर पापा ने मुझसे कहा कि ऐसे कब तक मेरा ब्लड टेस्ट और डाक्टरों से सलाह लेते रहोगे। अब मुझे तुम कितने दिन जिन्दा रखना चाहते हो ? मेरे जाने का समय अब आ गया है, तब मैने बोला – पापा ऐसा मत कहिये। उनको लेकर ब्लड टेस्ट करवाने चला गया।

कुछ दिन पहले मैनें पापा से कहा था कि मैं समझ नहीं पा रहा हूॅ,– आप ठीक तो हैं न प्लीज, आप छुपाया मत करो, थोडी भी तबियत खराब लगे तो बता दिया करें। तब भी वे बोले–बेटा अब जाने का समय आ गया है।

इन्ही दिनों नेगेटिव बाते करने लगे थे। वे हमेशा मुझसे कहते थे कि बेटा मैं अपनी तबियत का अच्छे से ध्यान रखता हूॅ क्योकि मैं बहुत अच्छा जीवन जी रहा हूॅ। मुझे किसी चीज की कोई कमी नहीं है। गुरूजी की कृपा से सब कुछ अच्छा है मैं क्यो जल्दी जाना चाहूगा। लेकिन विगत एक हफ्ते से वो मुझसे सिर्फ जाने जाने की बातें कर रहे थे। मैं उनका मन इधर– उधर की बातें और फेक्ट्री की बातें करके

टापिक को टाल दिया करता था। शायद उनको जाने का आभास हो गया था। मम्मी ने बताया कि 22 अप्रेल की रात में सोते हुये वे गुरूजी से यही कह रहे थे कि अगर मैनें कुछ गलत किया हो तो आप मुझे क्षमा करें और मैं आपसे क्षमा मॉगता हूॅ। अगर मैनें किसी का दिल दुखाया हो तो । मम्मी ने उस दौरान उन्हे उठाने की कोशिश भी की थी और बोली कि किससे बात कर रहे हो ? लेकिन उन्होने नहीं सुना और वे बार– बार गुरूजी से माफी मॉग रहे थे।

दिनॉक 30. 4. 2021 को उन्हे वेन्टिलेटर पर रखा गया। उस दौरान भी उन्होने गुरूजी की आरती एवं आर्शीवचन सुना और गुरूजी को हाथ जोडकर प्रणाम किया

एवं चरणामृत भी लिया। 3 मई को करीब 10 बजे सुबह गुरूजी के चरण कमलों में सदा के लिये विलीन हो गये। गुरूजी के चरण कमलों में विनती है कि पापाजी को अपना अपार स्नेह , अपार निश्चल भक्ति और सदैव अपने ही पास रखें।

जय जय जय गुरूजी

आपका राजू

(राजेश जैन , भोपाल म0 प्र0)

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् –शत् नमन।

हमारी दीदी स्व0 कु0 शोभा फडतरे, वर्धा के जीवन तथा मृत्यु के विषय में कुछ जानकारी देने का प्रयास करता हूँ–

दीदी को दि0 17 अप्रेल 2021 को थोड़ा सा बुखार आया, अतः दूसरें दिन उन्हे हॉस्पिटल लें गये। डाक्टर ने कुछ खून की जॉच कराने एवं दवा लिखकर दिया एवं आर0 टी0 पी0 सी0 आर0 एवं स्कैन करवाने को कहा तथा 2 दिन बाद आने को कहा। दवा सें बुखार तो ठीक हो गया किन्तु दस्त लगने शुरू हो गये। तीसरे दिन कोरोना टेस्ट पाजिटिव आया। डाक्टर ने कहा कि हॉस्पिटल में बेड केवल गम्भीर

मरीजों के लिये है। दीदी इतनी सीरियश भी नहीं थी। इसलिये इन्हें घर पर ही अलग रखे। दूसरे दिन दस्त के कारण कमजोरी लग रही थी, इसलिये सलाइन सालूशन चढवाया तथा अतिरिक्त औषधि दी। बुखार और दस्त दोनों ठीक हो गया किन्तु अब सॉस फूलने लगी अतः उन्हे हॉस्पिटल ले गये। उनका ऑक्सीजन सेचुरेशन का स्तर 85 से 80 से गिरते हुये 35 तक पहुॅच गया तब उन्हें बडे हॉस्पिटल में भरती करने को कहा। हम उन्हें कार में लेकर 9 बजे से बडे हॉस्पिटल में भरती करने के लिये भटकते रहे थे। उस समय वे मानसिक रूप से पूर्ण सजग थी तथा हम लोगों को आगं के लिये र्निदेश दे रही थी। घर से निकलते वक्त उन्होने कहा– मैं अब रहने वाली नही हूॅ। मेरा कार्यकाल समाप्त हो गया । हमने कहा– कि प0 पू0 गुरूजी के रहते ऐसा नहीं हो सकता। उन्होने कहा कि सबको जाना होता है वैसे भी मेरा यह शरीर किसी कार्य का नहीं रहा। हम सभी ने गुरूजी से प्रार्थना की। वे गोली कि मैं गुरूजी से कुछ नहीं मांगती। उनके सासों की घुटन देखी नही जा रही थी। उन्होने कहा कि बगैर भोगे आगे की अवस्था प्राप्त नहीं होगी। आप शोक न करो। मैं फिर आऊॅगी, मेरा अस्तित्व यहीं रहेगा। जब गाड़ी में उन्हें पिछली सीट पर लिटाकर ऑटों के माथे के ऊपर हाथ रखकर र्बठा था, भाई विनोद आर बेटा सुमंत रिफरेन्श पत्र के लिये प्रयास रत थे तब दीदी बार – बार पॅूछ रही थी कि गाड़ी पीली कैसे हो गई , बाहर भी सब पीला कैसे हो गया। फिर मैं सुमंत को उनके चास बैठाकर पेपरस के लिये गया, उनकी हालत और घुटन देखकर सुमंत रोने लगा तब दीदी बोली– घबरायो नहीं मुझे भरती करने के लिये तुम्हारे पास अभी समय है भााम 6 बजे तक मैं हूॅ। उनकी ऑखे ऊपर चढ गई यह देख सुमंत घबराया और रोते हुये गुरू मंत्र जपने लगा, वे फिर से बोली मैं हूॅ अभी और आगे र्निदेश देकर बोली – कि कुछ भी हो गुरूजी को दोष नहीं देना। इस बीच बार– बार बोल रहीं थी – हॉ , हॉ गुरूजी, आ रही हूॅ, आती हूॅ इसको समझाकर, बिदा लेकर आती हूॅ। आखिर 4 बजे उन्हें सेवाग्राम हास्पिटल में भर्ती किया गया। रात में उनके स्टेबल होने का समाचार मिला। दूसरे दिन 22 अप्रेल को बताया गया कि थोडी देर लगेंगी किन्तु वे ठीक हो जायेगी। दि0 23 अप्रेल को शाम 05 बजे बताया गया कि वे वेन्टीलेटर पर रखी गई और गम्भीर हैं और 7 बजकर 45 मि0 को उनके मृत्यु की सूचना मिली तब उनके बताये अनुसार गुरूजी की आरती करे, काव्य पोथी का एक अध्याय पढे और ऊॅ नमो भगवते वासुदेवाय की

एक माला करे। एकादशी का मंत्र पूर्ण करके ध्यान की शुरूआत करे। उस दिन एकादशी थी। यह 40 दिनों का व्रत उन्होंने करने को कहा था। इसे किसी भी परिस्थिति में खंडित नहीं होने देने की उनकी चेतावनी थी, चाहे कुछ भी हो जाये कितना भी महत्वपूर्ण कार्य आये, चाहे रात्रि के 9 बजे, चाहे किसी को कितना भी बुखार हो, चाहे कोई भरती क्यों न हो , इसे किसी भी हालत में खडिंत न किया जाये। यह उन्होने भ्रुरू में ही बता दिया था।

एक विशेष बात है जबसे उनकी तबियत खराब हुई , वे बीच – बीच में गलें में कुछ अटका हुआ है, यह कहकर कण्ठ कूप में उंगली लगाकर बताती थी। इसके लिये हल्दी और गुढ 2– 4 बार खाया।

उनके अंतिम संस्कार में लॉक डाउन कॉल होने के बाबजूद भी कोई दिक्कत नहीं आई और हम सब अपना संतुलन नहीं खोये। इस तरह गुरूजी से बात करते हुये एकादशी के दिन उनकी जीवन लीला समाप्त हुई । हम सभी उनके सम्पर्क में थे कोई सावधानी भी नहीं रखी थी । उनके जाने के बाद सबका आर0 टी0 पी0 सी0 आर0 टेस्ट नेगेटिव आया । यह सब गुरूजी की कृपा है।

जय गुरूजी / आपका शुरेश फडतडे, वर्धा

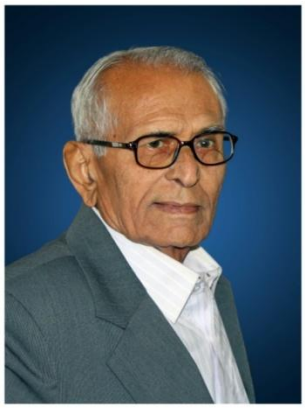

ओम् श्री सदगुरूवे नमः

परम पूज्य गुरूजी के चरण कमलों में शत ् – शत् नमन।

परम पूज्य गुरु जी ने कहा हमें surrender होना है यही गुरु मंत्र का भाव है परंतु हमारे पूर्व संस्कार हमें surrender ना करने को विवश करते हैं तथा rendering करवाते हैं यही मेरे साथ होता रहा।

शासकीय सेवा में रहते हुए बिलासपुर में पदस्थापना के दौरान नवंबर 92 को परम पूज्य गुरु जी से हम दोनों पति.पत्नी ने दीक्षा ली थी दीक्षा के दौरान ध्यान में बैठने का आदेश नहीं दिया क्योंकि दीक्षा से पूर्व गुरु जी ने जो पूछा वह सब मैंने बताया

मेरी पूजा.पाठ आदि कर्म कांडों को सुनकर कदाचित गुरु जी ने जान लिया कि मैं भटका हुआ हूं दीक्षा के बाद मेरा दर्शन हेतु आना जाना होता रहा इस बीच गुरु जी ने अशोक भैया से "दिव्यांबु निमज्जन" की पुस्तक तथा वर्ष 92 का "उदबोधन" दी तथा पढ़ने के निर्देश दिए बिलासपुर में रहते हुए मैं शासकीय कार्यों में व्यस्त रहता था तत्कालीन बिलासपुर जिला बहुत बड़ा था और बहुत राजनैतिक व विभागीय मंत्री भी बिलासपुर से होने के कारण रात दिन व्यस्त रहता था मैं उस काल में गुरु चरित्र व उनके वचनों को समझने में असमर्थ रहा दीक्षा के बाद भी मैं 2 वर्ष से अधिक बिलासपुर रहा इस बीच मुंगेली तहसील की कृषि के लिए जीवनदायिनी मनिहारी बांध क्षतिग्रस्त होना शुरू हुआ वहां की घटना का पूरा ब्यौरा मैंने गुरु जी से निवेदित किया और बताया कि कई गांव के लिए प्रलय सामान होगा। परम पूजनीय गुरु जी ने आश्वस्त किया कि कुछ नहीं होगा मुझे बाद में समझ आया कि जो लिखा पढ़ी मैंने शासन व वरिष्ठ अधिकारियों से की तथा बांध को बचाने के लिए जो उपाय किए वह परम पूज्य गुरु जी के आशीर्वाद का फल था। स्थिति की व्यवस्था का आभास से मध्यप्रदेश शासन चिंतित था उस समय भारत शासन ने विशेषज्ञों की टीम भी भेजी थी वे क्षति के कारणों को समझने में असफल रहे अंत में उन्होंने मेरे द्वारा लिए निर्णय व सुरक्षा कार्यों की प्रशंसा ही की। गुरु जी के आश्वासन के बाद मेरे में बहुत आत्मविश्वास था मैं सभी अधिकारियों को कह दिया था कि क्षति होगी परंतु जनहानि नहीं होगी। यही हुआ वर्ष 93 में अनेकों बार तक बांध की पांच 9 से 10 फीट बैठ गई थी बांध पूरा भरा रहा वर्ष 1994 जनवरी में मेरा स्थानांतरण प्रमोशन पर भोपाल हो गया। गुरु स्थान के पास रहते हुए भी सांसारिक कर्तव्य के कारण गुरु मंत्र को नहीं समझ पाया।भोपाल में दिनांक पंचानवे में सेवानिवृत्ति के पश्चात भी भारत सरकार और प्रदेश सरकार के कार्यो के निरीक्षण में बहुत व्यस्त रहा अर्थात में शरणागत नहीं हो पाया। 20 जून 2012 को हुए एक्सीडेंट से पूरा दाया बाजू का शरीर वितरित हुआ लेकिन गुरु जी ने मृत्यु से बचा लिया। एक्सीडेंट के बाद में लगभग 15 माह बिस्तर पर रहा इस समय मैंने "दिव्यांबु निमज्जन" गुरु जी एवं सभी उदबोधनो का परायण एवं मनन किया। मैं

इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि अभी तक सरेंडर नहीं कर पाया और रेंडरिंग करता रहा। वर्तमान में समय.समय पर जो अनुभव अनुभूतियाँ हो रही है उससे यही समझ आया कि भयानक दुर्घटना के बाद भी गुरुजी ने रक्षा कर मुझे शरण दी। पूज्य परम पूजनीय गुरु जी के जो बातें पहले समझ नहीं आती थी वह सब अब ग्राहय हो रही हैं मैं मानता हूं कि हम परम पूजनीय गुरु जी को उनके रहते हुए नहीं समझ पाए। अब अधिक समय न लेते हुए सब को प्रणाम कर में वाणी को विराम देता हूं।

पिताजी की इच्छा :

श्री वासुदेव गुरु परिवार आत्ममंथन केंद्र शिवपुर मुंगेली आश्रम को रमणीय स्वर्ग रूप प्रदान करने का दिन त्रिमूर्ति ने तन मन धन अर्पण कर स्वरूप प्रदान किया। परम पूजनीय गुरु जी के कथनानुसार ष्वेदांत और व्यवहार का पालन करते हुए हम सभी गुरु भाई.बहनों का कर्तव्य बनता है कि इन तीनों वरिष्ठ गुरु भाई श्री जेण्केण्जैनए श्री शांतिलाल जी लूनिया एवं डीण्एसण्राय साहब का सम्मान करें।परम पूजनीय गुरु जी ने ध्यान में जैसा आदेश दिया कि मैं स्वयं सभी गुरु भाई.बहनों की सहमति प्राप्त करके रात दिन गुरु जी का चिंतन कर ष्इस पावन तीर्थ स्थलष को कैसी कितनी रमणीयता प्रदान करें. का उल्लेख कर 23 जुलाई को शाल. श्रीफल से इन तीनों सम्माननीय का सम्मान करूं।

त्रिमूर्ति के सहयोग पर प्रकाश :

आदरणीय श्री जे के जैन साहब . श्री वासुदेव आत्मोत्थान केंद्र शिवपुर में (1) समाधि मंदिर (2) श्री गुरु मूर्ति मंदिर (3) गुरु परिवार के लिए आवास एवं भोजनालय कक्षों के निर्माण में तन.मन. धन से अपनी पूरी शक्ति लगा दी। आत्मोत्थान केंद्र को स्वर्ग जैसी रमणीयता प्रदान करने रात.दिन चिंतन व्यस्त रहे। "दिव्यांबु निमज्जन भाग 2" को संपादन में अथक श्रम किया।

आदरणीय श्री शांतिलाल जी लूनिया - आत्मोत्थान के सभी निर्माण कार्य , हरियाली, पुष्प वाटिका , कृषि कार्य आदि में स्वर्ग अनुभूति कराने में भगवान

विश्वकर्मा का जैसा योगदान रहा। यह अभी भी "गुरुस्थान" की भव्यता प्रदान करने में दिन-रात चिंतन मनन व्यस्त रहते हैं।

<u>आदरणीय श्री डी एस राय श्री राय:</u> - श्री राय साहब के बारे में संक्षिप्त में यही मानता हूं कि परम पूजनीय गुरु जी के स्वदेश रहने पर पूरे गुरु परिवार को संगठित रखने में इनकी अथक श्रम स्तुत्य है। श्री गुरुवाणी का संपादन कर "परम पूजनीय गुरु जी" को परिवार के हर सदस्य के घर पहुँचाने में इनका सहयोग व श्रम अमूल्य है।

पिताजी का अंतिम समय का अनुभव –

अच्छा समय बीत रहा था एवं पिताजी की इच्छा अनुसार 20 मार्च को नेशनल अस्पताल मे कोविड का पहला टीका लिया। एक दिन के बुखार के बाद उनका स्वास्थ समान्य होने लगा। परंतु दो दिन के बाद कुछ कमजोरी महसूस होने लगी। डॉ॰ साहब की सलाह पर सभी जाँच करवाली। गुरुजी की कृपा से सब रिपोर्ट समान्य आई। लेकिन पिताजी का व्यवहार धीरे धीरे बदलता सा जा रहा था और अन्न त्यागने की इक्छा भी प्रकट करने लगे थे ,भोजन के लिए ज्यादा दबाव बनाए जाने पर वो नाराज होने लगे थे। भोजन में सिर्फ आम का रस और हलवा ही खाने की जिद पकड़ ली थी वह भी एक से दो चम्मच। एक दिन अचानक ही पिताजी बोलने लगे कि ,मुझे तेज़ प्रकाश दिख रहा है , एवं माँ दुर्गा जी दिखाई दे रही है, गुरुजी मुझे बुला रहे है, अब मुझे परेशान मत करो, मुझे अब गुरुजी के चरणों में जाना है अब मै ज्यादा दिन नहीं रहूँगा , जिस दिन मेरा कर्ज तुम लोग से उतर जाएगा मै चला जाऊंगा। इसके अलावा रोज वो तुलसी पत्र के साथ गंगाजल पीने कि जिद करने लगे। इसी तरह समय व्यतीत कर पूज्यनीय पिताजी ने 27अप्रैल हनुमान जयंती के दिन बहुत ही शांति पूर्वक बिना विचलित हुऐ एवं चेहरे पर तेज़ चमक के साथ देव लोक के लिए प्रस्थान किया। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वो इसी दिन का इंतजार कर रहे थे।

डॉ॰ संजय छलोत्रे, भोपाल, म0 प्र0

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम,

८ मई २०२१को मेरे पति अनिल जी अनंत में समाहित हो गए । चंदा जी कह रही हैं– मैं वंदनीय गुरूजी और अनिलजी के सम्बन्ध में कुछ लिखूं ।

लगभग ४१–४२ बर्ष पूर्व ३० अप्रेल को याने, मई में (१९७९) गुरूदेव अतिथि के रूप में हमारे रायपुर निवास पर पधारे थे ,और फिर हम उनकी शरण में हो लिए ,और निरंतर हैं । हर रूप में उनकी कृपा हम पर है।

रायपुर से ,मेरी पद स्थापना बिलासपुर हो गई । उस पदस्थापना के दौरान गुरूजी के मुंगेली निवास की परिकल्पना साकार हुई । हम रायपुर ,बिलासपुर ,मुंगेली जहां भी वे होते उनके आकर्षण तथा आदरणीय शिंदे भाई साहब , भाभी जी और गुरू परिवार क अग्रजों के संकेत पर पहुंच जाते। पारिवारिक आत्मीयता का पवित्र समां होता था।

हम स्थानांतरण पर ग्वालियर पहुंचे, आदरणीय शिंदे भाईसाहब –भाभी जी भी लगभग एक बरस में रीवा से ग्वालियर मेडिकल कॉलेज, हमारे सौभाग्य से पहुंच गए। गुरू परिवार बढ रहा था, गुरूजी के कृपा निर्देशों और अपने खुशमिजाज स्वभाव ,दोनों भाषाओं पर समान अधिकार के कारण रायपुर के प्रारम्भिक गुरू पर्व

एवं अन्य आयोजनों में अनिल जी ने उत्साह और तत्परता से काम कर प्रशंसा और शुभाशीष पाया । आदरणीय गुरू जी उन्हें अनिलम् सम्बोधित करते थे ।

गुरूकृपा से और एक संजोग जानिए। ग्वालियर से आदरणीय डा. शिंदे साहब डीन मेडिकल कॉलेज होकर रीवा पहुंचे। हमें गुरूजी के साथ रहने का सौभाग्य मिलना था । हमने रीवा का स्थानांतरण लिया ,जिसका एक कारण यह भी था कि हम नहीं चाहते थे कि ओपन हार्ट सर्जरी के बाद भाई साहब रीवा में अकेले रहें, भाभी वहां तबादला होना ठीक नहीं लग रहा था ,उनका तबादला भोपाल हुआ, पर मैं और अनिल जी कुछ महीनों में ही बच्चों सहित रीवा स्थानांतरण पर पहुंच गए और प्रिय स्वीटी के विवाह तक हम सभी साथ रहे । उस दौरान लगभग एक वर्ष गुरूजी के साथ रहन , अपनी जिज्ञासा शांत करने के अवसर हमै मिले, वो समय अनमोल है ।

उसी दौरान अनिल जी गुरूजी के आदेश से दोपहर को रोज एक घंटे गुरूजी की रूचि का साहित्य पढ कर सुनाते थे ,और उस पर गुरूजी की व्याख्या सुनते थे, और जीवन –दर्शन के गूण रहस्यों को. समझाते थे ।

ग्वालियर,रीवा , जबलपुर के हमारे सभी निवास स्थानों पर आदरणीय गुरूजी सशरीर पधारें हैं , इसके साथ ही वे हमेशा हमारे साथ है । प्रारम्भ में दीक्षा के समय उन्होने जो आश्वासन दिया था , उसका निर्वहन कर रहें है। हमारे बेटे आकाश को उसकी लगभग ६–१० वर्ष कीआयु में , विजया दशमी के दिन परमपूज्य गुरूजी ने यज्ञोपवीत सूत्र के साथ मंत्र दिया है । बेटी आकांक्षा को भी उनसे गुरूमंत्र पाने का सौभाग्य प्राप्त है ।

अभी २०१६ जुलाई गुरू पर्व के समय ,मैं और अनिल जी रायपुर से अपनी कार से २२तारीख को शिवपुर मुंगेली पहुचें ।

आदरणीया शिंदे भाभी, प्रिय स्वीटी, प्रिटी भोपाल से बिलासपुर होते हुए मुंगेली पहुंचे थे । कार्यक्रम के बाद टैक्सी से उन्हें २३–२४ की मध्यरात्रि तीन –साढे तीन बजे निकलना था जिससे सुबह बिलासपुर से वापिसी के लिए ट्रेन ले सकें ।

हम २३ की रात हम भोजन –प्रसाद के बाद वापस रायपुर लौटने वाले थे ,परिवार में से किसी ने कहा कि अनिल जी आपकी कार सडक के पार दूर खडी है, उसे आश्रम के गेट के अंदर ले लें ,जब जाना हो निकाल लेना, इन्होंने ने भी बातचीत में मगन रहते हुए निर्देश का पालन किया । हम सब ने भोजन पाया , उससे ज्याद आनंद सबसे मिलने जुलने का था , रात दस से ऊपर का समय हो रहा था । भाभी जी को ले जाने वाली टैक्सी भी आ गई । हमने रायपुर निकलने के लिए अपना सामान उतारा तो पाया कि कार की चाबी नहीं मिल रही थी , मोबाइल्स की टार्चों के जरिए ढूंढाई मची तो उसका आधा टूटा हुआ हिस्सा मिला , कई कोशिशों के बाद भी कार स्टार्ट नहीं हुई । अंततः तय यह हुआ कि दूसरे दिन

सुबह अनिल जी बस से रायपुर जाऐंगे और हमारे घर से कार की दूसरी चाबी लेकर आऐंगे, जिससे मुझे और कार लेकर लौट सकें । सब कमरों में लौट गए ।

कुछ कमर सीधा करते दो बज गए, भाभी आदि के निकलने का समय हो रहा था । हम स्वीटी के साथ टैक्सी के ड्राइवर को उठाने नीचे गए, और चमकती हुई कोई चीज जमीन पर पडी दिखी , जिसे उठा कर ये देख रहे थे कि टैक्सी ड्राइवर ने बताया कि कार का एक चक्का पंचर है ,और उसके पास स्टेपनी नहीं है , वो सवारियां बिलासपुर नहीं ले सकता । हम सोच विचार में थे कि क्या करें ,तब तक ये बोल पडे, अरे ये तो अपनी कार की चाबी का वो पुर्जा है जो मिल नहीं रहा था । चाबी के दोनों हिस्सों को किसी तरह जोडा गया ,कार चल पडी, और वे लोग बिलासपुर समय पर पहुंच पाए , और हम बिना किसी अवरोध के सुबह रायपुर लौटे ।

अनिल जी जब मुम्बई में जीवन –मृत्यु का संघर्ष कर रहे थे , तब भी गुरूजी के होने का आभास था और अभी भी हम उसी परब्रम्ह की शरण में हैं । परमपूज्य गुरूजी का आशीष हम सब पर बना रहे । सुख–शांति हो , सब स्वस्थ रहें यही प्रार्थना है !

विनीत –आराधना अनिल चौबे

जय गुरु जी,

गुरु जी के श्री चरणों में अनंत कोटि प्रणाम

स्वर्गीय श्रीमती प्रभा देवी, परम पू0 गुरूजी की छोटी पुत्र वधु थी। कोरोना की चपेट में आने के कारण पहले उनका इलाज 10 दिन तक सरकारी चिकित्सालय बेमेतरा छ0 ग0 में हुआ फिर लाभ न होने पर उन्हें सरकारी चिकित्सालय बिलासपुर में भर्ती किया गया था किन्तु हालत बिगडती ही गई । दि0 10/5/2021 को उनकी जीवन लीला समाप्त हो गई । पू0 गुरूजी के चरण कमलों में सतत् यही विनती है कि उन्हें परम पू0 गुरूजी की अपार कृपा प्राप्त हो, तथा हम सभी की यही सच्ची श्रद्धान्जली है।

जय गुरु जी

(श्री मनोज तिवारी से प्राप्त)